HINDI

B**.A.**/B.Com/BBA**, Semester-I,** Second Language

Lesson Writers

Dr.V.Mohan Rao
Dept. of Hindi
SRR & CVR Govt. Degree College
Vijayawada

D.Raghu Ram Prasad
Dept. of Hindi
Govt. Degree College
Tiruvuru

EDITOR

Dr.B.Venkateswara Rao
Dept. of Hindi
Govt. College for Women
Guntur

Director

Dr.Nagaraju Battu
M.H.R.M., M.B.A., L.L.M., M.A. (Psy), M.A., (Soc), M.Ed., M.Phil., Ph.D.
Centre for Distance Education
Acharya Nagarjuna University
Nagarjuna Nagar-522510

Phone No.0863-2346208, 0863-2346222, Cell No.9848477441
0863-2346259 (Study Material)
Website: www.anucde.info
e-mail: anucdedirector@gmail.com

B**.A.**/B.Com/BBA**:** Second Language **-Hindi**

First Edition:

No. of Copies

(C) Acharya Nagarjuna University

This book is exclusively prepared for the use of students of M.A. (Hindi) Centre for Distance Education, Acharya Nagarjuna University and this book is mean for limited circulation only

Published by

Dr.Nagaraju Battu

Director

Centre for Distance Education

Acharya Nagarjuna University

Nagarjuna Nagar-522510

Printed at

FOREWORD

Since its establishment in 1976, Acharya Nagarjuna University has been forging ahead in the path of progress and dynamism, offering a variety of courses and research contributions. I am extremely happy that by gaining 'A' grade from the NAAC in the year 2016, Acharya Nagarjuna University is offering educational opportunities at the UG, PG levels apart from research degrees to students from over 443 affiliated colleges spread over the two districts of Guntur and Prakasam.

The University has also started the Centre for Distance Education in 2003-04 with the aim of taking higher education to the door step of all the sectors of the society. The centre will be a great help to those who cannot join in colleges, those who cannot afford the exorbitant fees as regular students, and even to housewives desirous of pursuing higher studies. Acharya Nagarjuna University has started offering B.A., and B.Com courses at the Degree level and M.A., M.Com., M.Sc., M.B.A., and L.L.M., courses at the PG level from the academic year 2003-2004 onwards.

To facilitate easier understanding by students studying through the distance mode, these self-instruction materials have been prepared by eminent and experienced teachers. The lessons have been drafted with great care and expertise in the stipulated time by these teachers. Constructive ideas and scholarly suggestions are welcome from students and teachers involved respectively. Such ideas will be incorporated for the greater efficacy of this distance mode of education. For clarification of doubts and feedback, weekly classes and contact classes will be arranged at the UG and PG levels respectively.

It is my aim that students getting higher education through the Centre for Distance Education should improve their qualification, have better employment opportunities and in turn be part of country's progress. It is my fond desire that in the years to come, the Centre for Distance Education will go from strength to strength in the form of new courses and by catering to larger number of people. My congratulations to all the Directors, Academic Coordinators, Editors and Lesson- writers of the Centre who have helped in these endeavours.

Prof. P. Raja Sekhar
Vice-Chancellor (FAC)
Acharya Nagarjuna University

Hindi Syllabus for B.A, B.Con, B.Sc. First Semester.

1- गद्य संदेश (Prose)

1- साहित्य की महत्ता - महावीर प्रसाद द्विवेदी
2- सच्ची वीरता - सरदार पूर्णसिंह
3- मित्रता - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

2- कथालोक (Short Stories)

1- मुक्तिधन. - मुन्शी प्रेमचंद
2- पुरस्कार - जयशंकर प्रसाद
3- उसने कहा था -चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

3- व्याकरण (Grammar)

1- लिंग , वचन , शब्द. , काल. ,वाच्य. , वाक्यों की शुद्धि , शब्द- विलोम. ,अंग्रेजी - हिन्दी पारिभाषिक शब्द- सूची

4- कार्यालयीन हिन्दी (Official Language)

1- कार्यालयीन हिन्दी
2- शब्दावली

5- पत्र- लेखन (Letter Writing)

Hindi Syllabus for B.A, B.Con, B.Sc. First Semester.

1- गद्य संदेश (Prose)

1- साहित्य की महत्ता - महावीर प्रसाद दिवेदी

3- मित्रता - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

2- कथालोक (Short Stories)

1- मुक्तिधन. - मुन्शी प्रेमचंद

2- पुरस्कार - जयशंकर प्रसाद

3- उसने कहा था -चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

3- व्याकरण (Grammar)

1- लिंग , वचन , शब्द. , काल. ,वाच्य. , वाक्यों की शुद्धि , शब्द- विलोम. ,अंग्रेजी - हिन्दी पारिभाषिक शब्द- सूची

4- कार्यालयीन हिन्दी (Official Language)

1- कार्यालयीन हिन्दी

2- शब्दावली

5- पत्र- लेखन (Letter Writing)

1. साहित्य की महता

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

कठिन शब्दार्थः Meanings

1)	कोष	=	भण्डा र	=	Treasure	
2)	कदापि	=	कभीभी	=	Never	
3)	अवलंबित	=	आधारित, निर्भर	=	Dependent	
4)	आईना	=	दर्पण	=	Minor	
5)	नाशोन्मुख	=	विनाशाकारी, नाश होने की स्थिति	=	Deterioration	
6)	निर्जीव	=	प्राणहीन	=	Inorganic	
7)	सतत	=	हमेशा, सदा	=	Always, Eternal.	
8)	पौष्टिक	=	Nutritious			
9)	विकृत	=	कुरुप	=	Ugly	
10)	विकारग्रस्त	=	Disordered, defected.			
11)	निर्भ्रान्त	=	निः संन्देह	=	Doubtless	
12)	थथेष्ट	=	काफी	=	Sufficient, Enough.	
13)	आडंबर	=	दिखावा	=	Show, Pomp.	
14)	अनुदार	=	Not Liberal			
15)	रुढियों	=	Elevation			
16)	उन्मूलन	=	To uproot			
17)	आत्महंता	=	Self - immolation			
18)	आच्छादन	=	Thatch, canopy.			
19)	अनैसर्गिक	=	Unnatural			
20)	प्रायश्चित	=	Atonement, Expiation.			
21)	ज्ञान - राशि	=	ज्ञान का भण्डार			
22)	संचित	=	समुपार्जित			
23)	निर्दोष	=	दोषरहित			
24)	रुपवती	=	सुन्दर	=	Beautiful	
25)	भिखारिन	=	भिखमंगिनी	=	Beggar	
26)	अशक्ति	=	शक्तिहीन			
27)	निर्णायक	=	निर्णय करना			
28)	न्यूनता	=	कमी, अभाव			
29)	मस्तिक	=	दिमाग			
30)	पदाक्रान्त	=	दबाहुआ			
31)	लोकभाषाः	=	प्रजा की भाषा, लोगों की भाषा ।			

---

1. साहित्य की महता

1) ''ज्ञान - राशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है ।''

प्रस्तावनाः

आचार्य महावीर प्रसाद दिूवेदी युग प्रवर्तक हैं । वे हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं । उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है । वे 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक भी हैं । उनकी रचनाओं के द्वारा उन्होंने समाज-सुधार के अनेक कार्य किये हैं । हिन्दी साहित्य में उनके नाम पर 'द्विवेदी' कहा गया है।

प्रसंगः

इस उद्धरण में लेखक ने साहित्य के माध्यम से जीवन के महत्व को स्पष्ट किया है । ज्ञान अनन्त है, वह साहित्य में ओत - प्रोत है । इसकी जानकारी रखना अत्यन्त जरुरी है ।

व्याख्याः

मन के भावों और विचारों को मौखिक तथा लिखित रुप से अभिव्यक्त किया जा सकता है । कोई भी अच्छा विषय जब संप्रेषित किया जाता है तो उसे ज्ञान की राशि कहा जा सकता है । यही ज्ञान की राशि को साहित्य की संज्ञा दीग ई है । ऐसे साहित्य में इतनी शक्ति निहित होती है कि वह किसी मनुष्य का जीवन सुधार करके उनकी सही मार्ग दर्शन करती है । यही उत्तम साहित्य का परम लक्ष्य है । दरअसल ज्ञान का यही उद्धेश्य है । वह अनन्त भण्डार है ।

विशेषताएँः

1) ज्ञान की महता एवं उनकी जरुरत को बताया गया है ।

2) साहित्य पठन और निर्माण को स्पष्ट किया गया है ।

3) साहित्य के माध्यम से अज्ञान रुपी अन्धकार को दूर करने की सलाह दी है ।

2) जातियों की क्षमता और सजीवता यदि कहीं प्रत्यक्ष देखने को मिल सकती है तो उनके साहित्य त्र रुपी आइने में मिल सकती है।

प्रसंगः

पहले संदर्भ के जैसा ही लिखना चाहिए ।

संदर्भः

लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी साहित्य और समाज इन दोनों के अन्तः संबंध के बारे में स्पष्ट करते हैं ।

व्याख्याः

द्विवेदी जी इस पर जोर देते है किं साहित्य समाज का दर्पण है । ''यथा राजा तथा प्रजा'' की जैसे सामाजिक जरुरतों और हालतों जैसे होते हैं । उनके वर्णन साहित्यकारो उनकी रचनाओं में दिखाती हैं । किस भी जाति विशेष की बात न कहकर सहज रुप में मानव जाति के विकास के लिए साहित्यकार भरसक प्रयास करते हैं । समाज - सुधार देश - सेवा, एकता आदि भावनाओं का विकास

साहित्य के द्वारा सामान्यं लोगों में चेतना जगाया जा सकता है । कई तरह की साहित्यिक रचनाओं के पढने से अपने - आपकी जानकारी प्राप्त करके जरुरी सुधार किया जा सकता है । इसलिए साहित्य को समाजका दर्पण माना जाता है ।

विशेषताएँ:

1. साहित्य के द्वारा अपना ही नहीं दूसरे देशों के जानकारी भी जान लेना चाहिए ।
2. एक भाषा के साथ - साथ विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना जरुरीहै ।
3. साहित्य के विकास से ही समाज का विकास निर्भर होता है ।
4. साहित्य तथा समाज दोनों एक दूसरे के बीच घनिष्ट संबध है ।
5. साहित्य के माध्यम से ही मानव का सामाजिक विकास होता है ।

3. ''शरीर का खाद्य भोजनीय पदार्थ है और मस्तिक का खाद्य साहित्य'' ।

प्रसंग:

पहले संदर्भ जैसा ही लिखना चाहिए ।

संदर्भ:

इसमें निबन्धकार नद्ववेदी जी शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य के अन्तर को बताते हैं ।

व्याख्या:

मानव सामाजिक प्राणी है । यदि वह समाज में अच्छी तरह रहना चाहता है तो उसे जरुरत है कि वह पौष्टिक आहार को फल खाये और अपनी स्वास्थ्य बढाये ओर बनाये रखे दूसरी तरफ मानसिक तन्दुरुस्ती तथा परिपक्वता केलिए अच्छे भावों, विचारों तथा रचनाओं के पढ तथा सुनते रहना जरुरी है । हमारा मस्तिक उन्नति की ओर आगे बढता है । इससे लाभ यह है कि हमसे कई लोग प्रेरणा पाते हैं और हमारा दिमाग - ''खाली दिमाग शैतान का घर'' बनने से बचा रहता है ।

टिप्पणी:

1. मानव को जीवन में सफल होकर एक सुयोग्य नागरिक बनने केलिए शारिरिक ऐं मानसिक शक्ति की अत्यन्त जरुरी है ।
2. स्वास्थ्य बदन में स्वास्थ्थ मस्तिष्क का विकास होता है ।
3. इन्सान को सर्व प्रथम मानसिक रुप से स्वास्थ्य तथा स्वच्छ होने की जरुरत है ।
4. मानसिक शान्ति होने पर अच्छ - उदात विचारों का उद्‌भव होता है ।

4. ''साहित्य में जो शक्ति छिपि रहती है वह तोप तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती ।''

1) **प्रसंग:**

इस निबन्ध के सभी अवतरणों केलिए पहले प्रसंग जैसे लिखना चाहिए ।

2) **संदर्भ:**

इस उद्धरण में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी देश की उन्नति केलिए साहित्य की जरुरत पर जोर दिया गया है ।

3) **व्याख्याः**

हिन्दी साहित्य संसार मे साहित्यकारों केलिए कहा है कि ''जहा न बहुँचे रवि । वहाँ पहुँचे कवि'' अर्थात् साहित्य में इतनी ताकत है कि मनुष्य का जीवन सुधार देता हैं । एक दुःखित इन्सान का भरोसा करता है । धैर्य, साहसव हिम्मत का काम करता है - यह एक परमौषधि का काम करता है ।

हमारे देश के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं मे इतनी क्षमता वताकत है कि वह विदेशों को अपने देश से दूर भगा दिया । 19 वीं शती के रचनाकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन के जमाने में लिखी हुई रचनाओं से प्रेरित होकर स्वातंत्रता संग्राम में प्राण त्यागने केलिए तैयार होगये । किसी भी देश केलिए साहित्य संजीवनी के समान औषधि का काम करती हैं ।

विशेषताएँः

1. साहित्य में देश की तरक्की करने की प्रबल ताकत होती है ।
2. साहित्य के सहयोग से मानव को जीवनदान प्राप्र होता है ।
3. साहित्य रचनाओं के द्वारा मानव में उदार विचारों, भावनाओं एवं अनुभूतियों का उद्धभव हो सकता हैं ।
5. जर्मनी, रुस, इटली और स्वयं इंग्लैंड चिरकाल तक फेंच और लैटिन भाषाओं के मायाजाल में फँसे रहे । अब वे अपनी भाषा के साहित्य की अभिवृद्धि करते हैं, कभी भूलकर भी विदेशी भाषाओं में ग्रन्थ रचना करने का विचार नहीं करते ।

   अपनी माँ को निः सहाय, निरुपाय और निर्धन दशा में छोडकर जो मनुष्य दूसरे की माँ की सेवा - सुश्रृषा में रहता है, उसे अधम को कृतध्नता का क्या प्रायश्चित होना चाहिए, इसका निर्णय कोई मनु, याज्ञवल्क्य या आस्तंव ही कर सकता है ।

   ज्ञान, विज्ञान, धर्म और राजनीति की भाषा सदैव लोकभाषा ही होनी चाहिए । अतएव अपनी भाषा के साहित्य की सेवा और अभिवृद्धि करना, सभी दृष्टियों से हमारा परम धर्म है ।

1) **प्रसंगः**

इस निबन्ध के हर अवतरणों केलिए यही प्रसंग लिखें ।

2) **संदर्भः**

कभी - कभी कोई समृद्ध भाषा दूसरी भाषाओं पर अपना अधिकार दिखाती है । इस विषय पर जोर दिया गया है ।

3) **व्याख्याः**

कभी - कभी कोई समृद्ध भाषा अन्य भाषाओं पर अधिकार स्थापित करती है । तब उन भाषाओं में साहित्य का उत्पादन कुण्ठित होता है और उन भाषाओं का विकास की गति रुक जाती है । परन्तु यह कृत्रिम दबाव सदा नहीं रहता । जर्मनी, रुस, इटली और अंग्रेजी भाषाएँ बहुत वक्त तक फेंच और लैटिन भाषाओं के मायाजाल में फँसी हुई थीं । किन्तु वहमायाजाल ज्यादा वक्त तक नहीं रहा । विदेशी भाषा में विशष प्रतिभा प्राप्त करने पर भी और उसमें महत्वपूर्ण रचना करने पर भी साहित्यकार की मान्यता न बढती । अपनी मातृभाषा को त्याग कर किसी दूसरों की मातृभाषा में रचना करना मातृभाषा के प्रति द्रोह कह सकते हैं । इसके प्रायश्चित के बारे में याज्ञवल्क्य और आपस्तम्ब भी कर न पाते ।

लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी विदेशी भाषा को त्यागने केलिए नहीं कहते । जरुरत के अनुसार उस भाषा सीखें और सीखनी होनी चाहिए । परन्तु साहित्यकार को अपने देश, अपनी जाति, अपनी भाषा और अपने साहित्य के प्रवि प्रेम् रखना चाहिए । ज्ञान, विज्ञान, धर्म तथा राजनीति आदिके सारे विषय अपनी मातृभाषा में, अपने देश की भाषा में, अपने लोगों की भाषा में, अपनी लोकभाषा में, रचना करनी चाहिए ।

विशेषताएँः

1. इसमें लेखक द्विवेदीजी साहित्य - सृजन को अपनी भाषा में करने की सलाह देते हैं ।
2. दूसरे भाषाओं के प्रभाव से अपनी भाषा दबजाने की सम्भावना बताते हैं ।
3. लोक भाषा लोगों की वाणी होने के नाते साहित्य और दूसरे विषयों का सृजन अपनी लोक भाषाओं में करना बेहतर/श्रेयस्कर है ।
4. अपनी मातृभाषा को न्योछावर कर दूसरे भाषाओं में रचना करना मातृभाषा के प्रति द्रोह के समान प्रतीत होती है ।

1. साहित्य की महता

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रस्तावना:

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तक हैं । वे महान साहित्यकार भी हैं । खडीबाली को सँवारने में उनका योगदान महत्वपूर्ण है । उनका जन्म उत्तरप्रदेश के रायबरेली जिले के दौलतपुर नामक गाँव में सन् 1864 में हुआ था । उनके परिवारों की आर्थिक हालत बहुत अच्छी नहीं थी । एण्ट्रेस स्तर की शिक्षा ही उनको मिली थी । फिर भी अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत उर्दू, फारसी, संरस्वती भाषाओं पर उनका काबू था । कुछ दिनों केलिए उन्होंने रेल्वे में नौकरी की थी । वे सारस्वती पत्रिका के संपादक रह चुके थे । उन्होंने बडी निष्ठा के साथ 20 सालों तक 'सरस्वती' पत्रिका की सेवा में निमग्न था । पत्रकारिता की दुनिया में नये आदशों की स्थापना की । स्वयं साहित्य सृजन के साथ - साथ अपने जमाने के कवियों तथा लेखकों को साहित्य सृजन केलिए प्रेरित किया । निबन्धकार के रुप में द्विवेदी जी मशहूर हुए । उन्होंने प्रांजल अभिव्यक्ति,व्याकरण सम्मत रचना और विषय - वैविध्य को स्थान देकर हिन्दी निबन्ध को पुष्ट किया ।

रचनाएँ:

उनकी लगभग 7 निबन्ध संग्रह प्रकाशित हुए । 'रसज्ञ रंजन', 'सुकवि संकीर्तन', 'साहित्य सीकर', 'पुरातत्व प्रसंग', 'हिन्दी महाभारत', 'नैषधचरित', कालिदास की शाकुन्तला आदि उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं ।

निबन्ध का परिचय:

'साहित्य की महता' नामक निबन्ध में साहित्य की बहुमुखी महता पर विचार किया है । अन्य चीजों की जैसे साहित्य भी मनुष्य केलिए आवश्यक है । मनुष्य अपने भावों तथा विचारों को साहित्य के माध्यम से प्रकट करता है । साहित्य सृजन सभ्यता का सूचक है । इसीलिए साहित्य को परखकर हम उस समाज की परीक्षा कर सकते हैं । ज्ञान - विज्ञान जीवन का सुगम बनाते हैं । साहित्य जीवन को सुन्दर बनाता है । साहित्य - सेवा के दो रुप हैं - साहित्य पठन तथा साहित्य का निर्माण ।

पाठ का सारांश:

साहित्य ज्ञान का भण्डागार है, हर एक भाषा का उसका साहित्य होता है । साहित्य विहीन भाषा के बारे में सोच विचार नहीं कर सकते । वह रुपवती भिखारिन की जैसी कथापि गौरव न हो सकती । किस भी कौम के आदर, शोभा, धार्मिक विचार, ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण, राजनीतिक उथल - पुथल आदि साहित्य से ही प्रतिबिम्हित होते हैं । साहित्य विहीन भाषा तथा वह कौम असभ्य तथा अपूर्ण माने जाती है । साहित्य रुपी दर्पण में जाति की विशेषता प्रतिबिम्बित होती है ।

किसी भी भाषा का साहित्य रसयुक्त होना चाहिए । पाठक या समाज साहित्य का सच्चा रसास्वादन करना चाहता है । सच्चा साहित्य समाज को चेतना प्रदान करता है । जिस तरह शरीर केलिए आहार की जरुरत होती है , उसी तरह मानव के मस्तिष्क केलिए सच्चे साहित्य की जरुरत है । विक्त आहार से बदन रोगपीडित होता है । उसी तरह विकृत साहित्य से मानव का मस्तिष्क भी विकारग्तस्त होकर

रुग्ण होजाता है । उसके लिए स्वस्थ साहित्य का सृर्जन करना अनिवार्य होना चाहिए और प्राचीन साहित्य की रक्षा भी करनी चाहिए ।

साहित्य की ताकत के सामने तोप, तलवार और बम के गोले भी ठहर नहीं सकते । राष्ट्रीय भावनाएँ व्यक्ति निष्ट स्वतन्ज्ञता, पतित देशों का पुनरुत्थान आदि साहित्य कर सकता है । साहित्य ने तोप की प्रभुता को कम किया और पदाक्रान्त इटली का मस्तक ऊँचा किया । साहित्य में मृतकों को भी जीवित करने की ताकत होती है । समर्थ होकर भी साहित्य की सेवा न करने वाला समाज द्दोही, गद्धार, जाति द्दोही और अन्ततः आत्म द्रोही आत्महन्ता भी माना जाता है ।

कभी - कभी कोई समृद्ध भाषा अपने ऐश्वर्थ के बल पर दूसरे भाषाओं पर अधिकार प्राप्त करते हैं। उदाहरण केलिए जर्मनी, रुस, इटली और अंग्रेजी भाषाएँ ज्यादा वक्त तक फेंच और लैटिन के मायाजाल में फँस रहीं । तब उन भाषाओं की तरक्की में त्रुटी आयी थी । अब वे भाषा - भाषी अपनी ही भाषाओं में ग्रन्थ लिखते हैं । अन्यभाषाओं का विशेषज्ञान अर्जित कर लेने पर भी किसी कृतिकार को विशेष सफलता प्राप्त नहीं हो पाती । जितनी अपनी मातृभाषा की रचना में प्राप्त होती है । अपनी मातृभाषा को छोडकर दूसरे भाषाओं में रचना करनेवाला कृतध्न माना जाता है ।

किसी भी भाषा में मानव ज्ञानार्जन कर सकता है और साहित्यकार भी बन सकता है । परन्तु अपनी ही भाषा के साहित्य को महत्व देना चाहिए । ज्ञान, विज्ञान, धर्म और राजनीति की भाषा हमेशा लोकभाषा ही होनी चाहिए तथा हमारा धर्म और कर्तव्य भी है ।

विशेषताएँ:

1) साहित्य का सृजन सभ्यता का प्रतीक है ।
2) साहित्य को परखकर समाज का मूल्यांकन करना चाहिए ।
3) ज्ञान - विज्ञान जीवन को सार्थक बनाते हैं ।
4) साहित्य के द्वारा जीवन को सुन्दर बनाता है ।
5) साहित्य के पठन तथा निर्माण साहित्य सेवा के दो ही रुप हैं ।
6) साहित्य विवेक, मूलतः जीवन का विवेक है ।
7) साहित्य समाज के भलाई केलिए लिखा जाता है ।
8) साहित्य के विकास से सामाजिक विकास होता है ।
9) मानसिक तथा शारीरिक शान्ति केलिए स्वस्थ साहित्य पढना चाहिए ।
10) साहित्य के माध्यम से दूसरे देशों की विशेषताओं की जानकारी प्राप्त होती है ।
11) एक से ज्यादा भाषाओं का ज्ञान प्राप्त होती है ।
12) साहित्य के माध्यम से हम अपनी प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता से जुडे रहते हैं ।

2. सच्ची वीरता

सरदार पूर्णसिंह

1. निबन्धकार का परिचयः

सरदार पूर्णसिंह का जन्म सन् 1882 में ऐबराबाद में हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा भारत में होने परभी उच्च शिक्षा जापान में हुई। रसायन शास्त्र में उन्होंने उच्च शिक्षा अर्जित की है। देहरादून में के मिस्ट्री का अंध्यापन का काम करते 1931 ई.में. स्वर्गवास हुए। वे मूलतः रसायन शास्त्र के वैज्ञानिक थे। उनकी मातृभाषा पंजाबी थी। फिर भी शुरु आत में हिन्दी की कठिन साधना करके उसकी प्रकृति को आत्मसात कर लिया था। उनकी व्यक्तित्व में भावुकता, प्रांजलता, सहृदयता, प्रेम, सजीवता और मस्ती पाते थे। उनके निबन्धों में वैचारिकता का पुट अधिक मिलता है। उनके लिखे सिर्फ पाँच - सात निबन्ध ही उपलब्ध हैं। इन पर स्वामी रामतीर्थ का प्रभाव माना जाता है। वे अद्वैतवादी है। उनके निबन्धों की शैली सहज तथा सरल शैली है। उनका लिखा हुआ 'पूर्ण निबन्ध संग्रह' 'निबन्ध - संग्रह' प्राप्त होता है।

2. पाठ का परिचयः

'सच्ची वीरता' निबन्ध में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि रणक्षेत्र में जूझने वाला योद्धा ही वीर नहीं होते, वरन् किसी पवित्र ध्येय आदर्श और कार्य केलिए साधना करनेवाले महात्मा और साधु व्यक्ति भी सच्चे वीर होते हैं। वीरों का निर्माण किसी बाहरी प्रेरणा या शक्ति से नहीं होता, वीर तो अपनी आत्मा की प्रेरणा से ही वीरतापूर्ण कार्य करने केलिए तत्पर हो जाते हैं। वीरता दिखाने का मैदान एक नहीं है। मानवता के उद्धार केलिए मर मिटने वाले महात्माओं को सबसे बडा वीर समझना चाहिए।

3. पाठ का सारंशः

सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और स्वतंत्र होते हैं। उनकी गंभीरता शांति सागर की तरह विशाल तथा गहरी होती है और गगन की तरह स्थिर एव अचल होती है, वे जगत के सच्चे परोपकारी होते हैं। कुम्भकर्ण की नींद की तरह वे वीरता में डूब जाते हैं। ऐसे लोग अपनी आँख के इशारे पर तख्ते को हलचल में डाल सकते हैं। आकाश में बादल उनके ऊपर छाया छाते हैं और प्रकृति उनके मनोहर ललाट पर राजतिलक लगाती है। वे धैर्य के पक्ष में होते हैं। किसी बादशाह ने अपने गुलाम को जान से मार डालने की धमकी दी थी। गुलाम ने कहा ''मैं फाँसी पर तो चढ जाऊँगा पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ। गुजरात में एक कापालिक ने आदि शंकर से अपना सिर दान के रुप में देने की माँग की थी। 'आदिशेंकराचार्य ने तुरन्त उत्तर दिया', 'अच्छा कल यह सिर उतार कर ले जाना और कार्य सिद्ध कर लेना।' कोई राजा हिरण को तीर से मारने ही वाला था। भगवान गौतम बुद्ध ने अपना शरीर उसतीर के निकट रखकर मृग को बचाया। महाराज रणजीत सिंह के साहस के सामने सागर सूख गया तो वे लाँघ करगये। वीर पुरुष भारी बरसात में भी आल्प्स पहाड पर पारकर जाते हैं।

वीर हमेशा सत्य पर अडिग रहता है । वीरता किस की न कल नहीं करती । वह सर्वजनीन तथा सार्वकालीन होती है । असली तीर संसार की बनावट और लिखावट के वातावरण में नहीं आते । बरसात वाले मेघ के बराबर वे स्थिर होकर सामाजिक हित में लग्न रहते हैं । कायर पुरुष दूसरों को दूसरों को आगे चलने को कहते हैं । किन्तु वीर कहते हैं सिर आगे करो । मरिया का पुत्र लाडला, खूब सूरत जवान था । वह भारी सलीब पर उठकर कभी गिरता, कभी जख्मी होता और कभी बेहोश हो जाता है । कोई पत्थर मारता है , कोई ढेला मारता है, कोई थूकता है, मगर उस मर्द का दिल नहीं हिलता है । वीर का मन 'सूली मुझे' है सेजपिया की सोने की मीठी - मीठी नींद है आती , कहता है । डरपोक चिडियों से दी जाने वाली फाँसी से डरता है । कारलयल ने साहस की बडी व्याख्या की है । वीर न गर्मी से विचलित होता तथा सर्दी से । बाबर के सैनिकों ने गुरुनानक को बेगार में पकडकर सिर पर बोझ डाला था । गुरुनानक ने कुछ दूर जाने के बाद अपने साथी से कहा, 'हम गाते हैं, सारंगी बजाओ ।' साहस और वीरता का यह सच्चा उदाहरण हमें मिलता है ।

अगर कोई छोटा - सा बच्चा नेपोलियन के कंधे पर चढकर उसके सिर के बाल खींचे , तो नेपोलियन उसे बेइज्जती न समझता एकबार जापान में घोर अकाल पडा था । सारे लोग भूखे मर रही थी । किसानों के घरों में अनाज के दाने तक नहीं रहा । तब ओशियो नामक सज्जन ने अपना सारा धन लोगों केलिए खर्च । किया फिर वह सारे किसानों को लेकर बादशाह के दुर्ग पर पहुँचा । बादशाह के सरदार ओशियो को पकडकर वादशाह के पास ले गया , ओशियो ने बादशाह से कहा, 'राजभंडार का अनाज गरीबों में बाँट दीजिए ।' बादशाह ने सारा अनाज गरीबों में बाँट दिया । ओशियो के मन की सफाई, सच्चाई और दृढता प्रशंसनीय है ।

4. विशेषताएँः

1) जीवन का तत्व और सच समझने से मानव गंभीर बन जाता है ।

2) वीर पुरुष अपनी आस्तिक विकास करते हैं ।

3) वीरों का निर्माण किसी बाहरी प्रेरणा या शक्ति से नहीं होता ।

4) मानवता के उद्धार केलिए मर मिटने वाले महात्माओं को सबसे बडा वीर समझना चाहिए ।

5) इसमें सच्चे वीरों के महत्व को सुन्दर ढंग से चित्रण किया गया है ।

3. मित्रता

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

निबन्धकार का परिचयः

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी निबन्ध साहित्य के जन्म दाता हैं । वे एक कुशल ईमानदार समालोचनाकार साहित्येतिहासकार भी है । वे सुप्रसिद्ध आलोचक हैं । उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के अगौना नामक गाँव में सन् 1884 में हुआ था । उन्हों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी । हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं पर उनका पूर्ण अधिकार था । ''नागरी प्रचारिणी'' पत्रिका के संपादक भी रह चुके थे । बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष आदि उच्च पदों को सुशोभित किया । वे गंभीर व्यक्तित्ववाले थे । फिर भी अन्दर से वे सरस व विनोदप्रिय थे । भाव और मनोविकार से संबंधित गंभीर निबन्धों में लिखकर हिन्दी निबन्धू को उन्होंने नयी दिशा प्रदान की है । उनके साहित्यिक निबन्ध उच्चकोटि के हैं । 'जायसी ग्रन्थावली' की भूमिका उनकी तटस्थ आलोचना का कीर्तिस्तभ है । तुलसी दास उनक प्रिय कवि हैं । उनकी भाषा तत्सम शब्दों से लदी रहती है । प्रांजलता एवं समास शैली उनकी भाषा की दो और विशेषताएँ मानी जा सकती है ।

प्रमुख रचनाएँः

'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'रसमीमांसा', 'गोस्वामी तुलसी दास', 'महाकवि सूरदास', 'हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद', 'चिन्तामणि के तीनभाग', 'विश्वप्रपंच' आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं ।

निबन्ध का परिचयः

'मित्रता' नामक प्रेरक निबन्ध में मित्रता क्या है और उसका महत्व क्या है, प्रमुख रुप में दिखाया गया है । मनुष्य सामाजिक प्राणी है । परिवार में रहते हुए भी उसे दूसरे लोगों से संगति की जरुरत पड़ती है । मित्र से बढकर मनुषय का और कोई साथी नहीं हो सकता हैं । मानव के जिन्दगी में बचपन से लेकर बुढापे तक मित्र बनाये जाते हैं । शुक्ल जी का विचार है कि मित्र को चुनते वक्त बहुत सावधान रहना चाहिए । सच्चा मित्र बहुत मुश्किल से मिलता हैं । जिसको सच्चा मित्र मिलता उसका जीवन सार्थक और सफल बन जाता है । शुक्ल जी उपदेश देते हैं कि किशोरों को उचित है कि मित्र बनाने से पहले व्यक्ति की अच्छी प्रकार से परीक्षा करनी चाहिए । जिससे जीवन सुखी रहे तथा मित्रता जीवन भर रह सके ।

निबन्ध का सारांशः

मित्रता का प्रभाव हमारे आचरण पर बडा भारी पडता है । समाज में प्रवेश करते वक्त हमारा चित कोमल, हमारे भाव अपरिमार्जित तथा हमारी प्रवृति अपरिपक्व होती है । हम लोग कच्ची मिट्टी के मूर्ति के बराबर रहते हैं जिसे जो जिस रुप का चाहे उस रुप का स्वीकार करे - चाहे राक्षस बनावे चाहे देवता । हम से ज्यादा । दृढ सकल्पवालों के साथ मित्रता करना बहुत बुरा है । ऐसे लोगों के साथ मित्रता करना और बुरा है जो हमारी बात को ऊपर रखते हैं । लोग घोडा लोते हैं तो उसके गुण - दोषों को परखना चाहिए । किन्तु किससें संगति करते वक्त उसके आचरण और प्रकृति पर विचार नहीं करते । हँसमुख चेराका, बातचीत का ढंग, थोडी चतुराई वसा हस आदि प्रवृतियों को देखकर

लोग चटपट मित्रता करते हैं । विश्वास पात्र मित्र से जीवन को बडी भारी रक्षा होती है और विश्वासपात्र मित्र जीवन का एक औषध हैं । वह हमारी गलतियों त्रुटियों से बचायेगा और हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा की रक्षा वही करेगा ।

छात्रावास में मित्रता की धुन सवार रहती है । मित्रता हृदय से उमड पडती है । बाल मैत्री में अतुलित आनन्द की प्राप्ति मिलती हैं । सुन्दर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छन्द प्रकृति ये ही दो - चार बातें देखकर मित्रता की जाती है । परन्तु जीवन संग्राम में साथ रहनेवाले मित्रों में इनसे अधिक प्रवृतियाँ होनी चाहिए ।

मित्रता करने केलिए एक प्रकार का काम करते रहना या एक ही प्रकार की रुचि रखने की जरुरत नहीं । राम धीर तथा शान्त प्रकृतिवाले थे और लक्ष्मण उग्र तथा उद्धत स्वभाव के थे । किन्तु दोनों भाइयों में अत्यन्त प्रगाढ स्नेह था । इसी तरह कर्ण उदार तथा उच्चशयवाला था और दुर्योधन लोभी था । पर, उन दोनों में मित्रता खूब निभी । चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लि चित मनुष्य का साथ खोजता है, निर्बल बली का धीर उत्साही का उच्च आकांक्षावाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय केलिए चाणक्य का मुँह ताकता था । नीति - विशारथ अकबर मन बहलाने केलिए बीरबल की तरफ देखता था । मित्रता एक नयीताकत की योजना है । संसार में कई महान पुरुष मित्रों बदौलत बडे - बडे काम करने में समर्थ हुए हैं । मित्रों के बनाये दृढ आशय पर कार्य क्षेत्र में हम कामयावी बनते हैं । मित्रता बुन्म और मृत्यु के मार्ग में मदद देती है । महाराणा प्रताप और शिवाजी के लक्षणों का मानव अनुकरण करना चाहिए । बेकारी बातों से समय व्यर्थ होता है । मनुष्य का जीवन थोडा है । उसमें खोने केलिए समय नहीं ।

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है । मकदूनिया का बादशाह डेमेट्रियस एक बार कुसंग में फँसा था । इंग्लैण्ड में किसी विद्वान को दरबार में जग ह नहीं मिली तो वे खुश हुए, क्यों कि उनको बुरे लोगों की संगति में बैठने का दुर्भाग्य टलगया । काजर की कोठरी में जाने से जरुर कालिख लग ही जायेगा । बुरी मित्रता काभी यही हालत हैं ।

टिप्पणीः

1) सच्चा मित्र बहुत मुश्किल से मिलता है ।

2) रामचन्द्र शुक्ल जी आचार्य हैं । उन्हें उपदेश और सिक्षा दिलाने का अभ्यास है ।

3) शुक्ल जी के अनुसार इस निबन्ध में भी विषय की पुनरुक्ति हो जाती है ।

4) सच्चे मित्रों के मिलने से जीवन धन्य होते हैं ।

5) विष्य का सूक्ष्म विवेचन और अभिव्यजना की प्रौढता उनकी विशेषताएँ हैं ।

6) साहित्य के साथ जीवन का समन्वय है ।

7) किशोरावस्था से ही सच्चे मित्रों को प्राप्त करना चाहिए ।

8) मजेदार उदाहरणों से गंभीर तथा तीव्र विषय को सरल बनाकर समझाते हैं ।

9) भाषा संस्कृत निष्ठ हैं ।

10)इसमें सशक्त शैली का प्रयुक्त किया गया है ।

---

2. सच्ची वीरता

सरदारपूर्णसिंह

कठिन शब्दार्थः Meanings

1) सत्वगुण = सात्विक वृत्ति = Pious Qualities
2) अगम्य = जहाँ पहुँचना कठिन हो = Difficult to reach
3) परान्न जीवी = दूसरों की कमाई पर शरीर पुष्ट करने वाले
One who lives on others livelyhood
4) बदल ज्ञानी = ईशवर का ज्ञान रखनेवाला = One who knows above holy
5) आल्प्स = पर्वत का नाम = Name of the thigs mountain
6) पालिसि = नीति = Moral
7) हकीकी = ईश्वरीय = Holy
8) दुर्भिक्ष = अकाल, सूखा = Scarcity, Famine.
9) गाढीनींद = गहरी नींद = Deep Sleep
10) अचल = स्थिर = Firm
11) निगाह = दृष्टि = Bird's eye view
12) अनुगामी = अनुयायी = Followers
13) बगावत = आन्दोलन = Revolution
14) फौज = सेना = Army
15) भेददृष्टि = Difference of opinion
16) तख्त = सिहासन
17) हलचल = शोरगुल
18) ईश्वरीय = भगवान प्रदत्त
19) दौलत = धन = Cash, Money.
20) मौज = आनन्द
21) इन्तजार = प्रतीक्षा = Waiting
22) अटक = रोक
23) इलहाम = भगवान की
24) कमाल = आश्चर्य
25) मखौल = मजाक
26) ठोंककर = प्रहार करना
27) मजाल = सामर्थ्य
28) इतिफाक = संयोग
29) कुदरत = असली, ययार्थ, वास्तविक

---

2. सच्ची वीरता - सप्रसंग व्याख्या

1) सच्चे वीर पुरुष धीर, गंभीर और आजाद होते हैं । उनके मन की गंभीरता और शांति समुद्र की तरह विशाल और गहरी या आकाश की तरह स्थिर और अचल होती हैं ।

प्रस्तावनाः

यह अवतरण 'सच्ची वीरता' नामक निबन्ध से दिया गया है । इसके निबंधकार सरदार पूर्ण सिंह जी हैं । वे मूलतः रसायनिक शास्त्र के वैज्ञानिक हैं । उनके निबन्धों में वैचारिकता का पुट ज्यादा मिलता है । उनकी भाषा - शैली सीधी - सादी है ।

प्रसंगः

सच्चे वीर पुरुष का जीवन - लक्ष्य, उद्देश्य तथा विचार गंभीर होते हैं । उनकी अपनी निजी जीवन - शैली होती है ।

व्याख्याः

सच्चे वीर अपने - आप में स्वतंत्र होते हैं । उनके अपने स्वतंत्र विचार एव तर्क - वितर्क होता है । उनकी जीवन - शैली सामान्य लोगों से कुछ अलग होती है । वे अपने हृदय में समाज सेवा के कार्य चुनते हैं । यह काम का संभालने वे शांतिपूर्वक करते है तथा अनायास ही अपने अनुयायीयों को तैयार कर लेते हैं । के अपने निर्णय पर अड़िग रहते हैं । बार - बार उनके विचार और निर्णय को नहीं बदल सकतें हैं ।

विशेषताएँः

1) इन्सान को सदा दृढ निर्णय लेना चाहिए ।
2) किसी - न - किसी विषय पर निर्णय लेने के पहले सोच - विचार करना चाहिए ।
3) तर्क - वितर्क करके सच्चे निर्णय लेना अत्यन्त आवश्यक है ।
4) जीवन - शैली में स्थिरता होनी चाहिए ।
5) सच्चे वीर, अपने विचारों में स्वतंत्र होते हैं ।

2) जब ये शेर जाग कर गरजते हैं, तब सदियों तक इनकी आवाज की गूँज सुनाई देती है, और सब आवाजें बन्द हो जाती हैं ।

प्रसंगः

पहले संदर्भ जैसा ही लिखना है ।

संदर्भः

वीरों के गुण - गण में कुछ उपमान दिये गये हैं । शेर कहा गया है ।

व्याख्याः

निबन्धकार सरदार पूर्ण सिंह ने सचे वीर को शेर से तुलना करते हुए कहते है कि वे सच्चे विचारों

से भरपूर होते हैं । सदा दूसरों की हित को ही चिन्ता करते हैं । इसलिए उनमें शेर जैसी हिम्मत व साहस विद्यमान होते है । जब वे मुक्त स्वर से निनाद करते हैं तो सच्चाई का ढोंग करनेवाले मौन रह जाते हैं । वीरों केलिए मार्ग सुगम हो जाता है । सदियों तक उनका नाम इतिहास में स्थिर हो जाता है ।

टिप्पणीः

1. वीर पुरुष उत्तम कामों के सूत्रधार बनते हैं ।
2. वीर पुरुष सदा चिरस्मरणीय होते हैं ।
3. जीना है तो शेर जैसा जीकर अच्छा नाम प्राप्त होते हैं ।

3. सत्व - गुण के समुद्र में जिनका अन्तः करण निमग्न हो गया वे ही महात्मा, साधु और वीर हैं ।

प्रसंगः

सभी उद्दरणों केलिए पहले जैसा लिखना चाहिए ।

संदर्भः

वीर - पुरुषों के सात्विक गुणों की महता पर विचार किया गया है ।

व्याख्याः

सामान्यतः मानव में तीन तरह के गुण विद्वमान होते हैं । वे हैं - ''सत्व, रज, तम'' । किन्तु अन्नतः मनुष्य जिन्दगी को सार्थक बनने वाले गुण सत्व गुण ही है । यही वीर पुरुषों की पहचान है । ये अपना जीवन सात्विक गुणों के बल से सफल होते हैं । उनका जीवन सागर जैसा विशाल तथा गहरा होता है, क्योंकि उनकें लक्ष्य तथा उद्देश्य महान होते है । वे इन उद्धेश्यों की पूर्ति में ही अपना सारा जीवन समर्पित करने मे लग जाते हैं ।

विशेषताएँः

1. इन्सान याद करने के लिए सच्चे कार्य करना चाहिए ।
2. सात्विक गुणोपासना में ही मनुष्य के जीवन का सार निहित होती है ।

4. **वीर पुरुष का शरीर प्रकृति की समस्त शक्तियों का भण्डार है । सूर्य का चक्कर हिल जाय तो हिल जाय परन्तु वीर के हृदय में जो दैवी केन्द्र है, वह अचल है ।**

1) **प्रसंगः**

सभी प्रसंगों केलिए पहले जैसे लिखना चाहिए ।

2) **संदर्भः**

वीर पुरुष की तुलना प्रकृति की शक्तियों से की गई है ।

व्याख्याः

वीर पुरुष प्रकृति के पंचभूतों के समान अचल, स्थिर होती हैं । उनके विचार, उनकी बातों में कोई भी भेद नहीं होती हैं । सच्चाई के रास्ते पर वे कभी - कभी विचलित नहीं होते हैं । चाहे कितने ही कष्ट आये वे अपने, मार्ग से नहीं हिलते हैं । शायद ही सूर्योदय के समय में थोडा भेद होता है, किन्तु वीर पुरुषों के चरित्र में भेद नहीं मिलता है । यही उनकी पहचान और शान है ।

टिप्पणीः

1. इसमें वीर पुरुषों के व्यक्तित्व को महत्व दिया गया है ।
2. वीर पुरुषों का निनाद है - प्राण जाए तो वचन न जाए ।
3. कभी - भी इन्सान अपनी बात, विचार और स्वभाव में स्थिर रहना चाहिए ।

5. **हाँ, में फाँसी पर चढ जाऊँगा, पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ ।**

प्रसंगः

निबन्ध के सारे अवतरणों केलिए यही प्रसंग लिखना चाहिए ।

संदर्भः

एक बागी गुलाम और एक बादशाह के बीच वाद - विवाद को निबन्धकार इसमें प्रस्तुत किया गया है ।

व्याख्याः

लेखक इसमें स्पष्ट करना चाहते हैं कि कैद शारीरिक है, न कि मानसिका बह गुलाम कैदी मन से स्वतंत्र है । बादशाह गुलाम को जान से मारडाल सकता है । परन्तु कैदी फाँसी पर चढकर भी बादशाह का तिरस्कार कर सकता है । इस तरह के उत्तर से कैदी गुलाम से संसार के बादशाहों के बल की हद दिखला दी । बादशाह गुलामों को दुःख देते थे और मारमीट कर अनजान लोगों को डराते थे । भोले लोग उनसे डरते थे ।

टिप्पाणीः

1. धीर गुलाम ने बाहशाह का तिरस्कार करते हुए उसके अधिकार की सीमा को बतायी थी ।
2. इसमें स्पष्ट किया है कि गुलामी शारीरिक है न कि मानसिक ।
3. गुलाम अगर साहसी हो तो बादशाह का भी धिक्कारते हुए चाहँ उसी फाँसी पर भी चढाये जाये ।

6. **अच्छा, कल यह सिर उतार कर ले जाना और काम सिद्ध कर लेना ।**

ऐसे लोग कभी बडे मौकों का इन्तजार नहीं करते, छोटे मौकों को ही बड़ा बना देते हैं ।

प्रसंगः

पाठ के सभी उद्धरणों के प्रसंग यही लिखना चाहिए ।

संदर्भः

निबन्धकार सरदार पूर्ण सिंह वीरता तथा त्याग के महत्व को बताते हैं ।

व्याख्याः

भगवान शंकराचार्य गुजरात की ओर यात्रा कर रहे थे । एक कापालिक शंकराचार्य के निकट आकर अभिवादन किया । भगवान ने कहा, माँग 'क्या माँगता है?' कापालिकने कहा, हे भगवान आजकल के राजा बडे कंगाल हैं । उन से अब हमें कोई दान नहीं मिलता । आप ब्रहम - ज्ञानी हैं और सबसे बडे दानी हैं । इसलिए आपके पास आया हूँ । कृपया मुझे अपना सिर दान करें । मै उसे भेंट चुढाकर अपनी देवी को प्रसन्न करूँगा और अपना यव्त पूरा करूँगा । भगवान शंकर ने आनन्द सहित कहा कि कल यह सिर लेजाकर अपना काम सिद्ध कर लेना ।

ऐसे देवी वीर रुपया , पैसा, माल, धन का दान नही देते । दान देने की इच्छा होने पर अपने आप को हवन कर देते हैं । भगवान बुद्ध ने एक राजा को मृग मारते देखा था । उन्होंने अपना शरीर आगे कर दिया जिससे मृग बचजाय और बुद्ध का शरीर चाहे चला जाया । ऐसे लोग कभी बड़े मौके का प्रतीक्षा नहीं करते, छोटे मौकों को भी बडा बना देते हैं ।

विशेषताएँः

1) इसमें वीरता का मतलब त्याग बताया गया है ।

2) सच्चा वीर शरीर का भ्रम नहीं रखता ।

3) वह अपना बदन को दूसरों की भलाई केलिए त्याग करते हैं ।

4) सच्चे वीर बडे - बडे जरुरतों का प्रतीक्षा नहीं करते । छोटे मौकों को भी वे महानं बना देते हैं।

7) **वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती, जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले जा सकता**

वीर पुरुष का दिल सब का दिल हो जाता है, उसका मन सब का मन हो जाता है । उसके ख्याल सब के ख्याल हो जाते हैं ।

वीर की जिन्दगी मुश्किल से कभी - कभी बाहर नजर आती है । उसका स्वभाव तो छिपे रहने का है ।

असली वीर तो दुनिया की बनावट और लिखावट के मखौलों को लिए नहीं चलता ।

बादल गरज - गरज कर वैसे ही चल जाते हैं परन्तु बरसने वाले बादल जरा देर में बारह इंच तक बरस जाते हैं ।

1) **प्रसंगः**

सभी अवतरणों केलिए पहले जैसा प्रसंग लिखना चाहिए ।

2) **संदर्भः**

लेखक ने वीरता के विभिन्न स्तर इिसमें वर्णन किया ।

3) **व्याख्याः**

पुराणों में विविध वीरों की कल्पना की गयी हैं । वीरता की अपनी दिशा होती है । वीरता एक प्रकार की विशिष्ट गुण है । अतः उसकी नकल नहीं की जा सकती । उदाहरण केलिए मन की प्रसन्नता उधार ली नहीं जा सकती । वीरता देश - काल एवं वातावरण के अनुसार बदलती है । वीरपुरुष का हृदय सामाजिक हो जाता है । उसका मन, उसके ख्याल, उसके संकल्प और उसका बल सार्वजनीन हो जाता हैं ।

वीरों को बनाने केलिए कोई कारखाने नहीं होते । वीर का कोई विज्ञापन नहीं होता । संसार के मैदान में वह अचानक आकर खडा हो जाता है । वीर का सारा जीवन भीतर ही भीतर होता है । वीर की जिन्दगी मुश्किल से कभी - कभी बाहर नजर आती है । उसका स्वभाव छिपे रहने का है । सच्चा वीर संसार से दूर रहता है । संसार की बनावट और लिखावट के ढंग से दूर रहता है । जिस तरह वीर समय पर समाज का हित करता है । कुछ बादल तो गरज - गरज कर ऐसे ही चलेजाते हैं ।

4) **टिप्पणीः**

इसमें वीरों के गुणों के बारे में स्पष्ट किया गया है ।

8) **कोई पत्थर मारता है, कोई ढेला मारता है, कोई यूकता है, मगर उस मर्द का दिल नही हिलता ।**

'सूली मुझे है सेज पिया की, सोने की मीठी - मीठी नींद है आती' ।

जैसे चिडियाँ मुझे फाँसी देकर उड़ गई, वैसे ही बादशाह और बादशाहतें आज खाक में मिल गई है ।

1) **प्रसंगः**

इस पाठ के सारे अवतरणों केलिए यही प्रसंग लिखे.

2) **संदर्भः**

मन का पक्का होना और मानस्थिरता वीरता के गुण हैं । इसमें ईसा मसीहा की वीरता का चित्रण मिलता हैं ।

3) **व्याख्याः**

मरियम का बेटा ईसा मसीहा अपने को परमात्मा का दूत तथा वकील बताता था । वह भारी सलीब पर उठकर कभी गिरता, कभी जख्मी होता और कभी बेहोश हो जाता है । कोई उसेपत्थर मारता है कोई ढेला मारता हैं कोई थूकता है, मगर उस वीर का दिल नहीं हिलता । कोई डरपोक होता तो बादशाहत के निकट सिर झुकाता । इसमें लेखक मीराबाई का उदाहरण देते है कि सूली पर पिया की सेज है, सोने की मीठी - मीठी और गहरी नींद आती है ।

इसमें लेखक एक और विवरण देते हुए कहते हैं - अगर चार चिडियाँ मिलकर किसी को फँासी की आज्ञा सुना दें, उस व्यक्ति के डरने से या रोने से उसका स्तर चिडियों से कम हो जायेगा । चिडियाँ उस इन्सान को फाँसी देकर चली गयीं । उसी तरह सारे बादशाह तथा उनकी हुकुमत सब मिट गये ।

टिप्पणीः

1) इसमें लेखक सरदार पूर्ण सिंह का कथन है सच्चा वीर किसी भी संकट से नहीं हिलता ।

2) सारे बादशाह तथा उनकी बादशाहत मिटनेवाले हैं न कि वे शाश्वत हैं ।

9) **यदि हजार वर्ष संसार में दुखडे और दर्द राये जाएँ, तो भी बुद्धि की शान्ति और दिल की ठंडक एक दर्जा भी इधर - उधर न होगी ।**

हजार वर्ष आग जलती रहे, तो भी धर्मामीटर जैसा का तैसा रहेगा ।

गुरु नानक ने अपने साथी मर्दाना से कहा, सारंगी बजाओ, हम गाते हैं । उस भीड में सारंगी बज रही है और आप गा रहें हैं । वाह री शांति ।

1) **प्रसंगः**

निबन्ध के सारे उद्धरणों केलिए यही प्रसंग लिखें ।

2) **संदर्भः**

किस भी स्थिति में विचलित न होना वीरता की एक प्रवृत्ति है । ऐसे लोग गर्मो में न गरम होते तथा हजारों वर्ष उन पर बरफ जमती रहे, तब भी उनकी वाणी तक ठण्डी नहीं बनती । प्रसिद्ध अंग्रेजी साहित्यकार कारलायल किसी हालत में भी विचलित नहीं होते थे । उनकी बुद्धि की शान्ति और मन की ठण्डक एक दर्जा भी इधर - उधर न होगी । हजार वर्ष आग जलती रहे, तों भी धर्मा मीटर जौसा का तैसा रहेगा । अर्थात् विचलित न होगा ।

एक बार बाबर के सैनिको ने और लोगों के साथ गुरुनानक को भी बेगार में पकड लिया था। उनके सिर पर कुछ बोझ, मुसीबत, बेगार में पकड़ी हुई नारियों का रोना, शरीफ लोगों का दुःख, गाँवों के गाँव जलना आदि - आदि अत्याचार का प्रभाव गुरुनानक पर नहीं पडा । गुरुनानक ने अपने साथी मर्दाना से कहा, 'सारंगी बजाओ, हम गाते हैं' । उस भीड में सारंगी बजती रही और गुरुनानक गाते रहे जाते हैं ।

विशेषताएँः

1) इसमें वीरता के महत्व को स्पष्ट किया गया है ।

2) इस निबन्ध में वीरता की विविध स्तरों पर चर्चा की गई है ।

10) **वे राज - भण्डार जो अनाज से भरे हुए हैं , गरीबों की मदद केलिए खोल दियों जाएँ ?**

भला इससे क्या हो सकता था ? परन्तु, ओशियो का दिल इससे पूर्ण शिवरुप होगया ।

ओशियो के हृदय की सफाई, सच्चाई और दृढता के सामने भला कौन ठहर सकता था ? सत्य की सदा जीत होती है । यह भी वीरता का एक चिह्न है ।

1) **प्रसंगः**

इस पाठ के सारे अवतरणों केलिए यही प्रसंग लिखे ।

2) **संदर्भः**

जापान में अकाल आने पर ओशियो नामक सज्जन से की गयी मंदद पर लेखक अपने मत प्रकट करते हैं ।

3) **व्याख्याः**

एकबार जापान में अकाल पड गुया था । किसान खाने केलिए तरसने लगे । तब ओसियो ने वहाँ के धनवानों से किसानों की कुछ सहायता करवाई । फिर भी उन्होंने अपने कपडे तथा नीलाम कर, वह पैसा किसानों को दे दिया । ऐसा करने पर ओंशियो का दिल खुशी से ओत प्रोत होकर शिवरुप होगया ।

ओशियो ने सब लोगों के हाथ बगावत का झण्डा पक़डवाकर, वह सबके आगे खडा होगया तथा सब बादशाह के पास गये । तब ओशियो ने साहसं के साथ बादशाह से कहा, 'वे राज - भण्डार, जो अनाज से भरे हुए हैं, गरीबों की मदद के लिए खोल दिये जाएँ ?'

बादशाह ने डर के मारे सारा अनाज गरीबों में बाँट दिया । ओशियो के मन की सफाई, सच्चाई और दृढता के सामने बादशाह को भी झुकना पडा । सच्चाई की जीत हुई । वह भी वीरता का एक सुन्दर उदाहरण हैं ।

डिप्पणीः

1) वीरता में सामाजिक हित निहित होती है ।

2) सच्चा वीर त्यागशील एवं दानशील भी होते हैं ।

3) सच्चे वीरो भी बादशाह को भी झुका सकता है ।

4) सच्चा वीर अपने कर्तव्य को निभाने में अग्रसर होते हैं ।

---

3. मित्रता

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

कठिन शब्दार्थः Meanings

1) मन भावनी = मन को अच्छा लगने वाली = impressive
2) कुत्सित = गंदे, गिरेहुए = Nasty
3) परिणत = पक्का, बदलजाना = Changing
4) कुसंग = बुरी संगति = Bad Friendship
5) सदवृति = अच्छी आदत = Good Habit
6) फूहड = भद्धा, गँवार, बेकार = Brute
7) लीक = रेखा = Line
8) हतोत्साह = जिसमें उत्साह नरह गया हो = Sorrow
9) खिन्नता = अप्रसन्नता = Un Happy
10) शोहदा = लुच्चा, गुंडा
11) निराली = प्रत्येक = Special
12) हेल -मेल = दोस्ती, मिलना - जुलना = Friendly
13) चुनाव = Election
14) संगति = दोस्ती = Friendship
15) चित्त = मन = Heart
16) अवस्था = हालत, स्थिति
17) परखना = परीक्षा करना = To Look Into
18) विचार = सोचना = Thinking
19) अनुसंधान = शोध = Research
20) चतुराई = उपाय = Idea
21) सुगम = Easy
22) त्रुटि = लोप, कमजोरी = Deficiency
23) छात्रावास = Hostel
24) उमडना = Break
25) अद्‌गार = भावनाएँ = Emotions

26) मानना = खीजना = Deny

27) उथल - पुथल = हलचल = Promote

28) घुणा = ईर्ष्या, कोघ

29) ताकना = देखना = To See

30) बहलाना = खुश होना = Jeouous

31) निज = अपना = Personal

32) ढाँढस = सांन्वना

33) सम्मिलत होना = भाग लेना = To Take Part

34) मनचला = शोरगुल

35) शोद्ददा = बदमाश

36) बनाव - सिंगार = श्रृंगार करना

37) महफिल = दल = Gentleness

38) सात्विकता = अच्छा गुण

39) झरना = झील = Water Falls

40) तरस = दया = Sympathy

41) चक्की = धूमना

42) अवनति = पतन = Deterioration

43) अटल = स्थिर = Standard

44) धारण = याद = Memory

45) बेंधना = काटना = Cutting

46) छूत = संक्रामक रोग = Cpntegious

47) सयाना = होशियार = Clever

48) कहावत = Proverb

49) उपयुक्तता = अच्छा चुनाव = Good Section

50) अपरिमार्जित = अविकसित = Non Matured

51) अपरिपक्व = न समझ, अबोध

52) सहानृ भूति = हम दर्दी = Sympathy

53) युवावस्था = यौवन काल = Young Age

54) आर्द्रता = सहृदयता

55) सहपाठी मित्रता = Classmate Friendship

56) सामर्थ्य = समर्थता = Capability

57) कर्तव्य = उतरदायित्व = Responsibility

58) मंत्रणा = रहस्य समालोचन, सलाह

59) लडखडाना = न ठहर सकना

60) लडखडाना = न ठहर सकना

61) पुरुषार्थी = कर्मण्य

62) शिष्ठ = सही, ठीक

63) सत्यनिष्ठ = सत्य पर डटे रहने वाला

64) योजना = Planing

65) सवारी = यात्री

66) बुद्धिमता = Inteligence

67) ठटठा मारना = मजाक उडाना

68) कुण्ठित = त्रुटिपूर्ण

69) निष्कलंक = कलंक रहित

70) ठोकर = मार

71) नम्रता = विनय = Obidience

72) गँवार = मूर्ख

73) सुडौल = सजा हुआ

74) अवहेलना = मजाक

---

3. मित्रता

1) **'विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषथि है ।'**

प्रस्तावनाः

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी के सुप्रसिद्ध निबन्धकार हैं । वे कुशल समालोचक, समीक्षक तथा सर्वतोमुखी प्रतिभा सपन्न साहित्यकार भी हैं । उनके निबन्ध विचार प्रधान तथा विषय प्रधान भी होते हैं । 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' 'रस मीमांसा,' 'गोस्वामी, तुलसी दास', 'महान कवि सूरदास', 'हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद', 'चिन्तामणी' उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं ।

प्रसंगः

'मित्रता' प्रेरणात्मक निब्रध है । इसमें निबन्धकार शुक्ल जी मित्रता के महत्व तथा मानव जीवन में उसकी महानता पर चित्रण किया गया है ।

व्याख्याः

साधारण यौवन में मित्रता का चस्का लग जाता है । उसका अच्छा या बुरा असर जीवन को प्रभावित करते हैं । इसलिए बहुत जागरुकता से मित्रों को चुन लेना चाहिए । योग्य मित्र विश्वासपात्र होता है । वह हमारी मदद् और रक्षा भी करता है । वही हमारी संपति के बराबर है । वह जीवन की औषधि है । अर्थात् हमें मित्र दोषों तथा गल्तियों से बचाता है । हमारी भूल - चूक को भी सुधारता है । हमारे चरित्र को सँवारता है । थे सब वह तभी कर सकता है जब वह स्वयं ईमानदार हो । ऐसा मित्र हमारे जीवन को सफल बनाने में सहायक होता है ।

विशेषताएँः

1) इसमें जिन्दगी में मित्रता के महत्व को बताया है ।
2) अच्छे मित्र जीवन की औषधि के समान हैं ।
3) शैली में अलंकारिकता उम्ड़ पडती है ।
4) भाषा तत्सम प्रधान के रुप में दीख पडती है ।

2) चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढता निर्बल बली का, धीर उत्साही का ।

प्रसंगः

यह अवतरण 'मित्रता' नामक प्रेरक निबन्ध से लिया गया है । इसके निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी हैं । वे सुप्रसिद्ध समालोचक और समीक्षक है । उनके निबन्ध विचार प्रधान हैं । वे सर्वतोमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं ।

संदर्भः

इस निबन्ध में 'मित्रता' किस प्रकार की जाती है और जिन्दगी में उसकी आवश्यकता पर जोर दिया गया है ।

व्याख्याः

मित्रता के लिए यह जरुरत नहीं कि दो मित्र एक ही तरह का काम करते हैं या एक ही स्वभाव

व रुचि के हों । दरअसल में भिन्न प्रकृति के लोग एक दूसरे से आकृष्ट होते हैं । हर कोई अपना पूरक चाहता है । अपनी कमी को पूर्ति करने वाले मित्र को चाहता है । इसलिए गंभीर मानव हँसमुख का साथ खोजता है । निर्बल अपनी मदद करने वाली बली मित्र को ढूँढता है । शान्त रहनेवाला ऊधम मचानेवाले को बहुत प्रसंद करता है । जैसे श्रीराम ने लक्ष्मण को पसन्द किया था । अकबर बीरबल की राह देखता था ।

टिप्पणीः

1) पुराणों एवं इतिहास से प्रसिद्ध उदाहरण देकर लेखक ने अपने मत को व्यक्त किया है ।

2) विरुद्ध स्वभाववालों में मित्रता पनपती है ।

3) इसमें मित्रता बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है ।

3) पिता ने कहा, ''हाँ ठीक है, वह दरवाजे पर मुझे मिला या ।''

प्रसंगः

यह उद्धरण 'मित्रता' नामक प्रेरक निबन्ध से संग्रहीत है । इसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी हैं । वे हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध इतिहासकार है । तुलसी दास और जायसी के श्रेष्ठ समालोचक भी हैं । 'चिन्तामणि' के साहित्यक तथा मनोवैज्ञानिक निबन्धों के निबन्धकार हैं ।

संदर्भः

मकदूनियाँ के बादशाह डेमेद्रियस से उसका पिता ये बाते तब कहता है जब वह अपने पुत्र को देखने गया था ।

व्याख्याः

बुरी मित्रता से मनुष्य का चरित्र गिर जाता है । वह कुमार्ग पर चलते हुए अपने जीवन को बरबाद करता है । मकदुनियाँ का बादशाह डेमेट्रियस के मित्र दुश्चरित्र के थे । उनके प्रभाव से राजा भी बच नहीं सका । वह राज - काज छोडकर भोग - विलासों में डूब गये थे । वह बीमारी का बहाना करके अपने राजमहल में दिन काट रहा था । तब एक दिन पिता उसे देखने आया । दरवाजे पर उसको एक हंसमुख जवान बाहर जाते हुए मिला । पिता अन्दर गया तो पुत्र ने कहा कि ज्वर ने उसे तभी छोडा था । तब पिता ने ये बातें कहीं । अर्थात् बिगड़े दोस्त ही उसकी बीमारी हैं । उन्हीं के बजह से वह अपने कर्तव्य से मुँह मोडलिया है ।

विशेषताएँः

1) अच्छी कहानियों के द्वारा शिक्षा मिलती हैं ।

2) ऐसी कहानियाँ एक तरफ से शिक्षाप्रद होकर दूसरी तरफ शेचक बनाती हैं ।

3) इस निबन्ध में बुरी संगति से होनेवाले दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया है ।

4) पिता की बातों में व्यंग्य प्रकट किया गया है ।

4) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है ।

इंग्लैण्ड के एक विद्वान को युवावस्था में राजा के दरबारियों में जगह नहीं मिली इसपर जिन्दगी पर वह अपने भाग्य का सराहता रहा । वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पडता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते ।

प्रसंगः

इस निबन्ध के सारे अवतरणों केलिए यही प्रसंग लिखें ।

संदर्भः

कुसंग की स्थिति बहुत बुरी होती है । मित्रता पर इसका असर पडने से उसका बुरा फल निकलता है ।

व्याख्याः

निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते हैं कि कुसंग का ज्वर बहुत भयानक होता है । इस के संबन्ध में शुक्ल जी एक अच्छा उदाहरण देते हुए कहते हैं - इग्लैण्ड के विद्वान को युवावस्था में राजा के दरबारियों में जगह नहीं मिली । इस पर जीवन भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता तो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते ।

टिप्पणीः

1) कुसंग के असर से नीति एवं सद्वृति का नाश होता ।
2) कुसंगति के प्रभाव से बुद्धि का भी क्षय होता है ।
3) लोग कुसंग के प्रभाव से जागरुक रहना चाहिए ।

5) हम लोग कच्छी मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं जिसे जो जिस रुप का चाहे उस रुप का करे - चाहे राक्षस बनावे चाहे देवता ।

प्रसंगः

यह अवतरण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'मित्रता' नामक निबन्ध से संग्रहीत हैं । वे कुशल आलोचक, प्रसिद्ध समीक्षक तथा समालोचक भी है । वे सर्वतोमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं । हिन्दी के मशहूर निबन्धकार भी हैं । उनके निबन्ध विचार प्रधान तथा साहित्य प्रधान होते हैं ।

संदर्भः

इसमें शुक्लजी मित्रता के प्रभाव के महत्व को समझाते हैं । मित्रता के प्रभाव से वह राक्षस प्रवृत्ति वाला अथवा दैवी संपति वाला बनता है ।

व्याख्याः

कोई युवा पुरुष अपने मकान से बाहर निकलकर बाहरी दुनिया में आता है, तब उसे मित्र चुनने में कठिनता पडती है । मित्रों के चुनाव पर उसके जिन्दगी की सफलता निर्भर होती है । उसका

चित्त कोमल और हरतरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है । उसका स्वभाव कच्ची मिट्टी की मूर्ति के बराबर होता है । उसे जो जिस रुप का चाहे उस रुप का कर सकते हैं । मित्रता के असर से व्यक्ति राक्षस या देवता बनजाता है ।

अच्छी मित्रता इन्सान को ऊपर ले जाकर देवता बनाती हैं । बुरी संगति के कारण मनुष्य का पतन होकर अन्ततोगत्व वह राक्षस बन जाता है ।

विशेषताएँ:

1) इसमें मित्रता के प्रभाव के महत्व को स्पष्ट कर दिया गया है ।

2) मित्रता के प्रभाव से कोई व्यक्ति देवता बनता है तो कोई राक्षस बन जाता है ।

3) मित्रों को चुनते समय बहुत जागरुक रहना चाहिए ।

6) विश्वप्रात्र मित्र से बडी भारी रक्षा रहती है जिसे ऐसा मित्र मिल जाय तो उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया ।

प्रसंग:

इस निबन्ध के सारे उद्धरणों केलिए यही प्रसंग लिखें ।

संदर्भ:

मित्रता में विश्वास के महान गुण विद्यमान होते हैं । निबन्धकार विश्वासपात्र मित्र के व्यक्तित्व को उजागर करते हैं ।

व्याख्या:

हँसमुख चेहरा, बातचीत करने काढ ग, थाड़ी चतुराई व साहस आदि किसी व्यक्ति में देखकर लोग उसे तुरन्त मित्र बना देते हैं । किन्तु जीवन के व्यवहार में मित्रता का कुछ मूल्य भी है । मित्रता से आत्मशिक्षा की प्राप्ति भी होती है । विश्वासपात्र मित्र से जीवन में भारी रक्षा होती है । विश्वासपात्र मित्र एक बडा खजाना है । विश्वास पात्र मित्र के मिलने से वे उतम् संकल्पों में हमें दृढ करेंगे, दोषों गल्तियों और त्रुटियों से हमें बचायेंगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्थादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जिन्दगी में उत्साहित करेंगे और हरतरह की मदद करेंगे । ऐसी मित्रता में माँ का सा धैर्थ, विश्वास और कोमलता होती है । ऐसी मित्रता संजीवनी बुटी के समान हैं ।

टिप्पणी:

1) मित्रता में विश्वास की मह ता के बारे में बताया गया है ।

2) विश्वासपात्र मित्र की तुलना खजाना से की गयी है ।

3) अच्छे मित्रों से जीवन की रक्षा एवं मदद भी होती है ।

7) छात्रावास में तो मित्रता की धुन रहती है । मित्रता हृदय से उमड़ पडती है ।

सुन्दर प्रतिभा, मन भावनी चाल और स्वच्छन्द प्रकृति ये ही दो - चार बातें देखकर मित्रता की जाती है । पर जीवन - संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इससे कुल अधिक बातें चाहिए ।

प्रसंग:

इस पाठ के सारे उद्धरणों केलिए यही प्रसंग लिखें ।

संदर्भ:

छात्रावास में होनेवाले मित्रता के अन्वेषण की चर्चा हुई है ।

व्याख्या:

सच्छी मित्रता में उत्तम - से - उत्तम वैद्य की - सी कुशलता और परख होती है, अच्छी - से - अच्छी - माता का सा धैर्य और कोमलता होती है । युवा पुरुष ऐसे मित्रों की ढूँढ में रहते हैं । छात्रावास में तो मित्रता की धुन सवार रहती है । मित्रता हृदयगत वस्तु है । बाल मैत्री में मग्न करने वाला आनन्द होता है ।

छात्रावास में हो या व्यावहारिक जगत में हो मित्र की ढूँढ रहती है । आदर्श मित्र की कल्पना भी लोग करते हैं । सुन्दर प्रतिभावान, मन भावनी चाल और स्वच्छन्द प्रकृति आदि कुछ बातें देखकर लोगों में मित्रता होती है । ऐसे प्रवृतियों से आकृष्ट होकर तथा प्रभावित होकर लोग मित्रता करते हैं । मित्र सच्चा मार्गदर्शक होना चाहिए ।

विशेषताएँ:

1) जीवन में मित्रता की आवश्यकता पडती है ।
2) छात्रावास में मित्रता की धुन होती है ।
3) मित्रता में वांछित गुणों के बारे में स्पष्ट किया गया है ।

8) उदार तथा उच्चाशयवाला कर्ण और लोभी दुयोधन के स्वभाव में कुछ विशेष समानता न थी पर उन दोनों की मित्रता खूब निभी ।

उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय केलिए चाणक्य का मुँह ताकता था । नीतिविशारद अकबर मन बहलाने केलिए बीरबल की ओर देखता था ।

प्रसंग:

इस निबन्ध के सारे अवतरणों केलिए यही प्रसंग लिखें ।

संदर्भ:

इसमें लेखक शुक्ल जी मित्रता के कुछ गुण बता रहे हैं जो भिन्न प्रकृतिवालों के बीच होते हैं ।

व्याख्या:

मित्रता केलिए समान प्रवृति, समान आचरण तथा समान प्रकृति की आवश्यकता नहीं है । दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों के बीच प्रेम और मित्रता होती है । उदाहरण केलिए राम धीरोदात नायक थे । उनकी प्रकृति धीर तथा शान्त थी । उनके भाई लक्ष्मण उग्र तथा उद्धत स्वभाव के थे । किन्तु दोनों भाइयों में परस्पर प्रगाढ स्नेह था । उसी तरह कर्ण बडा उदार तथा उच्चशयवाला था । दुर्योधन बडा लोभी था । उन दोनों के स्वभाव में कोई समानता न होने पर भी उन दोनों की मित्रता

खूब निभी । अतः एक ही स्वभाव और रुचि के लोगो में ही मित्रता होने की जरुरत नही है । समाज में विभिन्नता को देखकर लोग एक दूसरे की तरफ आकृष्ट होते हैं । जो गुण हम में नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले जिसमें वह गुण विद्यमान हो । चिन्ताशील मनुष्य प्रफूल्लित मनुष्य का साथ खोजता है । निबल बली का, धीर उत्सा ही की ओर ताकता है । उदाहरण केलिए उच्च आकाक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय केलिए चाणक्य का मुँह ताकता था । नीतिविशारद अकबर मन बहलाने केलिए बीरबल की ओर देखता था ।

टिप्पणीः

1) मित्रता केलिए एक ही प्रकार की प्रवृति होने की जरुरत नहीं ।

2) भिन्न प्रकृतिवाले मनुष्यों के बीच में भी घनिष्ट मित्रता हो जाती है ।

3) मित्रता केलिए इतिहास में अनेक अच्छे उदाहरण मिलते हैं ।

9) मित्रता जीवन और मरण के मार्ग में सहारे केलिए है ।

मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खोने केलिए समय नहीं ।

मेरी समझ में तो महाराणा प्रताप की भाँति संकट में दिन काटना वाजिद अलीशाह की भाँति भोग विलास करने से अच्छा है । मेरी समझ में शिवाजी के सवारों की तरह चने बाँधकर चलना औंरगजेब के सवारों की तरह हुक्के और पानदान के साथ चलने से अच्छा है ।

प्रसंगः

इस पाठ के सभी उद्धरणों केलिए यही प्रसंग लिखें ।

संदर्भः

इसमें निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी मित्रता के महत्व पर प्रकाश डाला गया है ।

व्याख्याः

मित्रता जीवन और मरण अर्थात जन्म और मृत्यु के पथ में सहारा देती है । सच्छा मित्र हाथ बढाकर सदा साथ देता है । जान - पहचानवालों के संबंध में भी ये बाते ठीक और सही हैं । कभी - कभी मित्रता में संकट भी उत्पन्न होते हैं । महाराण प्रताप की भाँति संकट में दिन काटना, वाजिद अलीशाह की भाँति भोग - विलास करने से अच्छा है । उसी तरह शिवाजी के सवारों की तरह चने वाँधकर चलना, औरंगजेब के सवारों की तरह हुक्के और पानदान के साथ चलने से बेहतर है ।

महा मति बेकन के मतानुसार समूह का नाम संगति नाहीं हैं । जिन्दगी में दूसरों की मदद करने में हाय बटा वें । मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खोने केलिए समय नहीं । कदापि मूर्खताओं की नकल न करें ।

विशेषताएँः

1) इस निबन्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी मित्रता और समय का सदुपयोग के महत्व को स्पष्ट किया गया है ।

2) मनुष्य का जीवन योडा है, उसे दुरुपयोह नहीं करना चाहिए ।

3) इतिहास के महा पुरुषों तथा उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है ।

1. मुक्तिधन

- प्रेमचन्द

इकाई की रुपरेखाः

1.1 कहानी का उद्धेश्य

1.2 कहानी की परिभाषा

1.3 रविबाबू की परिभाषा

1.4 कहानी की परंपरा

1.5 हिन्दी साहित्य में कहानी की परंपरा

1.6 हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द का स्थान

1.7 प्रेमचन्द का युग

1.8 कहानीकारों का परिचय

1.9 कहानीकार की प्रमुख रचनाएँ

1.10 मूल कहानी - मुक्तिधन

1.11 कठिन शब्दों के अर्थ

1.12 कथानक

1.13 चरित्र - चित्रण

1.14 देशकाल और वातावरण

1.15 शीर्षक

1.16 भाषा - शैली

1.17 कुछ बोधगम्य प्रश्न

1.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.19 कहानी का सारांश

1.20 कहानी का उद्धेश्य

1.21 विशेषताए

1.1 कहानी का उद्धेश्यः

1) इसमें प्रेमचन्द की मशहूर कहानी ।मुक्तिधन' पर विचार करना है ।

2) इस कहानी से उस समाज में स्थित जो साम्प्रदायिक संपूर्णता से ऊपर उठकर मानव व्यवहार की उदारता को स्पष्ट करती हैं ।

3) 'मुक्ति धन' कहानी के द्वारा भारतीय किसानों की आर्थिक विपन्नता को देख सकते हैं ।

4) समसामयिक समाज का यथार्थ चित्रण करना ही 'मुक्तिधन' की प्रमुख विशेषता है ।

5) दोनों पात्रों के द्वारा शोषक और शोषित में अपूर्व सामंजस्य की स्थापना करना ही कहानी का मार्मिक उपसंहार है ।

1.2 कहानी की परिभाषाः

व्यक्ति की अनुभूतियाँ ही रचनाशील भावना से अनुरंजित होकर कहानी बनजाती है ।

क्षण - क्षण रुप बदलनेवाली वस्तु को भाषा के चौखट में बाँध रखना एक कठिन कार्य है । जिस तरह प्रेम, ईश्वर, कविता आदि की अब तक निश्चित परिभाषाएँ नहीं बन सकी है उसीतरह कहानी की भी एक सुनिश्चित परिभाषा नहीं बनायी जा सकती है ।

1.3 रविबाबू की परिभाषाः

जीवन के प्रति क्षण एक सारगर्भित कहानी है । उसका रहस्य क्या है ? इन प्रश्नों पर विद्वानों के अलग - अलग मत होते हैं । ''जितने मुँह उतनी बातें ''

कहानी की विभिन्न प्रकार की परिभाषाएँ । इस प्रकार है - पाश्चत्य देशों में एडर एलन पो (Edger Allen Poe) आधुनिक कहानी के जन्मदाता माने जाते हैं । हायर्न की कहानी "Twice Told Laies" की आलोचना करते हुए उन्होंने लिखा है कि - A short story is a narrative short enough to be read in a single sitting written to wake an impresion on the render excluding all that does not forward that impression complete and final in itself.

कहानी एक ऐसा आख्यान है जो इतना छोटा है कि - एक बैठक में पढा जा सके और जो पाठक पर एक ही प्रभाव के उत्पन्न करने के उद्धेश्य से लिखा गया हो । उसमें ऐसी सब बातों का बहिष्कार कर दिया जाता है । जो उस प्रभाव को आग्र सरकरने में सहायक न हो । उनके अनुसार किसी भी कहानी की पूरा करने कम - से - कम आधा घण्टा और अधिक से अधिक दो घण्टों का समय लगना चाहिए । इस तरह 'एड़गर एलन पो' के अनुसार कहानी की क्षमता पर जोर दिया । आधुनिक कहानी कारों ने तो यह नियमसा बना लिया हैं कि - सफल और श्रेष्ठ कहानी लिखने के लिए कम - से - कम 100 शब्दों और अधिक से अधिक 1500 शब्दों का व्यवहार होना चाहिए । अमेरिकन पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाली कद्यानियाँ एक पृष्ठ से अधिक लम्बी नहीं होती है ।

हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकारों ने विषयगत और उद्धेश्यगत परिभाषाएँ दी हैं । जिनमें प्रेमन्द का जगह सर्वोपरी है । कहानी की परिभाषा पर प्रेमचन्द का कथन है - ''कहानी एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग पर या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्धेश्य रहता है । उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा - विन्यास सबउसी एक भाव को पुष्ट करते है । प्रेमनच्द और एक कथन है - कहानी एक मामला है जिसमें एक ही पौधेका माधुर्य अपने सच्चे रुप में दिखाई दैता है ।

हिन्दी कहानी साहित्य के दूसरे श्रेष्ठ कहानीकार श्री जैनेन्द्र कुमा रने कहानी की परिभाषा अपने ढंग से की है । उनकी दृष्टि में कहानी मनुष्य के चिरन्तन प्रश्नों, शंकाओं और चिन्ताओं के उचित समाधान की खोज है ।

हिन्दी कहानी साहित्य के तीसरे मशहूर कहानीकार अज्ञेय जी है । उनके अनुसार कहानी की परिभाषा इस प्रकार है - कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है, एक शिक्षा है जो उम्रभर मिलती है और समाप्त नहीं देती है ।

श्रीचन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने लिखा है कि - ''घटनात्मक इकहरे चित्रण का नाम कहानी है ।''

1.4 कहानी की परंपराः

विद्वानों का मत है कि पूर्व एवं पश्चिम के दूसरै देशों में ही कथा - कहानियों की परंपरा भारत से ही गयी थी । ऋग्वेद मानवता का प्राचीनतम साहित्य माना जाता है । इसमें अधिक भाग कथोप कथन मिलते हैं । आगे चलकर ब्राहमण एवं उपनिषद ग्रन्थों में विकास हुआ जो वैदिक कहानियों के रुप में प्रसिद्ध बने हैं । इनमें उच्चतर साधना की ओर आग्रह होते हुए भी शारीरिक प्रयोजनों से सम्बन्धित मानवीय दुर्बलताओं के सुन्दर प्रतीक है । क्रमशः वैदिक साहित्य की कहानी परंपरा सहस्र मुखी होकर पुराणों में व्यक्त हुई । क्रमशः जातक कथाओं का जन्म हुआ ।

कहानिथों को स्थूल रुप से तीन प्रकारों में विभक्त कर सकतै हैं । वे हैं -

1. मनोरंजक कहानियाँ ।
2. उपदेशात्मक कहानियाँ ।
3. काव्यात्मक कहानियाँ ।

1. मनोरंजक कहानियाँः

इसमें बृहत कथा, सिंहासन द्वात्रिशिका तथा बैताल पंचविंशति का आते हैं ।

2. उपदेशात्मक कहानियाँः

पंचतंत्र तथा हितोपदेश आते हैं ।

3. काव्यात्मक कहानियाँः

इसमें वासवदता, दशकुमार चरित आदि आते है ।

1.5 हिन्दी साहित्य में कहानी की परंपराः

हिन्दी साहित्य संसार में कहानियों का श्रीगणेश वीरगाथा काल से ही आरंभ होता है । पद्य शैली में ही उस जमाने में कहानी सुनती थी । बैताल पच्चीसी आदि कहानियों को लोग बडे चाव से सुनते थे । भक्ति काल में भक्तों की कथाओं का संग्रहकिया चौरासी वैष्णवों की वार्ता दोसौ बावन वैष्णवों की वातो आदि बहुत मशहूर हुई सून 1800 से खडीबोली में गद्य रचना का प्रारंभ हुआ । लल्ललाल और सदलमिश्र ने संस्कृत कथाओं आधार पर कहानियाँ लिखींजैसे - लल्लू लाल ने - बतीसी, बोताल की रचना की ।

शनैः शनैः फारसी तथा उर्दू से-किस्सा तोता - मैना, किस्सा साढे - तीन चार आदि अनूदित हुए । उसी वक्त, देश में राष्ट्रीयता की भावनाएँ जागउठीयी । देश के सुधार की भावनाएँ लोगों में पनपने लगी बालकृष्ण भट्ट आदि ने कहानियाँ लिखी । किन्तु नवीनता का कमी थी । इस समय ''इन्शा अल्लाखाँ'' ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखी । राजशिवप्रसाद ने 'राजा भोज का सपना' लिखा ।

आधुनिक हिन्दी कहानियों का आरंभ (1) भारतेन्दु युग, (2) द्विवेदी युग, (3) प्रसाद युग, (4) प्रेमचन्द युग, (5) जैनेन्द्र युग में हुआ ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के मतानुसार किशोरीलाल गोस्वामी की ''ईन्दुमति'' हिन्दी साहित्य की पहली मौलिक कहानी मानी जाती है । उसके पश्चात्

सुदर्शन परिवर्तन, नगीना, पनघट, तीर्थ यात्रा, गल्पमंजरी, सुप्रभात, चार कहानियाँ ।

उपेन्द्र नाथ 'कौशिक' ताई, अशिक्षित का हृदय, दवेजी की चिट्ठियाँ । जयशंकर प्रसाद - प्रतिध्वनि आकाश दीप, आँधी, इन्द्र जाल । उग्रजी - चिनगारिथाँ, बलात्कार, सनकी अमीर कहानी संग्रह । शास्त्रीजी - राजकण, अज्ञात (कहानी संग्रह) दुःख वा कासो कहूँ ।

मेरी सजनी, भिक्षु राज, कंकडों की कीमत प्रसिद्ध कहानियाँ हैं । भगवतीचरण वर्मा - खिलते फूल, दों बाँके इन्स्टालमेंट (कहानीसंग्रह) सप्रसिद्ध हैं ।

विकास की दृष्टि से हिन्दी के कथा साहित्य की उन्नति हो रही है । भारतीय कहानीकारों ने आज विश्व की समस्त प्रचलित शैलियों को अपना लिया ।

1.6 हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द का स्थानः

वास्तविक हिन्दी साहित्य में कहानी साहित्य की शुरुआत मुंशी प्रेमचन्द जी से होती है । सन् 1907 में प्रेमचन्द नै कहानियों के साथ साहित्य में प्रवे शकिये । वे पहले उर्दू में उसके बाद हिन्दी में कहानियाँ लिखीं । उन्होंने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों की मार्मिक विवेचन की । कल्पित कथा वस्तु एवं रोमांचकारी घटनाओं का स्थान पर जीवन और संसार की वास्तविकता का दर्शन कराया ।

हिन्दी कहानी के क्षेत्र में प्रेमचन्द ने मौलिक कहानियों की रचना की लोगों की रुचि को अनुकूल बनाने तथा उसमें सामाजिक जिन्दगी कें अनुरुप नवीन संस्कार भरने को भरसक प्रयास किया । हिन्दी के पाठका के पुरानी दृष्टि कोण को परिवर्तन करने में प्रेमचन्द का उतना ही महत्व है - जितना आधुनिक भारत के राजनीतिक दृष्टिकोण को बदलने में उनका श्रेय महात्मागाँधी को है ।

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी कहानी साहित्य में प्रथम युगान्तकारी साहित्यकार हैं । उन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य में मौलिकता और नवीनता का रस संचार किया । बल्कि जन जीवन को प्रबुद्ध शुद्ध और जागरुक बनाने का पूर्ण प्रयत्न भी किया है । प्रेमचन्द जीने अपनी कहानियों में घटनाओं का अत्यधिक वर्णन किया है । पीछ चलकर धीरे - धीरे ये सूक्ष्म और पतली होती गयी है ।

1.7 कहानीकारों का वर्गीकरणः

कला के वस्तु तथा शिल्प इन दोनों रुपों को दृष्टि में रखकर आधुनिक कहानियों और कहानि कारों का वर्गीकरण करें तो वे इसतरह के होते हैं -

1) प्रसादयुग

2) प्रेमचन्द युग

3) उग्र युग

4) जैनेन्द्र युग

5) यशपाल युग ।

1.8 प्रेमचन्द का युगः

हिन्दी साहित्य के दूसरे युग प्रवर्तक कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द सन् 1916 ई.में. अपनी पहली कहानी 'पंचपरमेश्वर' के साथ हिन्दी साहित्य में पदार्पण हुए । उन्होंने इस युग को अधिकाधिक विकसित किया इसलिए उनके नाम पर इस युग का नामकरण किया गया है । इस युग की कहानियों की विशेषताएँ हैं । इनमें घटनाओं की प्रधानता रहती है । चरित्रों तथा परिस्थितियों के संबंध पर जोर दिया जाता है ।

प्रेमचन्द - नशा ।

कौशिक - रक्षाबन्धन ।

सुदर्शन - हार की जीत ।

इसके उत्तम उदाहरण है ।

इस युग की कहानियाँ समाज और जीवन का सर्वांगीण चित्रण करने के कारण सबसे अधिक लोकप्रिय बन गये । लोगों के बीच में प्रेमचन्द, सुदर्शन, कौशिक की कहानियों का जितना प्रचार और प्रसार हुआ है उतना दूसरे कहानिकारों का नहीं यही कारण है कि इन कहानी कारों की कहानी शैली का असर हिन्दी के दूसरे कहानीकारों पर भी बहुत ज्यादा प्रभाव पडा है । हिन्दी की कई कहानियाँ इनके अनुकरण पर लिखी गयी है । 'बिहार' के कुशल कहानीकार श्रीराधा कृष्ण इसयुग के कहानीकारों में एक हैं ।

इस युग की सबसे बडी विशोषता यह है कि इन कहानीकारों ने भारतीय समाज के विभिन्न बर्गों, पधानतः ग्रामीणों का सजीव चित्रण किया है । ग्रमीण एवं निम्नवर्ग के जीवन का इतना सूक्ष्म और ममस्पर्शी वर्णन हिन्दी का अनेक कहानियों में नहीं पाया जाता है । प्रेमचन्द इसके एक मात्र प्रतिनिधि कहानीकार हैं ।

इस युग की कहानीकारों ने यथार्य और आदर्श का अदभुत समन्वय किया है । उनकी लोकप्रियता का यह भी एक सबूत कारण है । उन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्यता की वास्तविक आत्मा को पहचाना था पाश्चात्य कहानी साहित्य से प्रभावित होने पर भी उनकी कहा नियाँ भारतीयता की प्रतिनिधि रचनाएँ है । उनमें भारत की आत्मा साकार हो उठी है । इस युग की कहानीकारों ने संबाद योजना था कथोपकथन पर अधिक बल दिया है । उनकी कहानियों में जितना सारगर्भित सार्थक, सजीव और स्वाभाविक कथोपकथन मिलता है उतना हिन्दी के दूसरे कहानी कारों में नहों मिलता । इस युग की लोकप्रियता का सबसे महत्वपूर्ण करण उनकी 'भाषा - शैली' है।

1.9 कहानीकार का परिचयः

मुंशी प्रेमचन्द साहित्यकार के नाते तो महान ही, मनुष्य के नाते और भी महान हैं । हिन्दी के ''उपन्यास समृाट'' श्री प्रेमचन्द जीवन की कहानी अग्रेजी उपन्यासकार ''इिकेन्स'' और ''गोल्डस्मिथ'' की तरह जर्जर गरीबी की कथा है । प्रेमचन्द की कहानियों में गरीबी का सजीव वर्णन और मर्मस्पशौ भी है । उसका वजह उनकी अद्भुत कल्पना शक्ति नही बल्कि उनकी आपवीती आत्मानुभूति है ।

मुंशी प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को काशी / बनारस के सामने 'लमही' नामक गाँव में मध्यवर्गोय गरीब काथस्य परिवार में हु आथा । उनके पिता श्री अजायब राय बहुत ही मामूली आदमी थे । प्रेमचन्द की माता का नाम आनन्दी देवीथा । प्रेमचन्द के घर में दो नाम थे । पिता ''धनपतराय'' कहते थे और चाचा पुकारते थे ''नवाबराय'' । प्रेमचन्द की पढाई 1885 में पाँच साल की आयु में शुरु हुई । पढने में बहुत तेज थे । इनका बचपन घोर संकटों में बीता ।

प्रेमचन्द बचपन से ही भावुक, सत्यनिष्ठ स्वाभिमानी और निश्कलंक थे । गरीबी में प्रेमचन्द का कभी पीछा नहीं छोडा । पेशे से वे अध्यापक थे । बढते - बढते डिप्टी इन्सपेक्टर बनगये और 1920 में गाँधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी को इस्तीफा दिया । किस्से कहानी सुनते सुनाते थे । लिखने की प्रवृति प्रेमचन्द में बचपन से ही थी । सैकडों उर्दू उपन्यास पढे कि - दिल उसमें रंग गया था । 1907 में रवीन्द्र नाथ की कहानियाँ अंग्रेजी से उर्दू में तर्जुमा करके छपवायी। 1909 में 'सोजे वतन' नाम पर पाँच मौलिक कहानियाँ, का प्रकाशन किया ।

हिन्दी में कहानी रचना करने की स्पूर्ति श्रीमन्नन दिूवेदी और श्रीमन्नत द्विवदी और श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी से मिली । हिन्दी साहित्य सेवा करना उनका एक मात्र ध्थेय बना । सुन् 1915 में पहला कहानी - संग्रह निकला । 20 साल हिन्दी में कहानियाँ और उपन्यास लिखकर अक्ष्य कीर्ति को अर्जित की ।

उन्होंने अपना अंतिम भाषण लिख जिसमें महान लेखक मैक्सिम गोर्की जिसे वे बराबर प्यार करते थे, जिनक साहित्य की प्रशंसा करते थे । उस महान लेखक की याद में श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी । उस अद्भुत व्यक्ति के नामोल्लेखन पर ही प्रेमचंन्द की आँखे भर आई जिसके समान वे अपने जीवन में ख्याति प्राप्त न सके । मैक्सिम गोर्की की मृत्यु के दो महीने के बाद 8 अक्तूबर सन् 1936 को 56 वर्ष की आयु में यह महान भारतीय साहित्यकार का देहावसान हो गया है ।

1.10 कहानीकार की प्रमुख रचनाएँः

मुंशी प्रेमचन्द का साहित्य कितना विशद् है, विपुल है , विभिन्न है उनकी रचनाओं की तालिका सुन्दर ढंग से ही स्पष्ट होती है ।

कहानियाँः

सप्तसरोज

नवनिधि

प्रेमपूर्णिमा

प्रेमद्वादशी

प्रेमतीर्थ

प्रेमपीयूष

प्रेमकुन्ज

प्रेमचतुर्थी

पंचप्रसून

सप्तसुमन

मानसरोवर (1 - 8 भाग)

प्रेमप्रतिमा

प्रेरणा

प्रेम प्रमोद

प्रेम सरोवर

कुते की कहानी

जंगल की कहानी

अग्नि सामाधि

प्रेम गंगा

पाँचफूल

उपन्यासः

प्रेमा, वरदान, प्रतिज्ञा (1906)

रंगभूमि (1915)

सेवासदन (1916)

प्रेमाश्रम (1922)

निर्मला (1923)

कायाकल्प (1928)

गबन (1931)

कर्मभूमि (1932)

गोदान (1936)

मंगलसूत्र (1936 अधूरा)

नाटकः

प्रेम की वेदी

कविता

संग्राम

अनुवादः

सृष्टि का आरंभ

फिसाने आजाद

सुखदास

अहंकार

हडताल

चाँदी की डिबिया

न्याय

बलोपयोगीः

मनमोदक

कुते की कहानी

जगल की कहानियाँ

टालस्टाय की कहानियाँ

दर्गादास

रामचर्चा

निबन्धः

कुछ विचार

कलम, तलवार और त्याग

पत्र - पत्रिकाएँः

जागरण

हंस

माधुरी

मर्यादा

1.11 मल कहानी - मुक्तिधनः

Xerox from the text book

1.12 कठिन शब्दों के अर्थ:

नजराने की रकम	=	भेंट या पुरस्कार के रुप में दिया जाने वाला धन
लिखाई	=	लिखने का काम
दलाली	=	दलाल का काम, पारिश्रमिक
मुख्तारगिरी	=	प्रतिनिधित्व
पगहिया	=	पशुओं के गले में बाँधी जाने वाली रस्सी
मुख्तार	=	प्रतिनिधि
शुबहा	=	शंका
खली	=	तेल निकाल देने पर तिलहन की बची हुई सीठी
इजाफा लगान	=	लगान में तरक्की
जवाबदेही	=	जिम्मेदारी उतर देने का काम
तदबीर	=	उपाय
फजल	=	कृपा, मेहरबानी
नालिश	=	मुकद्धमा
रेतना	=	धार रगडना, कष्टदेना
मियाद	=	समय, अवधि, वक्त
तकाजा	=	आदेश
जकात	=	दान, खैरात, बचत का चालीसवाँ भाग
खैरात	=	दान
कुरान	=	तलावत = कुरान - शरीफ पढना
सेंत	=	मुफ्त
आबरु	=	इज्ज़त, मान, गौरव, आदर
अटकल	=	अंदाज, अनुमान
गरीब परवर	=	गरीबों का रक्षक
अगहन	=	मार्गशीर्ष का महीना
चिरौरी	=	प्रार्थना

हुन = सोने का सिक्का

गैबी = परोक्ष, छिपाहुआ

उरित = उऋण, ऋणमुक्त

मुश्किल कुशा = परमात्मा

कर्जदार = ऋणी

फरिश्ता = देवता

1.12 कथानक:

'मुक्तिधन' एक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है, जो साम्प्रदायिक संपूर्णता से ऊपर उठकर मानव व्यवहार की उदारता का चित्रण करती है। लाला दाऊदयाल एक महाजन है, जो अपने वसूलने में आसामियों के साथ रियायत नहीं करता। परन्तु रहमान की नेक नीयती और सरल व्यवहार उसे गहराई तक प्रभावित करती है वह रहमान को उधार देने में तनिक भी हिचकिचाहट अनुभव नहीं करता। केवल इतना ही नहीं जब रहमान खड़ी फसल के जल जाने से बिल्कुल असहाय हो जाता है, तो वह उसका सारा कर्ज माफ कर देता है।

1.13 चरित्र - चित्रण:

1. रहमान का चरित्र - चित्रण:

'मुक्तिधन' कहानी का प्रधान पात्र - रहमान है। वह एक नेक नीयतवाला गरीब किसान है। वह जमींदार के इजाफालगान के दावे की जवाब देही करने केलिए कोई उपाय न सूझने के कारण अपनी गाय बेचने को विवश होता है। गाय बेचते समय वह विक्षुब्ध और दु:खी है। अपनी करुणा भरी आँखें से वह कभी गाय की ओर देखता और कभी दिल मसोसकर रह जाता है। उसने दाऊ दयाल से अपनी गाय का मूल्य 50 रुपये बताये। सौदा 35 रुपये पर तय हुआ। इसके बाद भी एक ने ३६ और दूसरे ने 40 रुपये देने की तैयारी की। परन्तु रहमान ने न कह दिया। वह लाला को अपनी विवशता प्रकट करता है और अर्ज करता है कि उनका चरवाहा गाय को न पीटे।

गरीब रहमान की इस सहृदयता से मुग्ध होकर अपने आप कहता है - भगवान , इस श्रेणी के मनुष्य में भी इतना सौजन्य और इतनी सहृदयता है। यहाँ तो बडे - बडे तिलक - त्रिपुण्ड धारी महात्मा कसाइयों के हाथों गऊएँ बेच देते हैं, एक पैसे का घाटा भी उठाना नहीं चाहते और वह गरीब 5 का घाटा सहकर इसलिए मेरे हाय गऊ बेच रहा है कि यह किसी कसाई के हाथ न पड़ जाए। गरीबों में भी इतनी समझ हो सकती है।

रहमान को इस नेक नियती, घार्मिक सहिष्णुता तथा सौजन्य गाय के प्रति उसकी श्रद्धा की भावना, दूसरे के धर्म के प्रति श्रद्धा एव विश्वास की भावना से दाऊदयाल अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

रहमान का चरित्र एक ओर भारतीय किसानों की आर्थिक दु:स्थिति एवं महाजनों से शोषित स्थिति का एक सजीव चित्र है। साम्प्रदायिकता, परोक्ष रुप से जिन्दगी में प्राप्त कई प्रकार के मुसीबत, बिरादरी के आचार - व्यवहार, रस्म - रिवाज आदि रहमान के चरित्र के माध्यम से प्रकट होते हैं।

रहमान 'मुक्तिधन' कहानी के केन्द्र बिन्दु है । उसकी बूढी माँ को हज यात्रा करने की इच्छा थी । मातृभक्त ग्रामीणों का विशिष्ट गुण है । रहमान सोच विचार कर दाऊदयाल से कर्ज माँगने चला ।

दो वर्ष की मियाद पर दो सौ रुपये लिए । लिखाई , नजराना और दलाली की कटौती के बाद 180 रुपये मिले । घर में रखा हुआ थोडा - सा गुड भी बेचकर माता के साथ हज को चला । हज की यात्रा हुई, माँ बीमार पड गयी । मियाद गुजर जाने पर रहमान को बुलाया गया । उसने अपनी दुर्दशा बताकर साल भर की और मोहलत माँगी । 32 सैकड़े व्याज पर एक वर्ष में चुकाने की वादा करके घर पहुँचा तो देखा माँ का अंतिम वक्त पहुँचा है । दर्शन बन्द थे, सो होगये । माँने बेटे को वात्सल्य भरी दृष्टि से देखा, आशीर्वाद दिया और परलोक सिधारी ।

पडोसिथों से ऋण लेकर दफन - कफन का प्रबंध किया । कब्र की बनावंट बिरादरी का खाना, गरीवों की खैरात, कुरान की तलावत आदि संस्कारों के लिए रुपये की जरुरत थी । कई संकल्पु - विकल्प और सोच - विचार के बाद विवश होकर फिर दाऊदयाल के पास पहुँचा ।

जब रहमान फूट - पूट कर रोने लगी तो अन्दाजे से दाऊदयाल समझ गया कि इसकी माँ मर गयी । रहमान और दाऊदयाल के कथोपकथन में एक प्रकार की गंभीरता, दार्शनिकता और नेक नियती दिखाई देती हैं ।

रहमान के शब्दों में अप्रतिम ईमानदारी दिखाई पडती है - ''हजूर । अभी पिछला ही पडा हुआ है, अब और किस मुह से माँगू? लेकिन अल्लाह जानता है, कहाँ से एक पैसा मिलने की उम्मीद नहीं और काम ऐसा आ पडा है कि अगर न करुँ तो जीवन भर पछतावा रहेगा । यह समझकर दिजिए कि कुँए में डाल रहा हूँ । जिन्दा रहूँगा तो एक - एक कोडी मय सूद के अदा कर दूँगा । मगर इस घडी ना ही न किजिएगा ।''

दाऊदयाल ने दो सौ रुपये दिये । जब ऊख का सारा खेत जलकर राख का ढेर होगया तो रहमान की पूरी इच्छाएँ भी नष्ट - भृष्ट हो गथीं । गरीब की कमर टूट गयी । नियाद पूरी होने पर दाऊ दयाल का चपरासी उसे घसीटता हुआ लेजाता है । जब दाऊदयाल उसकी आखरी आरजू जानकर कहता है कि समझलूँ कि मेरे सारे रुपये अदा हो गये तब रहमान पूरी ईमानदारी से कहता है - ''अरे हुजूर, यह कैसे समझूलूँ । यहाँ न दूँगा तो वहाँ देने पडेंगे'' ।

सरकार ऐसा न करे इतना बोझ सिर पर लेकर नहीं मरूँगा इन बातों में रहमान की भलाई और नेकी प्रकट होती है । दाऊ दयाल के शब्दों में उसकी शराफत का जीवन्त रुप दिखाई देता है .. तुम्हारी वह शराफत मुजे याद है । उस एहसान का बदला चुकाना मेरी ताकत के बाहर है । जब तुम इतने गरीब और नादान होकर एक गऊ की जान केलिए पाँच रुपये का नुकसान उठा सकते हो, तो तुमहारी सौगुनी हैसिथत रखकर अगर चार - पाँच सौ रुपये माफ कर देता हूँ तो कोई बडा काम नहीं कर पार हा हूँ तुमने भले ही जानकर मेरे उपर कोई एहसान न किया हो, पर असल में वह मेरे धर्म पर एहसान था । मैं ने भी तुम्हें धर्म के काम ही केलिए रुपये दिये थे । वस, हम तुम दोनों बराबर होगये ।

इतना कह वह गाय के दोनों बछड़े और जरुरत पडने पर पैसे भी, जितना चाहे देने को तैयार होता है तो रहमान को सामने कोई फरिश्ता बैठा मालूम होता है । रहमान ने जो गाय हिन्दु के हाथ बेचकर धर्म पर एहसान किया था, वह उसका मुक्तिधन था, उसके उधार से मुक्ति देना वाला धन है ।

रहमान के चरित्र मे हर कदम पर ईमानदारी गाय के प्रति श्रद्धा, भक्ति और वास्तल्य, धार्मिक आचार - विचार के पालन के प्रति , निष्ठा और बेबसी दिखाई पडती है । 'समय - समय पर उस पर टूट पडनेवाले आफतों से पाठक का मन मचल जाता है । हम दर्दी से आँसू भर आते हैं ।'

2. **लाला दाऊदयाल का चरित्र - चित्रणः**

लाला दाऊदयाल 'मुक्तिधन' कहानी का प्रधान चरित्र है । वह महाजनी सभ्यता, का प्रतिनिधि है । कचहरी में मुख्तागिरी करते हुए, बचत के रुपये 25-30 रुपये सैकडा वार्षिक व्याज पर देते रहते हैं । उनका व्यवहार ज्यादातर निम्न वर्गीय लोगों तक ही सीमित था । लेन - देन करने वाले बनिये आसामियों की गरदन ही रेतते हैं । इन सबसे लाला दाऊ दयाल ही अच्छे हैं । सुना है, वादे पर रुपये लाते हैं। किसी तरह नहीं घोडते लेनी चाहे दीवार को घोड दे दीमक चाहे लकडी को छोड दे पर वादे पर रुपये न मिले, तो वह आसामियों को नहीं छोडते । बात पीछे करते हैं । नालिश पहले । हाँ, इतना है कि आसामियों की आँखों में धूल नहीं झोंकते, हिसाब - किताब साफ रखते हैं । अगर कहीं वादे पर रुपये न पहुँचे तो? बिना नालिश किये न मानेंगे, घर - वार, बैल बधिया, सब नीलम करा लें गे ।''

एक दिन कचहरी से घर आते वक्त रहमान की गऊ को देखकर रीझ गये । विचार - विमर्श के बाद 35 रुपये पर सौदा तय हुआ । गऊ कोलिए मन्द गति से दाऊत्रदयाल के पीछे - पीछे चलते किसी ने रहमान से कहा कि हम 36 देते हैं , हमारे साथ चला रहमान ने न कहा । दूसरे कहा - हम से 40 ले लो । पर रहमान ने हामी न भरी । यही इन दोनों - दाऊदयाल और रहमान - का प्रथम परिचय था । रहमान अरजू करता है कि अपने चरवाह को डाँट दीजिए गा कि इसे मारे - पीटे नहीं । इस सन्दर्भ में दाऊदयाल का चिन्तन - भगवान । इस वर्ग के मुष्य में भी इतना सौजन्य इतनी सहृदयता है । यहाँ तो बडे - बडे तिलकधारी - त्रिपुंडधारी महात्मा कसाइयों के हाथ गउएँ बेचजाते हैं, एक पैसे का घाटा भी नहीं उठाना चाहते और यह गरीब 5 का घाटा सहकर इसलिए मेरे साथ गऊबेच रहा है कि वह किसी कसाई के हाथ न पड़ जाए । गरीबों में भी इतनी समझ हो सकती है । यह रहमान की नेक नियती और सरल व्यवहार के गहरे असर की अभिव्यक्ति है । यही असर कहानी के अन्त तक उत्तरोत्तर अग्रसर होता है ।

जब रहमान की माता सिधरजाती है तब दाऊदयाल की बातों में धार्मिक विश्वास प्रकट होता है - सब्र करो, ईश्वर को जो मंज्बरे था वह हुआ ऐसी मौत पर गम न करना चाहिए । तुम्हारे हाथों उनकी मिटि काने लग गयी । अब और क्या चाहिए । यों कहकर दाऊ दयाल ने दो सौ रुपये दे दिये । जो लोग उनके व्यवहार से परिचित थे, उन्हें इस रियायत पर आश्चर्य होता है । इस प्रकार दाऊदयाल रहमान के सौजन्य से प्रभावित होकर उसे कर्ज देने में आगे - पीछे नहीं करते केवल इतना ही नहीं जब रहमान की फसल जल जाती है और वह बिल्कुल असहाय हो जाता है । तब उसका सारा कर्ज माफ कर देता है । यह उसकी उदारता एवं उसके चरित्र का उज्ज्वल पक्ष है । महाजनी सभ्यता का एक आदशौन्मुख मोड है । रुपये कर्ज देते वक्त उन्होंने रहमान को अजमाया था । जब वह कहता है कि मैं तुम्हारा कर्जदार हूँ , तुम मेरे कर्जदार नहीं हो? पाठक चकित रह जाता है, दाऊदयाल के चरित्र की गति विधि पर पाँच रूपये नुकसन उठाकर रहमान का अपनी गऊ को किसी कसाई के हाथ न बेचकर, दाऊ दयाल के हाथों बेचना ही उन्हें गहराई तक प्रभावित करता है । वह उसे अपने धर्म पर एहसुान मानता है ।

दाऊदयाल की बातों में व्यावसायिक मूल्यांकन भी परिलक्षित होता है - ''तुट्टुमहारे गऊ अब तक मेरे पास है। उसने मुझे कम से कम आठ सौ रुपये का दूध दिया है। दो बछडे नफे में अलग। अगर तुम ने यह गऊ कसाइयों को देदी होती तो मुझे इतना फायदा क्यों कर होता? रहमानकी शराफत का बदला चुकाने में अपने आपको असमर्य मानते हुए कहते है - तुमने उस वक्त पाँच रुपये का नुकसान उठाकर गऊ मेरे हाथ बेची थी। तुम्हारी वह शराफत मुझे याद हैं। उस एहसान का बदला चुकाना मेरी ताकत से बाहर है। जब तुम इतने गरीब और नादान होकर एक गऊ की जान के लिए पाँच रुपये का नुकसान उठा सकते हो, तो मैं तुम्हारी सौगुनी है सियत रखकर अगर चार - पाँच सौ रुपये माफ कर देता हूँ, तो बडा काम नहीं कर पा रहा हूँ।

रहमान की इस शराफत को दाऊदयाल अपने धर्म पर एहसान मानता है उन्होंने जो रहमान को कर्ज दो बार दिये वह भी धार्मिक काम केलिए ही है। अतः दोनों बराबर हो गये।

दाऊदयाल की बातों में बार - बार उसके उदारता पूर्ण व्यवहार का परिचय मिलता है - ''तुम्हारे दोनों बछडे मेरे यहाँ है, जी चाहे लेते जाओ, तुम्हारे खेत में काम आवेंगें। तुम सच्चे और शरीफ आंदमी हो मैं तुम्हारी मदद करने को हमेशा तैयार रहूँगा। इस समय भी तुम्हे रुपये की जरुरत हो तो जितना चाहों ले सकते हो। इस सन्दर्भ में रहमान को दाऊदयाल एक फरिश्त लगता है। मानवीय वृतियों के उज्ज्वल पक्ष का उभार दाऊदयाल के चरित्र में स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

रहमान को अपना दो स्त स्वीकार करते हुए मुक्ति धन की प्राप्ति की घोषणा करने वाला महाजन दाऊ दयाल एक आदशों त्मुख चरित्र है। उसका यह अतिम कथन पाठकों के हृदय को अत्यन्त प्रभावित करता है।

गुलाम छुटकारा पाने केलिए जो रुपये देता है, उसे मुक्ति धन करते हैं। तुम बहुत पहले 'मुक्तिधन' अदाकर चुके। अब भूल कर भी यह शब्द मुँह से न निकालना।

इस तरह 'मुक्तिधन' कहानी में दाऊदयाल एक आदर्शोन्मुख उदार चरित्र के रुप में हमारे सामने आते हैं।

1.14 देशकाल और वातावरण:

समाज में धार्मिक सहिष्णुता, दूसरों के धार्मिक विश्वासों पर श्रद्धा एवं विश्वास, मानवता की भावना और उदारतापूर्ण व्यवहार की स्थापना 'मुक्तिधन' कहानी का मुख्य लश्य रहा है।

'मुक्तिधन' कहानी धार्मिक असहिष्णुता के इस युग में और भी अधिक प्रासंगिक होजाती है।

1.15 शीर्षक:

लेन - देन की व्यवसाय में दोनो तरफ से उदारता पूर्ण व्यवहार, समाज के ययार्थ चित्रण के परिवेश में आदशोन्मुखता, शोषक एवं शोषित के वीच सामजस्य की स्थापना करना कहानी मुख्य उद्धेश्य है। 'मुक्तिधन' का शीर्षक भी इसके अनुकूल सार्थक, सफल तथा सुन्दर बन पड़ा है।

1.16 भाषा - शैली:

'मुक्तिधन' के दो प्रमुख पात्र - दाऊदयाल और रहमान के चरित्रो के उज्ज्वल पक्षों का सजीव चित्रण, पात्रानुकूल मुहावरेदार भाषा - शैली का प्रयुक्त किया गया है।

1.17 कुछ बोधगम्य प्रश्नः

1. 'प्रेमचन्द प्रगतिशील कहानीकार है' - इस विषय को स्पष्ट कीजिए ।
2. 'मुक्तिधन' कहानी का सारांश लिखिए ।
3. 'मुक्तिधन' कहानी के पात्र परि कल्पना पर विचार कीजिए ।
4. प्रेमचन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए ।
5. 'मुक्तिधन' कहानी के उद्धेश्य तथा शीर्षक पर विचार कीजिए ।

1.18 कुछ उपयोगी पुस्तकेः

हिन्दी कहानी और कहानीकार	:	प्रो. वासुदेव
ग्राम्य जीवन की कहानियाँ	:	प्रेमचन्द
कुछ विचार	:	प्रेमचन्द
हिन्दी की आदर्श कहानियाँ	:	प्रेमचन्द
हिन्दी निबन्ध	:	राज हंस प्रकाशन
कथालोक	:	डॉ. घनश्याम

1.18 कहानी का सारांशः

लाला - दाऊदयाल एक महाजन है । जो अपने वसूलने में आसामियों के साथ रियायत नहीं करता । किन्तु रहमान की नेकी नियती और सरल व्यवहार उसे गहराई तक प्रभावित करती है और वह रहमान को ऋण देने में कुछ भी सन्देह नहीं करता । गरीब मुसलमान रहमान के निकट जो गय है । उसे 35 रुपये को खरीदकर, कसाइयों के हाथों से गाय की रक्षा करता है । रहमान की बूढी माता हज यात्रा जाने केलिए आवश्यक 200 रुपये का प्रबंध करके मदद करता है ।

माँ जब से हज की यात्रा करके आयी है, तभी से बीमार पडी हुई हैं । दिन - रात उन्हीं की दवा - दारु में दौडते रहते हैं । रहमान का माँ की मृत्यु हुई । अब तक पानी में था, अब पानी सिर पर आगया और डूब गया । सिर्फ इतना ही नहीं जब रहमान खडी फसल के जल जाने से बिल्कुल असहाय हो जाता है, तो वह उसका सारा कर्ज माफ कर देता है ।

'मुक्तिधन' कहानी के अन्त बहुत मार्मिक बन पडा है । लाला - दाऊदयाल रहमान से कहता है मैं तुम्हारा कर्जदार हूँ तुम मेरे कर्जदार नहीं हो । तुम्हारी गाय अब तक मेरे पास हैं । उसने मुझे कम से कम आठ सौ रुपये का दूध दे दिया है बदो बछडे दफे में अलग । अगर तुमने यह गाय कसाईयों को दे दी होती, तो मुझे इतना लाभ क्यों कर देता । तुम ने उस वक्त पाँच रुपये का नुकसान उठाकर गाय मेरे हाथ बेची थी । तुम्हारी यह शरर्फ मुझे याद है । तुम शरीफ और अच्छे आदमी हो । मैं तुम्हारी मदद करने को सदा तैयार रहँगा ।

1.19 कहानी का उद्धेश्य:

'मुक्तिधन' कहानी का उद्धेश्य धार्मिक असहिष्णुता के इसकाल में और भी अत्यन्त प्रासंगिक हैं । मुक्तिधन का अर्थ है - गुलाम से छुटकारा पाने केलिए जो रुपये देता है । रहमान एक नेक नियती और सरल व्यवहार वाले हैं । उसे लाला - दाऊदयाल को प्रभावित करता है । महाजन दाऊदयाल पैसा वसूलने में किसी को भी छोडता नहीं ।

रहमान कर्ज के रुप में जो पैसा लेता है, वह देने में विफल होता है । दाऊदयाल ऋण देने में तनिक भी सन्देह नहीं करता । इतना ही नहीं, जब रहमान खडी फसल के जल जाने से बिल्कुल असहाय हो जाता है, तो वह उसका सारा कर्ज माफ कर देता है ।

1.20 विशेषताएँ:

1) 'मुक्तिधन' कहानी की कथा - वस्तु भारतीय किसानों की आर्थिक विपन्नता तथा महाजनी सभ्यता के शोषण के परिवेश पर निर्भर है ।

2) इसमें पारिवारिक स्थिति, आर्थिक दुस्थिति, खेती - बाडी में होने वाली कठिनाइयाँ, धार्मिक विशवास सभी का वर्णन मिलता है ।

3) मानवीय प्रवृत्तियों में उदारता एवं मानवता का क्रमिक विकास को देख सकते हैं ।

4) पात्रों के चरित्र - चित्रण में नाटकीयता है ।

5) कथोपकथन में सजीवता मिलती है ।

6) पत्रानुकूल मुहावरे दार भाषा - शैली का प्रयोग किया गया है ।

7) समसामयिक समाज का यथार्य चित्रण 'मुक्तिधन' की प्रमुख विशेषताएँ हैं ।

8) दोनों पात्रों के चरित्र में अभिव्यक्त उदारता पूर्ण व्यवहार, शोषक और शोषित में अपूर्व सामंजस्य की स्थापना ही कहानी का मार्मिक उपसंहार है ।

9) पाठकों के मन में एक आदर्शमयी सामाजिक स्थिति का चित्र उपस्थित करता है ।

2. पुरस्कार

- जयशकर प्रसाद

इकाई की रुपरेखाः

2.1 **उद्धेश्य**

2.2 **प्रस्तावना**

2.3 **कहानीकार - श्री जयशंकर प्रसाद**

2.4 **कहानी का सारांश**

2.5 **पुरस्कारः कहानी की विशेषताएँ**

2.6 **पुरस्कार कहानी के प्रमुख पात्र**

2.7 **कहानी का उद्धेश्य**

2.8 **याद करने की बातें**

2.9 **बोधगम्य प्रश्न**

2.10 **कुछे उपयोगी पुस्तकें**

2.1 उद्धेश्यः

1) इस इकाई में आप बाबू जयशंकर प्रसाद जी के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

2) इस ईकाई में 'पुरस्कार' नामक कहानी का सारांश दिया गया है ।

3) कहानी के तत्वों के आधार पर कहानी की विशेषताएँ आप जान सकेंगे ।

4) 'पुरस्कार' कहानी के प्रभाव, पात्रों का चरित्र - चित्रण आप इस इकाई में प्राप्त कर सकेंगे ।

5) कहानीकार का उद्धेश्य को जान लेंगे ।

6) इस इकाई के अन्त में स्मरणीय बातों के साथ - साथ बोधगम्य प्रश्न दिये गये हैं ।

2.2 प्रस्तावनाः

बाबू जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी साहित्य के आधार स्तंभ है । वे मूलतः कवि है । वे सुप्रसिद्ध नाटककार हैं । वे कुशल कहानीकार तथा सफल उपन्यासकार भी हैं । वे अच्छे निबन्धकार हैं । उनके कथानक मानव जीवन की सच्चाई को चित्रित करते हैं । 'पुरस्कार' उनकी एक श्रेष्ठ आदर्शवादी कहानी है । मधूलिका और अरुण के मधूलिका और अरुण उन दोनों के चरित्रों के आधार पर ही पूरी कहानी आगे बढ़ती है । पाठक मन में करुणा, सहानुभूति, ममता, घृणा आदि विर्विध भातोंका भानों समन्वित रुप उत्पन्न होता है ।

प्रेम और कर्तव्य को सामने रखते हुए कहानीकार जयशंकर प्रसाद जी ने कहानी को सुन्दर ढंग से वर्णन किया है । इस इकाई में कहानी की कथावस्तु, विशेषताएँ, चरित्र - चित्रण, उद्धेश्य आदि प्राप्त कर सकेंगे ।

2.3 कहानीकार - श्री जयशंकर प्रसादः

छायावाद के प्रवर्तक श्री जयशंकर प्रसाद जी हैं । छायावादी काव्यधारा के चार प्रमुख आधार स्तम्भों से एक तत्कालीन संक्रमण परिस्थितियों में हिन्दी साहित्य केलिए एक वरदान स्वरुप प्रसाद जी का जन्म 30 जनवरी सन् 1889 ई.मे. हुआ । काशी के गोवर्धन सराय के मुहल्ले में प्रसिद्ध सुँधनी साहू परिवार में हुआ । साहित्य के प्रति अनुकरण उन्हें अपने पिता श्री देवी प्रसाद से उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ था । यह परिवार अपनी समृद्ध, उदारता, साहित्य - प्रेम तथा धार्मिक भावनाता का काशी समाज में विशिष्ट आदर का पात्र थे । अतः काशी दरबार में आनेवाले साहित्य तथा कला प्रेमी उनके घर भी आते थे इस पिरिवेश का प्रभाव बालक प्रसाद पर पडना सहज ही था । दुर्भाग्यवश माता - पिता के अकाल देहावसान के कारण प्रसाद जी को विवशतः अपनी सिक्षा अधूरी छोडकर प्रौतृक व्यवसाय के देख - रेख केलिए बारह - वर्ष की आयु में बडे भाई के साथ दुकान पर बैठना पड़ा ।

जयशंकर प्रसाद जीने सातवीं कक्षा तक क्वींस कालेज में शिक्षा प्राप्त की । घर पर ही उन्होंने संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी भाषाएँ सीख लिया । बारह साल की छोटी उम्र में वे समस्या पूर्ति में पद्य लिखते थे ।

भआरतीय संस्कृति के प्रचार तथा विकास केलिए उन्हों ने अपने नाटकों के माध्यम बनाया । उन पर बौद्ध धर्म का विशष प्रभाव पडा है । 'प्रेमपथिक' उनके आरंभिक रचनाओं में से है । उसमें अतुकान्त का पहला प्रयोग हुआ हैं । 'आँसू' का आरंभ, कवि की विरह - वेदना की अभिव्यक्ति से हुआ है । लहर उनकी गीति - कला का उत्कृष्ट रुप है । उनकी रचनाओं में तीन मख्य प्रवृतियाँ है - वैथ क्तिक तथा ईशवरोन्मुख प्रेम, प्रकृति प्रेम और उप्रचीन गौरव की रक्षा करना । उनकी भाषा खडीबोली तथा तत्सम प्रधान भी है । उन्होंने प्रबन्ध क्षेत्र में छायावाद की चित्रात्मक और लाक्षणिक शैली का सफल किया है। 'कामायनी' प्रसाद जी की अन्तिम कृति है । सन् 1937 ई.मे. प्रकाशित उनका महा काव्य है । इसमें मनु और श्रद्धा की कथा है । उनका मुख्य उद्धेश्य नारी - पात्र को विशिष्टता तथा प्रधानता देना है। वै प्रकृति तथा मनुष्य के सौन्दर्य को पूर्ण रुपसे उपयोग करने वाले कवि हैं ।

1. **काव्य - संकलनः**

ऊर्वशी, वन मिलन, प्रेम राज्य, अयोध्या का उद्धार शोकोच्छवास, बभुवाहन, कानन कुसुम, प्रेम - पथिक, करुणालय, महाराणा का महत्व, झरना, आँसू लहर तथा कामायनी उनके प्रसिद्ध काव्य - संकलन हैं ।

2. **नाटकः**

सज्जन, कल्याणी, परिणय, प्रायश्चित, करुणालय, राज्यश्री, विशाख, अजातशत्रु, कामना, एक घूँट, जनमेजय का नाग यज्ञ, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, घृवस्वामि नी उनके सुप्रसिद्ध नाटक हैं ।

3. **कहानी - संग्रहः**

छाया, प्रतिध्वनि आकाशादीप, आँधी, इन्द्रजाल, आदि उनके प्रसिद्ध कहानी - संग्रह हैं ।

4. **उपन्यासः**

प्रसाद जी ने तीन उपन्यासों काभी प्रणयन किया, लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से उपन्यासों में उनको काम ही सफलता मिली । कंकाल, तितली, इरावती - उनके तीन उपन्यास है ।

5. **निबन्ध - संग्रहः**

'काव्य कला तथा अन्य निबन्ध' उनका प्रमुख निबन्ध - संग्रह है ।

कहानी का सन्दर्भः

पुरस्कार कहानी में नारी मन की अत्यन्त कोमल भावना प्रेम और कत्व्य परायणता के दून्दू का मार्मिक चित्रण लिता है ।

2.4 कहानी का सारांशः

कोशल राज्य में हरसाल कृषि उत्सव बडे धूम - धाम से मनाया जाता है । उस दिन कोशल महाराज किसान बनकर उर्वर भूमि जोतने केलिए आता है । उससाल राष्ट्रीय नियम के अनुसार मधूलिका का खेत राजा को अर्पित करने केलिए चुना जाता है । महाराज हल चलाते है तो मधूलिका बीजों का थाली लेकर राजा की मदद करती रहती है । उत्सव के समाप्ति के उपरान्त पुरस्कार के रुप में चौ गुना मूल्य स्वर्ण मद्राएँ मधूलिका को देना चाहता है । लेकिन मधूलिका पितृ - पितामहों की भूमि बेचना अपराध मानकर स्वर्ण मुद्राओं का तिरस्कार करती है । उस कृषि उत्सव में मगध का राज कुमार अरुण भी आता है । उस सुन्दर मधूलिका को देखकर मुग्ध होता है ।

दूसरे दिन प्रातः काल अरुण मधूक पेड के नीचे बैठी हुई मधूलिका के पास जाकर प्रेम की याचना करता हैं । लेकिन मधूलिका उसे किसी राज कुमारी से प्रेम करने की सलाह देकर उसके प्रेम को ठुकरा देती है । इस प्रकार तीन साल गुजर गये । मधुलिका निर्जन वन में एकाकी जीवन बिताने लगती है । मधूक वृक्ष के नीचे छोटी - सी पर्ण कुटीर बनाकर उसी में जीवन व्यतीत करती है । वह दूसरे किसानों के खेतों में जाकर काम करती थी । आस - पास के कृषक उसका आदर करते हैं । वह आदर्श कृषक बालिका थी ।

एक दिन मूसलाधार वर्षा में मधूलिका अपनी झोंपडी में बैठी सोच रही थी - मैं ने एक राज कुमार अरुण के प्रेम का तिरंस्कार किया हूँ । आज मधूलिका उस बीते हुए क्षण को लौटाने केलिए विकल थी । वर्षा ने भीषण रुप धारण किया । उसी समय राज कुमार अरुण आजीविका खोजते हुए मधूलिका के पास आता है ।

एक दिन शीतकाल की निस्ब्ध रजनी के चाँदनी रात में अरुण और मधूलिका पहाडी गच्छर के द्वार पर वट पेक्ष के नीचे बैठे हुए बाते कर रहे हैं । अरुण अपने साथ सौ सेनिकों के लाये हैं । अरुण एक ओर कौशल राजा के दुर्ग पर आक्रमण करने का षडयंत्र बनाता है । दूसरी और मधूलिका को कोसल सम्राज्य की राज रानी बनाने का वादा करता है । मधूलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हँसने लगी । मधूलिका मंत्र मुग्ध - सी अरुण की षडयन्त्र योजना के साथ देने का वादा करती है । योजना के अनुसार मधूलिका महाराजा के पास जाकर इस तरह कहती हैं - 'दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप जंगली भूमि वहाँ मैं खेती करुँगी, मुझे एँक सहायक मिल गया । इस प्रकार मघूलिका उस भूमि को प्राप्त कर लेती है' ।

दुर्ग के दक्षिण, भयावने नाले के तट पर घना जंगल है । अरुण के सैनिक स्वतंत्रता से इधर - उधर घूमते थे । झाडियों को काटकर पथ - बना रहा था अब तों महराजा की आज्ञा से वहाँ मधूलिका का अच्छा - सा खेत बन रहा था । एक धनें कुंज में अरुण और मधूलिका एक दूसरे को हर्षित नयनों से देख रहे थे । उसी समय अरुण अपने षडयन्त्र के बारे में मधूलिका से बता रहा है - मैं सौ सेनिकों

को लेकर श्रावस्ती दुर्ग पर आक्रमण करुँगा । प्रभात में राष्ट्र की राजधानी श्रावस्ती ''में तुम्हारा अभिषेक होना और मगध - से निर्वासित मैं एक स्वतंत्र राष्ट्र का अधिपति बनूँगा'' । मधूलिका प्रसन्न थी । किन्तु अरुण केलिए उनकी क्लयाण कामना करती थी । सहसा कोई संकेत पाकर अरुण ने कहा - ''रात बहुत हो गया । तुझे दूर जाना है । मुझे भी प्राण पत्र से इस अभियान के प्रारंभिक कार्यों की आधीरात तक पूरा कर लेना चाहिए'' ।

मधूलिका अपनी झोंपडी की ओर जा रही थी, पथ अंधकार मय था । उसका मन विचलित होगया । मधुरता नष्ट हो गयी । वह भयभीत थी । पहला भय उसे अरुण केलिए उत्पन्न हुआ । यदि वह सफल न हुआ तो ? फिर सहसा सोचने लगी - ''वह क्यों सफल हो ।? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय ? मगध - कोशल का चिर शत्र है । कोशल नरेश ने क्या कहा था - सिंह मित्र की कन्या ।'' मित्र कोशल का रक्षक वीर, उसी की कन्या आज क्या करते जा रही है? उसके पिता अन्धकार में मधूलिका को पुकार रहे थे । मधूलिका पगली - सी चिल्ला उठी और रास्ता भूल गयी । वह सेनापति के पास जाकर मिलती है और उसे चेतावनी देती है । सेनापति पहले मधूलिका की बातों पर विश्वास नहीं किया । लेकिन बाद में सेनापति ने अस्सी सैनिकों को नाले की ओर बढने की आज्ञा दी । मधूलिका को महाराजा के सामने उपस्थित किया गया । मधूलिका घृणा और लज्जा से राजा को सत्य बताती है । राजा सेनापति से सैनिकों का एकत्र करने केलिए कहा । सेके चले जाने पर राजा मधूलिका की प्रशंसा करते हुए कहा - ''सेनापति की पुत्रा सिंहमित्र ने एक बार फिर कोशल का उपकार किया'' ।

अरुण को बन्दी बनाया गया । और उसे मृत्यु दण्ड मिलता है । राजा मधूलिका से पुरस्कार माँगने केलिए कहते हैं । मधूलिका अरुण के साथ अपने को भी मृत्यु दण्ड देने केलिए कहती है ।

2.5 पुरस्कार कहानी की विशेषताएँः

1) 'पुरस्कार' नामक कहानी राष्ट्रीय नवजागरण से जुडी हुई सर्वश्रेष्ठ कहानियों में एक है ।

2) कहानी ऐतिहसिक घटना पर निर्भर है ।

3) इस कहानी में तारी हृदय के प्रेम और कर्तव्यपरायण के अन्तर्दून्दू का मार्मिक चित्रण मिलता है ।

4) भारतीय संस्कृति और इतिहास के प्रति प्रसाद जी की अनुरक्ति इसमें स्पष्ट रुप से दिखाई पडती है ।

5) कर्तव्य के आगे प्रेम झुक जाता है ।

6) स्वार्थ और सामाजिक भलाई के बीच अन्तर्दून्दू कासुन्दर चित्रण किया गया है ।

2.6 पुरस्कार कहानी के प्रमुख पात्रः

पुरस्कार कहानी के प्रमुख पात्र दो ही हैं ।

1) मधूलिका

2) अरुण

1 मधूलिका का चरित्र - चित्रणः

मधूलिका पुरस्कार कहानी की नायिका है । वह वीर सिंहमित्र की एक मात्र कन्या है । उसमें नारीगत सभी प्रवृतियाँ विद्यमान हैं - ममता, महानुभूति, प्रेम और आत्मसमर्पण ।

मघूलिका कृषक कन्या है । वह सुन्दरी हैं । उसके सौन्दर्य को देखकर लोग दंग रह जाते हैं । कृषि उत्सव में कौशेय वस्त्र पहनकर राजा को हीज देने का सम्मान पाती है । कोशल देश के नियमानुसार मधूलिका का खेत कृषि उत्सव केलिए चुन लिया गया ।

मधूलिका में आत्म - गौरव कूट - कूटकर भरी हुई है । उत्सव समाप्त होते ही महाराज ने कुछ स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रुप मे दिया । लेकिन मधूलिका उन स्वर्ण मुद्राओं को स्वीकार करना नहीं चाहा । इसलिए राजा से इस प्रकार कहा - देव यह मेरे पितृपितामहों की भूमि हैं । वे बैचना अपराध है ।

कृषि उत्सव में मधूलिका की सुन्दरता को देखकर मगध का राज कुमार अरुण मुग्ध होता हैं । एक दिन मधूलिका मधूक वृक्ष के नीचे बैठकर सो रही थी । अरुण वहाँ पहुँचकर प्रेम की याचना करता हैं । लेकिन मधूलिका किसी राज कुमारी से प्रेम करने की सलाह देकर उसके प्रेम को ठुकरा देती है ।

मधूलिका राजा का पुरस्कार स्वीकार नहीं करके दुर्भर दरिद्रता का अनुभव करने लगी । वह दूसरे खेतों में जाकर काम करती थी । मधूक वृक्ष के नीचे छोटी पर्ण कुटीर में रहने लगी । आस - पास के कृषक उसका आदर करते हैं । वह एक आदर्श बालिका थी ।

आज मधूलिका उसबीते हुए क्षण को लौटा लेने केलिए विफल थी । वह इस प्रकार सोचने लगी - मैंने एक दिन मगध का राज कुमार अरुण के प्रेम प्रस्ताव को ठुकरा दिया । उसी समय मगध का राज कुमार अरुण आजीविका के खोज में मधूलिका के पास आता है । मधूलिका सहर्ष उसे स्वागत करती है ।

एक दिन अरुण और मधूलिका वट वृक्ष के नीचे वैठकर बाते कर रहे हैं । उसी समय अरुण अपने षडयन्त्र के बारे में मधूलिका से बताता है । मधूलिका उसके साथ देने का वादा करती है । दारुण भावना से उस कामन विकृत हो उठा ।

अरुण के षडयन्त्र के अनुसार कोशल नरेश के पास जाकर दूर्ग के दक्षिणी नाले के समीप जंगली भूमि को प्राप्त कर लेती है । अरुण अपने सैनिकों की सहायता से नाले के समीप जंगल में पेडों को काटकर रास्ता बनाने लगता है । अपने सौ सैनिकों की सहायता से दुर्ग पर आक्रमण करने का षडयन्त्र रचता है । लेकिन उसी समय मधूलिका में अन्तर्दून्दू मचलने लगताहै । उसकी आँखों के सामने एक ओर पिता का आवाज गूँजने लगती है और दूसरी ओर अरुण का दिया हुआ वचन । वह श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय । वह पागल की तरह चिल्लाती है । सेनापति के पास जाकर उसे चेतावनी देती है और महाराज से सत्य बताती है ।

अरुण को मृत्यु - दण्ड मिलता है । महाराज मधूलिका से पुरस्कार माँगने केलिए कहता है । मधूलिका मुझे भी प्राण - दण्ड दीजिए कहकर अरुण के पास जाकर खडी होती हैं । इस तरह मधूलिका अपने राज्य की भलाई केलिए अपने आप को प्रियतम के प्राणों तक बलिदान देने केलिए तैयार होती है । एक और वह ममता, प्रेम और मानवता की प्रतिमूर्ति है । दूसरी ओर कर्तव्य परायणा आत्म समर्पण करनेवाली युवती है ।

2. **अरुण का चरित्र - चित्रणः**

अरुण 'पुरस्कार' कहानी के नायक है। वह मगध राज्य के राज कुमार है। कोशल राज्य के कृषि उत्सव देखने केलिए शतृ राजा होकर भी उसमें भाग लेता हैं। वह मधूलिका की सुन्दरता को देखकर मुग्ध हो जाता है। जब वह मधूक वृक्ष के नीचे बैठकर विश्राम ले रही है, उसी समय वहाँ जाकर अपने प्रेम के बारे में बताता है। मधूलिका उसे किसी राज कुमारी से प्रेम करने की सलाह देती हैं। इसलिए उसे निरास लौटना पडता है।

तीन साल के उपरान्त अरुण मगध राज्य के निर्वासित राज कुमार के रुप में मधूलिका को ढूँढते उसकी कुटिया के पास आ पहुँचता है। अपनी प्रेयसी के दुःख से दूर करने का प्रयास करता है। और अपने षडयन्त्र के बारे में बताता है। अरुण कोशल दुर्ग पर आक्रमण करके मधूलिका को वहाँ की राजरानी बनाना चाहता है। मधूलिका उसके साथ देने का वादा करती है। लेकिन मधूलिका के मन में अन्तर्दून्दू मचलने के कारण वह सेनापतिं और राजा से सत्य कहती है। अरुण को मृत्युदण्ड मिलता है। मधूलिका भी राजा से मृत्युदण्ड पुरस्कार के रुप में माँगती है। इस तरह अरुण एक ओर नायक और दूसरी ओर खलनायक के रुप में चित्रण किया गया है। अरुण में सच्चा प्रेम, अपने देश के प्रति प्रेम, सत्रृ देश पर आक्रमण करके उसे हस्तगत करने का कौशल भी है।

2.7 उद्धेश्यः

जयशंकर प्रसाद जी की कहानियों में आदर्शवादी भावना के साथ जीवन की विभिन्न समस्याओं का वर्णन मिलता है। मानव को व्यक्ति - निष्ठ नहीं राष्ट्र - निष्ठ बनना चाहिए। स्वार्थ से उपर उठकर देश केलिए अपने प्राणों की बलि देना मानव का कर्तव्य होना चाहिए। पुर्सकार कहानी इसी उद्धेश्य से लिखीगयी ऐतिहासिक कहानी हैं। संस्कृत शब्दों से भरी हुई प्रौढऔर प्रांजल भाषा का प्रयोग किया गया है।

मधूलिका वीर सिंह मित्र की एक मात्र कन्या है। राज के निश्चय के अनुसार कोशल राज्य कृषि उत्सव केलिए मधूलिका अपना खेत राज को समर्पित करती है। सिके बदले में राजा से कुछ नहीं लेती। उसी समय मगध का राज कुमार अरुण मधूलिका को देखकर मुग्ध हो जाता है। एक दिन मधूलिका मधूप वृक्ष के नीचे विश्राम लेते समय उसके पास जाकर प्रेम की याचना करता है। परन्तु मधूलिका उसके प्रेम को ठुकरा देती है। मधूलिका वन प्रदेश में एकाकी जीवन विताती रहती है। वह दूसरों के खेतों में जाकर काम करती रहती हैं। जो रुखी - सूखी मिलती है उससे तृप्त हो जाती है। इसतरह तीन साल वीत गये हैं।

अरुण विद्रोही राज कुमार के रुप में कोसल राज्य में आकर मधूलिका से मिलता है। वह अपने षडयन्त्र के बारे में मधूलिका से बताता है। मधूलिका इस षडयन्त्र में अरुण के साथ देन का वादा करती है। इसके अनुसार मधूलिका राजा के पास जाकर दक्षिणी नाले के पास की उर्वर भूमि माँगती है। राजा सहर्ष उसे दे देता है। वहाँ से अरुण कोशल राज्य पर आक्रमण करना चाहता है। अरुण अपने सैनिकों की सहायता से नाले के समीप जंगल में पेडों को काटकर वहाँ रास्ता बनाने लगता है।

मधूलिका में अन्तर्दून्दू मचलने लगाता है। पिताजी की आवाज उसके कानों में गूँज उठने लगती है। वह सोचने लगी है - ''श्रावस्ती का दुग एक विदेशी के हायों में यों चला जाय'' क्थों वह पागली की तरह चिल्लाती हैं। कोशल के सेनापति से मिलकर अरुण के षडयन्त्र के बारे में बताती हैं। वह राजा को सत्य बताकर देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करती है। अरुण बन्दी बनाया जाता है

और उसे मृत्यु दण्ड मिलता है । राजा मधूलिका से पुरस्कार माँगने केलिए कहते हैं । मधूलिका मृत्यु - दण्ड पुरस्कार के रुप में माँगती हैं । वह प्रेम केलिए प्राणों की बलि देने केलिए तैयार होती है । वह एक ही साथ देश के प्रति और अपने प्रेम के प्रति कर्तव्य का पालन करती है । इस तरह कहानीकार जयशंकर प्रसाद जी ने पुरस्कार कहानी के माध्यम से देश की भलाई केलिए नायिका किस प्रकार आत्म समर्पण करती है । उसका सुन्दर वर्णन किया है ।

गौणपात्रः

किस भी कहानी में दो प्रकार के चरित्र होते हैं । प्रधान चरित्र और गौण चरित्र । गौण पात्र कथा को आगे बढने में सहायक सिद्ध होते हैं । पुरस्कार कहानी में दो गौण पात्र भी हैं । वे हैं - महाराजा और सेनापति ।

महाराजाः

वे कोशल देश के राजा है । लेकिन नाम का विवरण तो नहीं दिया । हर साल कोशल राज्य में कृषि उत्सव मनाया जाता है । कोशल समृद्धशाली और सुविशाल राज्य भी हैं । उस उत्सव में स्वयं महाराजा को कृषक बनना पडता है । हर रोज राजकाज में व्यस्त रहने वाला महाराज, राज - प्रासाद में रहने वाला राजा को आज आधारण किसान की तरह हल चलाना पडता है । आर्द्रा नक्षत्र में एक शुभ दिन महाराज हाथी पर बैठकर देव दुंदुभी के ग्रंभीर धोषणा के बीच अपने सैनिकों के साथ आया है । महाराज स्वर्ण रजित हल चलता हैं । मधूलिका बीजों का थाल लिए राजा के साथ रहकर उनका सहयोग देती है । राष्ट्रीय नियम के अनुसार उस साल मधूलिका का खेत चुन लिया गया । उत्सव के बाद महाराज पुरस्कार के रुप में तौ गुना मूल्य स्वर्ण मुद्राएँ मधूलिका को देना चाहता है । लेकिन मधूलिका उसे स्वीकार नहीं करती हैं ।

एक दिन मधूलिका राजा के पास जाकर दक्षिणी नाले की जंगली भूम माँगती है । राजा उसे सहर्ष मधूलिका को देता है । मधूलिका वीर सिंह मित्र की कन्या होने के कारण राजा उसे सहायता करने में तत्पर रहता है ।

मधूलिका पहले अरुण के षडयन्त्र में साथ देने का वादा करती है । लेकिन उसके मन में देश प्रेम की भावना जाग उठती है । इसके परिणाम स्वरुप वह राजा के पास जाकर सत्य बताती है । राजा देश - द्रोही अरुण को मृत्यु - दण्ड सुनाता है और मधूलिका को पुरस्कार माँगने केलिए कहता है । लेकिन मधूलिका मुझे भी मृत्यु - दण्ड दीजिए कहकर अरुण के पास जाकर खडी होती है । राजा मधूलिका की आत्म - समर्पण को देखकर गद् गद् हो जाता है । इस प्रकार महाराजा का पात्र तो छोटा है । तीन बार ही महाराज पाठकों के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है । लेकिन कहानी को आगे बढने प्रधान - पात्र की मदद की है ।

सेनापतिः

सेनापति का चरित्र भी बहुत छोटा है । उसके नाम के बारे में जिक्र नहीं किया । लेकिन वह वीर साहसी और सच्चे देश भक्त भी है । इसमें देश - प्रेम की भावना कूट कूट कर भरी हुई ।

मधूलिका पहले अरुण के षडयन्त्र में साथ देने की वादा करती है । लेकिन उसके मन में अन्तर्दून्दू मचलने के कारण वह भूले भटक पगली की तरह इधर - उधर देखने लगी । उसी समय सेनापति अपने सैनिकों के साथ उसी रास्ते से जा रहे हैं । मधूलिका को देखकर इस प्रकार पूछता

हैं - तुम कौन हो, कोशल सेनापतिं को उत्तर शीध्र दो'' । तब मधूलिका उसे चेतावनी देती है । दक्षिणी नाले की जंगली भूमि की ओर शत्रृ राजा राज्य पर हमला करने वाला है । तब सेनापति अस्सी सैनिकों को नाले की ओर जाने की आज्ञा दी और स्बयं बीस अश्वारोहियों के साथ दुर्ग की ओर बढ़े । महाराज के पास जाकर इस षडयन्त्र की सूचना देता है । सेनापति महाराज की आज्ञा से सैनिकों को एकत्र करने केलिए चला जाता है । अरुण और सौ सैनिकों के साथ बडी कौशलता से युद्ध करता है । अन्त में सेनापति अरुण को बन्दी बनाकर राजा के सामने लाता है । अरुण को मृत्यु - दण्ड मिलता है । इस प्रकार सेनापति अपनी वीरता का परिचय देते हुए राज्य पर आये हुए विपत्तिथों से कोशल राज्य को बचाता है । इस तरह सेनापतिं का पात्र छोटे हुए भी कहानी को आगे बढाने में सहायक सिद्ध होती है ।

इसतरह 'पुरस्कार' कहानी में हर एक पात्र का चरित्र - चित्रण सुन्दर ढग किया गया है । मधूलिका एक कृषक बालिका होकर भी अपने देश की हित केलिए प्राणों की बलि दे देती है । अरुण मगध राज कुमार होने के कारण समृद्ध कोसल राज्य को भी अपना बनाकर मधूलिका को राजरानी बनाना चाहा है । लेकिन इसमें वह विफलहूआ । महाराज कोशल राज्य के राजा होकर भी वीर सिंह मित्र की सहायता करने केलिए सदा तत्पर रहे । सेनापति अपने देश केलिए प्राणों की बलि तक देने केलिए तैयार हो गया । इस प्रकार पुरसकार कहानी के हर चरित्र अपने - अपने दायरे में महान हैं ।

2.8 याद करने की बातें:

1) ज्यशंकर प्रसाद जी मूलतः कवि होने परभी श्रेष्ठ कहानीकार थे ।

2) ऐतिहा सिक घटनाओं के आधार पर लिखी गयी प्रमुख कहानी हैं ।

3) प्रेम और कर्तव्य के बीच अन्तर्द्वन्दू ही इस कहानी की मुख्य विशेषता हैं ।

4) मानव को व्यक्ति - निष्ठ नही, राष्ट्र और समाज - निष्ठ होना चाहिए ।

5) 'पुरस्कार' एक उत्तकृष्ट प्रेम कहानी हैं ।

2.9 बोधगम्य प्रश्न:

1) जयसंकर प्रसाद के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर प्रकाश डालिए ।

2) 'पुरस्कार' कहानी की विशेषताएँ लिखिए ।

3) 'पुरस्कार' कहानी का उद्धेश्य क्या है ।

4) 'मधूलिका' अथवा 'अरुण' का चरित्र - चित्रण कीजिए ।

5) 'पुरस्कार' कहानी की समीक्षा किजिए ।

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें:

1) चर्चित कहानियाँ : संपादकः गुलाम मुहम्मद्ध खान ।

3. उसने कहा था

- चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

इकाई की रुपरेखाः

3.1 **उद्धेश्य**

3.2 **कहानीकार का परिचय**

3.3 **कहानी की प्रस्तावना**

3.4 **उसने कहा था - कहानी**

3.5 **कहानी कला के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा**

3.6 **चरित्र - चित्रण**

3.7 **कहानी का उद्धेश्य**

3.8 **शीर्षक की सार्थकता**

3.9 **देशकाल और वातावरण**

3.10 **बोध गम्य प्रश्न**

3.11 **कुछ उपयोगी पुस्तकें**

3.1 उद्धेश्यः

इस इकाई में श्री चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' से लिखित प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' का अध्ययन करेंगे । इस इकाई को पढने के उपरान्त हमें जानकारी समाचार मिलती है ।

1) श्री चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का परिचय और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे ।

2) युगीन परिवेश में मानवीय मूल्यों के महत्व को जान सकेंगे ।

3) मानव जीवन के आदर्श के बारे में विचार करेंगे ।

4) युद्ध की वास्तविक पृष्ठभूमि के बारे में विदित होंगे ।

5) इस कहानी में एक प्रेमी के निस्वार्थ, निष्कलंक प्रेम, आत्मत्याग, शौर्थ तथा बलिदान के बारे में पढ सकेंगे ।

6) कहानी का सारांश और उसके विशेषताओं पर विचार करेंगे ।

7) प्रमुख पात्रों का चरित्र - चित्रण, कहानी का उद्धेश्य तथा सीर्षक की उपयुक्तता के बारे में विवेचन करेंगे ।

3.2 कहानी कार का परिचयः

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' का जन्म काँगडा जिले के 'गुलेर' नामक ग्राम में हुआ था । उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया । उसने अजमेर के मेयो कॉलेज

में बारह साल तक संस्कृत पढा था । इस के उपरान्त वे बनारस के कॉलेज ऑफ ओरियण्टल लेर्निंग के प्राचार्य रहे ।

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' सुप्रसिद्ध पुरातत्वेता, भाषा तत्व विशारद और भारतीय साहित्य के प्रकाण्ड पंडित हैं । उसने सिर्फ तीन कहानियाँ लिखी हैं । 1) सुखमय जीवन, 2) बुद्ध का काँटा और 3) उसने कहा था । केवल तीन ही कहानियाँ लिखकर ही उसने हिन्दी साहित्य संसार में विशेष ख्याति प्राप्त की है । संसार की किसी भी भाषा में ऐसे कहा नी कार नहीं मिलते जिन्होंने केवल तीन कहानिया लिखकर विशेष नाम कमाया है । वे हिन्दी में यथार्थवादी कहानियों का आरंभ करनेवाले कहानीकारों में प्रमुख हैं ।

चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 'सुखमय जीवन' कहानी का प्रकाशन सन् 1911 में 'भारत मित्र' में हुआ । 'बुद्ध का काँटा' सन् 1911 और 1915 के बीच लिखी गयी ।

''उसने कहा था सरस्वती मासिक' पत्रिका में सन् 1915 में प्रकाशित हुई । वे भावमूलक यथार्थवादी वातावरण से संबंधित कहानियाँ हैं । वे प्रेम प्रधान कहानियाँ हैं । उनमें प्रेम की अविरल धारा, यथार्थवादी वातावरण के बीच हमेशा निरन्तर प्रवाहित रहती है । उनकी कौतुहल पूर्ण घटनाओं से भी ज्यादा उनके पात्र पाठकों के मन को अपनी तरफ आकृष्ट करते हैं तथा कोई भाव विशेष जगाते हैं । परस्पर विरोधी परिस्थितियों से कहानियों का विकास होता है । पात्र यथार्थ वादी हैं । चरित्र - चित्रण सजीव, नाटकीय तथा मनो वैज्ञानिक है । कथोपकथन कथावस्तु को आगे ले जाती हैं । उद्धेश्य संयमित प्रेम की अभिव्यंजना हैं । आरंभ आकर्षक तथा वर्णनात्मक हैं । अन्त प्रभावपूर्ण, मर्मस्पर्शो तथा मनोवैज्ञानिक है । शीर्षक सार्थक एवं आकर्षक भी हैं । अन्य पुरुष प्रधान, संवादात्मक और व्यंग्यात्मक शैलियों का प्रयुक्त किया गया है । भाषा सरल, सहज तथा स्पष्ट है । वह तत्सम प्रधान है । उसमें व्यवहारिक एवं प्रसंगानुकूल शब्दों, उर्दू, पंजाबी तथा अग्रजी के शब्दों, मुहावरों आदि का प्रयोग किया गयाहै । काव्यात्मकता का प्रभाव परिलक्षित होती है ।

3.3 कहानी की प्रस्तावना:

चन्द्रधर शार्मा 'गुलेरी' की 'उसने कहा था' मशहूर कहानी का संकलन इस संग्रह में संग्रहीत है । इसमें युद्ध का वास्तविक पृष्ठभूमि के साथ यथार्थता पर उभरती है । यह प्रसिद्द चरित्र प्रधान कहानी है । इस कहानी में एक प्रेमी के निः स्वार्थ प्रेम, आत्म त्याग , शौर्य तथा बलिदान का चित्रण सुन्दर ढंग से किया गया हैं । जिसमें पर्याप्त कलात्मक सौष्टव परिलक्षित होता है ।

'उसने कहा था' नामक कहानी 'प्लैश बैक शैली' में आगे बढती है । इस कहानी का नायक लहनासिंह है । वह युद्ध क्षेत्र में घायल होता है । उसे बीस साल की पुरानी घटनाओं का स्मरण आने लगता है । उस समय उसका उम्र बारह साल का था । वह मामा के घर अमृतसर गया था । `एक दिन अचानक उसकी मुलाकत एक लडकी से हुई थी । उस लडकी का उम्र आठ साल का थु दोनों की मुलाकत कई बार हुई थी । लहना सिंह के मन में उस लडकी के प्रति प्रेम उत्पन्न होगया था । एक दिन उस लडकी ने बताता था कि उसकी सगाई होगयी । इससे उसे बडा दुःख हुआ । वह लडकी फिर नहीं दिकई पडी । फिर भी उसके मन में उसके प्रति प्रेम बना हुआ ।

एक बार लहना सिंह सूबेदार हजारा सिंह से मिलने गया था । सूबेदारनी ने उस समय कहा था कि वह उस के पति हजारासिंह तथा पुत्र बोधा सिंह की रक्षा करता रहे । उसने लहनासिंह को बताया कि वह वही लडकी है जो पच्चीस वर्ष पहले अमृतसर की गलियों में उससे मिलती थी। युद्ध क्षेत्र में

लहनासिंह ने बीमार बोधासिंह को अपनी जरसी दी और स्वयं उसके पहरे का कार्य करने लगा। उसने नकली लपटन साहब की सूचना भेजकर सूबेदार हजारा सिंह को शत्रुओं के हाथा में मरने से बचाया, वह स्वयं जर्मन शत्रु को हायों में घायल बन गया। उसने हजारा सिंह और बोधासिंह दोनों को गाडी में बिठाकर सुरक्षित स्थान को चले जाने केलिए सुबेदारनी से शपयली। कहानी का अन्त् उसकी मृत्यु से होता है। इस प्रकार वह कर्तव्य निबाहने में अपने प्राणों का परवाह नहीं करता। कर्तव्य - पालन में उसके बचपन के प्रेम से प्रेरणा मिलती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने ठीक ही कहा है ''गुलेरीजी ने भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यन्त कौशल से किया है। इस कहानी में पात्र नहीं बोलते, बल्कि घटनायें''।

3.4 उसने कहाथा - कहानीः

बडे - बडे शहरों के इक्के - गा डी वालों के कोडों से जिनकी पीठ छिलगई है और कान पक गये हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बूकार्ट वालों की बोली का मरहम ल्गाोंग जब बडें बडें शहरों की चौड़ी सडकों पर घोडे की पीठ को चाबुक से धुनते हुए, इक्केवाले कभी घोडे की नानी से अपना निकट सम्बन्ध स्थिर करते हैं कभी घोडे की नानी से अपना निकट सम्बन्घ स्थिर करते हैं कभी राह चलते पैदलों की आँखें को न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अगुलियों के पौरों को चीखकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार - भर की ग्लानी निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीधे चले जाते हैं तब अमृतसर में उनकी बिरादरीवाले तंग चक्करदार गलियों में हर एक लडढी वाले केलिए ठहरकर सब का समृद्र उमडा कर 'बचो खालस जी,' 'ठहरना भाई जी', 'आने दो लालजी' 'हचे बाछा बादशाह। कहते हुए सफेद फेंटों, खुच्चरों और बतखों, गन्ने और खोमचे और भारोंवालों के जंगल में से राह देखते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और साहिवा बिना सुने किसी को हटना पडे। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मारकरती हुई। यदि कोई बुढिया बार - बार चेतावनी देने पर भी लीक से नहीं हटती तो उनकी बचना वली के ये नमूने हैं - हट जा जीणे जोगिये, हट जा करमांवलिये, हट जा पुंत्ता प्यारिये बच जा लम्बी वालिए। समष्टि में इनके अर्थ हैं कि तू जीने योग्य है, तू भाग्योंवाली है, पुत्रों को प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहिये के नीचे आना चाहती हैं। बच जा।

ऐसे बम्बूकार्ट वालों के बीच में होकर एक लडका और एक लडकी चौक की एक दूकान पर आ मिले उसके बालों और उसके ढीले सुथने से जान पडता था कि दोनों सिक्ख हैं। वह अपने मामा के धोने केलिए दही लेने आया था और यह रसोई केलिए बदियाँ। दुकानदार एक परदेशी से गुंथ रहा था, जो सेर - भर गीले पापडों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

''तेरे घर कहाँ है ?''

''मगर में - और तेरे ?''

''मंझे में - यहाँ कहाँ रहती है ?''

''अतरसिंह की बैठक में वे मेरे मामा होते हैं ?''

मैं मामा के घर आया हूँ उनका घर गुरुबाजार में हैं। इतने में दुकानदार निटा और इनको सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ - साथ चले। कुछ दूर जाकर लड़के ने मुस्कराकर पूछा - ''तेरी कुडमाई मंगनी हो गई ?''

इस पर लडकी कुछ आँखें चढाकर 'धत्' कहकर दौ डगई और लडका मुँह देखता रह गया ।

दूसरे - तीसरे दिन सब्जीवाले के यहाँ, या दूघवाले के यहाँ अकस्मात् दोनों मिल जाते । महीना - भर यही हाल रहा । दो तीन बार लडके ने पूछा । ''तेरी कुडमाई हो गई ?'' और उत्तर में वही 'धत्' मिला । एक दिन जब फिर लडके ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लडकी लडके की सम्भावना के विरुद्ध बोली - ''हाँ, हो गई'' ।

''कब ?''

''कल, देखते नहीं यह रेशम से कढा हुआ सालू (ओढनी)''

लडकी भाग गई । लडके ने घर की राह ली । रास्ते में एक लडके को मोरी में धकेल दिया एक छावडीवाले की दिन - भर की कमाई खोई एक कुते पर पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उंडेल दिया । सामने नहाकर आई हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अन्धे की उपाधि पायी । तब घर पहूँचा ।

''राम - राम यह भी कोई लडाई है । दिन - रात खन्दकों में बैठे हड्डियाँ अकड गई । लुधियाना से दस गुना जाडा में और बरफ, ऊपर से पिंडलियों तक कीचड में धंसे हुए हैं । गनीम कहीं दिखता नहीं - घंटे दो घंटे में कान के परदे फाडनेवाले धमाके के साथ सारी खन्दक हिल जाती है और सौ - सौ गज धरती उछल पडती है । हर गोबी गोले सेबचे तो कोई लडे । नगर कोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पच्चीस जलजले होते हैं । जो कहीं खन्दक से बाहर साफा या कहनी निकलगई, तो चटाक से गोली लगती है । न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए है या घास की पत्तियों में छिपे रहते है ।''

''लहना सिंह और तीन दिन हैं । चार तो खन्दक में विता ही दिए, परसों रिलीफ आजाएगी, और फिर सात दिन की छुट्टी । अपने हाथों ढटका (बकश मारना) करेंगे और पेट - भर खाकर सो रहेंगे । उसी फिरंगी (फेंच) मेम के बाग में मखमल की - सी हरी घास है । फल और दूध की वर्षा कर देती है । लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती । कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आए हो ।''

''चार दिन तक पलक नहीँ झँपी । बिना फेरे घोडा बिघडता है और बिना लडे सिपाही । मुझे तो संगीत चढ़ाकर मार्च का हुक्मं मिल जाए । फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटू तो मुझे दरबार साहब की दहलीज पर मत्था नसीब न हो । पाजी कहीं के कलों के घोडे - संगीत देखते ही मुँह फाड देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं । यों अंधेरे में तीस तीस मन का गोला फेंकते हैं । उसदिन धावा किया था - चार मील तक एक जर्मन नहीं छोडा था । पीछे जनरल साहब ने हट आने का कमान दिया, नहीं तो .....''

''नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते क्यों ?''

सूबेदार हजारा सिंह ने मुस्कराकर कहा

''लडाई के मामले जमादार था नायक के चलाए नहीं चलते । बडे - बडे अफसर दूर की सोचते हैं । तीन सौ मील का सामना है । एक तरफ बढ गए तो क्या होगा ?''

''सूबेदारजी, सच है , ''लहना सिंह बोला'' - पर करें क्या ? हड्डियों - हड्डियों में तो जाडा धंस गया है - सूर्य निकलता नहीं और खाई में दोनों तरफ में चम्बे की घावलियों के - सोते झर रहे हैं । एक धावा हो जाए, तो गरमी आजाए ।''

''उदमी उठ सिगडी में कोयले डाला वजीरा, तुम चार जने बाल्टियाँ लेकर खाई का पानी बाहर फेंको । महासिंह शाम होगई है , खाई के दखाजे का पहरा बदल दे ।'' यह कहते हुए सूबेदार सारी खन्दक चक्कर लगाने लगे । वजीरा सिंह पलटन का विदूब कथा । बाल्टी गंदा पानी भरकर खाई के बाहर फेंकता हुआ बोला - मैं पाया बनगया हूँ । करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण । इसपर सब खिला खिला पडे और उदासी के बादल उफ़ गए ।

''लहना सिंह ने दूसरी बाल्टी भरकर उसके हाथ में देकर कहा अपनी बाडी के खरबूजों में पानी दो । ऐसा स्वाद का पानी पंजाब भर में नहीं मिलेगा ।''

''हाँ देश क्या है, स्वर्ग है । मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस गुना जमीन यहाँ माँग लूँगा और फलों के बूटे लगाँऊगा ।''

''लाडी होरां (स्त्री को भी यहाँ बूला लोगे ? या वही दूध पिलाने वाली फिरंगी मेम .....''

''चुपरह । यहाँ वालों को शरम नहीं ।''

दो - पहर रात होगई अन्धेरा है । सन्नाटा छाया हुआ है । बोधासिंह रगली बिस्कुटों को तीन टीनों पर अपने दोनों कम्बल बिछाकर और लहनासिंह के दो कम्बल और वरानकोट औढकर सो रहा है । लहना सिंह पहरे पर खडा हुआ है । एक आँख खाई के मुँह पर हैं ऐर एक बोधासिंह के दुबले शरीर पर बोधासिंह कराह ।

''क्यों बोधा भाई क्या है ?''

''पानी पिला दे ।''

''लहनासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगाकर पूछा - कहो कैसे हो ?''

''अच्छा, मेरी जरसी पहन लो ।''

''और तुम ।''

''मेरे पास सिगडी है और मुझे लगती है , पसीना आ रहा है ।''

''ना मैं नहीं पहनता ; चार दिन से तुम मेरे लिए .....''

''हाँ याद आई । मेरे पास दूसरी जरसी है ' आज सबेरे ही आई है । विलायत से मेमें बुन - बुनकर भेज रही है । गुरु उनका भला करें ।'' यों कहकर लहनासिंह अपना कोट उतारकर जरसी उतारने लगा ।

''सच कहते हो ?''

''और नहीं झूठ'' । यों कहकर नाही करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी पहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता - भर पहनकर पहरे पर आखडा हुआ ।

''आधा घण्टा बीता इतने में खाई के मुँह से आवाज आई ''सूबेदार हजारासिंह ।''

''कौन लपटन साहब ? हुकुम, हुजूर ।'' कहकर सूबेदार तनकर फौजी सलाम करके सामने हुआ ।

''देखो इसी समय धावा करना होगा, मील भरकी दूरी - पर पूरब के कोने में एक जर्मन खाई है । उसमें पचास से अधिक जर्मन नहीं है । इन पेड़ों के नीचे - नीचे दो खेत काटकर रास्ता है । तीन - चार घूमान है । जहाँ मोड है वहा, पन्द्रह जवान खड़े कर आया हूँ । तुम यहाँ दस आदमी छोडकर सबको साथ ले उनसे जा मिले खन्दक छीनकर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले डटे रहो । हम यहाँ रहेगा ।

लपटन साहव यातो मारे गये हैं या कैद हो गये हैं । उनकी वरर्दी पहनकर कोई जर्मन आया है । सूबेदार ने उसका मुह नहीं देखा मैंने देखा है और बातें की हैं । सौहरा साफ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू । और मुझे पीने को सिगरेट दिया है ।

''तो अब ?''

''अब मारे गए । धोखा है । सुबेदार होरं कीचड में चक्कर काटते फिरेगे और यहाँ खाई पर धावा होगा । उधर उन पर खुले में धावा होगा । उठो, एक काम करो । पलटन के पैरों के निसान देखते - देखते दौड जाओ अभी बहुत दूर न गए होंगे । सूबेदार से कहो कि एक दम लौट आएं । खन्दक की बात झूठ है । चले जाओ खन्दक के पीछे से निकल जाओ । पत्र तक न खडके । देर मत करों ।''

पच्चीस वर्ष बीत गए । अब लहनासिंह न 77 राइफल्स में जमादार हो गया है । उस आठ वर्ष की कन्या काध्यान हीन रहा । न मालम वह कभी मिली थी, या नहीं सात दिन की छुट्टी लेकर जर्मन के मुकदमे की पैरवी करने वह अपने घर गया । वहाँ रेजिमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि फारेज लाम पर जाती है, फौरन चले जाओ । साथ ही सूबेदार हजारा सिंह की चिट्ठी मिलीकि मैं और बोधासिंह भी लामपर जाते हैं, लोटते हुए हमारे घर होते जाना, साथ ही चलेंगे । सूबेदार का गाँव रास्ते में पडता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था । लहनासिंह सूबेदार के यहाँ पहुँचा ।

जब चलने लगे तब सूबेदार बेडे में से निकलकर आया । बोला - ''लहना सूबेदारनी तुमको जानती है, बुलाती है । जा मिल जा '' लहना सिंह भीतर पहुँचा सूबेदारनी मुझे जानती है ? कब से रेजिमेंट कोर्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं दखाजे पर जाकर मत्था टेकना कहा असीस सुनी । लहना सिंह चुप ।

''मुझे पहचाना ?''

''नहीं ।''

''तेरी कुडमाई होगई - धत् - कल होगई - देखते नहीं रेशमी बुटों वाला सालू में भावों की ठहराहट से मूर्च्छ खुली । करवट बदली । पसली का धाव वह निकला वजीरा पानी पिला । उसने कहा था ।

स्वप्न चल रहा है । सूबेदारनी कह रही हैं - मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गए । सरकार ने बहादूरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है आज नमक - हलाली का मौका आया है । पर सरकार ने हमें तीमियों की एक धधरिया पलटन क्यों न बनादी जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती ? एक बेटा है । फौज में भरती हुए उसे एक ही बरस हुआ । उसके पीछे चार और हुए पर एक भी नहीं जिया । सूबेदारनी रोने लगी । अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग मुझे याद है, एक दिन तंगेवाले का घोडा दही वाले की दूकान के पास बिगड गया था । तुमने उसदिन मेरे प्राण बचाए थे । आप घोडे की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान

के तख्ते पर खडा कर दिया था - ऐसे ही इन दोनों को बचाना । यह मेरी भिक्षा हैं, तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ ।''

रोती - रोती सूबेदारनी औरवी में चली गई । लहना भी आँसू पोंछता हुआ बाहर आया ।

''वजीरासिंह पानी पिला'' - उसने कहा था ।

.....

लहनासिंह का सिर अपनी गोद में रखे वजीरासिंह बैठा है । जब माँगता है, तब पानी पिला देता है । आधे घंटे तक लहना चुप रहा, फिर वाला - ''कौन ? कीरतसिंह ?''

वजीराने कुछ समझाकर कहा - हाँ

''भइया मुझे और ऊँचा कर ले । अपने पट्ट पर मेरा सिर रख ले ।''

वजीरा ने वैसा ही किया ।

''हाँ अब ठीक है । पानी पिला दे । बस अब के हाड में यह आम खूब फलेगा । चाचा - भतीजों दोनों यहीं बैठकर आम खाना जितना बडा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है । जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने मैं ने इसे लगाया था ।''

वजीरासिंह के आँसू टप टप टपक रहे थे ।

कुछ दिन पीछ लोगों ने अखबार में पढा - फांस और बल्जियम - 68 वीं सूची - मैदान में घावों से मारा - न 77 सिक्ख राइफल्स जमादार लहनासिह ।

3.5 उसने कहाथा कहानी के तत्वों के आधार पर समीक्षाः

कथानकः

''उसने कहा था नामक कहानी का आरम्भ अमृतसर के बाजार में एक लडके और एक लडकी के मुलाकात से होता है । बारह साल का लहनासिंह और आठ वर्ष की लडकी दहीवाले के यहाँ सब्जिवाले के यहाँ, हर कहीं मिलते रहते हैं । लहना सिंह के मन में उस लडकी के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है । इस लडकी को छेडने केलिए वह हर दम पूछता रहता है कि तेरी कुडमाई हो गयी लडकी हर रोज 'धत्' कहकर भाग जाती है । परन्तु एक दिन कहती है, ''हाँ होगयी'', लडकी भाग जाती है और लहना सिंह के हृदय को ठेस पहुँचाती है ।

पच्चीस साल बीत जाते हैं । लहनासिंह ने 77 राफल्स में जमादार हो जाता है । अपनी कर्तव्य - निष्ठा के कारण वह सूबेदार हजारासिंह का स्नेहपात्र बनजाता है । लहनासिंह छुट्टी पर घर आता है तो द्वितीय विश्वयुद्ध चिढ जाता है । सरकार उसे वापस बुला लेती है । सूबेदार हजारासिंह से पत्र प्राप्त कर वह रास्ते में उसके घर जाता है । पच्चीस वर्ष के पहले तेरी कुडमाई गयीवाली लडकी अब सूबेदार की पत्नी बनकर रहती है । सूबेदारनी लहनासिंह कों पहचानती है और पति सूबेदार और पुत्र बोधासिंह को बचाने की वर माँगती है ।

युद्ध - श्रेत्र में बोधासिंह के बीमार होने पर लहनासिंह उसकी सेवा करता है और युद्ध में जर्मनों के षडयन्त्र से सूबेदार हजारा सिंह को बचाकर वह स्वयं घायल बन जाता है ।

घायल लहनासिंह की अन्तिम क्षणों में जीवन की सारी स्मृतियाँ साफ हो जाती है । जिन्दगी भर की घटनाएँ एक - एक करके सामने आती है । वजीरासिंह से वह अमृतसर की दुकानों पर मिलनेवाली लडकी बाद में सूबेदारनी होकर पति और बेटे की जान बचाने की वर माँगती है । छुट्टियों में जाने पर सूबेदारनी की बताने के लिए कहता है जो उसने कहा था लहनासिंह ने कर दिया ।

3.6 चरित्र - चित्रण पात्र - परिचय:

'उसने कहा था कहानी' चरित्र धान हैं । इसमें लहना सिंह प्रधान पात्र है । उसके बलिदान द्वारा उसके आदर्स प्रेम के समन्वय पात्र के रुप में लहनासिंह हमारे समक्ष आता है । बालक, युवक, वीर सैनिक, आदर्श प्रेमी के रुप में लहना सिंह का चरित्र - चित्रण आकर्षक तथा मर्मस्पर्शी भी हैं ।

देश की रक्षा में हमेशा तत्पर रहनेवाले वीर सौनिक, पिता और पुत्र के प्राणों की रक्षा करने वाली सूबेदारनी और अमृतसर के कई पात्र कहानी में दिखाई पडते हैं ।

क्योपकयन/संवादयोजना:

'उसने कहा था' कहानी कामुख्य पात्र लहनासिंह है । श्री चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने संकेतात्मक तथा क्थोपकथन की प्रणाली से लहनासिंह के चरित्र का स्वाभाविक वर्णन कि याहै । एक आदर्श प्रेमी, वीर सैनिक तथा प्रेम के नाम पर वह अपने प्राणों तक न्योछोवरकर देता है ।

लहनासिंह पहलीबार अमृतसर में बारह वर्ष के लडके के रुप में दिखाई पडता है । वहाँ वह आठ वर्ष की लडकी पर आकर्षित होता है । कालवति में उस लडकी को भूल जाता है और वह सेना में भर्ती हो कर जमादार बनता है ।

लहनासिंह सच्चावीर और योद्धा भी है । वह सजग होकर मोर्चे पर जर्मन जासूस को पहचानता है और शत्रुओं के आक्रमण का सामना करता है । वह स्वयं कहता है ''एक - एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है ।''

बचपन की प्रेमिका सूबेदारनी बनकर लहनासिंह से पति और बेटे को युद्ध - क्षेत्र में बचाने की वर माँगती है । उसी तरह वह सूबेदार हजारासिंह और उनके पत्र बोधासिंह को बचाकर बताता है कि जो उसने कहा था कर दिया ।

लहनासिंह बडा विनोद प्रिय है । बचपन में एक अपरिचित लडकी से मुस्कराकर कुडाई हो जानी की बात कहकर उसे छेडता है और विनोद करता है ।

जिन्दगी भर लहनासिंह आदर्शपूर्ण रहता है । युद्ध - क्षेत्र में वह अपने साथियों की सेवा करता है और अपने अधिकारियों की आज्ञा का पालन करता है । मरते वक्त भी वह अपने भाई को नहीं नहीं भूलता ।

3.7 कहानी का उद्धेश्य:

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी के प्रसिद्ध कहानियों में 'उसने कहा था महत्वपूर्ण हैं । कहानी के प्रमुख तत्वों में उद्देश्य भी एक होता है । उद्देश्य कें बिना कोई रचना होती ही नहीं है । हरेक रचना से सोद्धेश्य ही होती है । इस कहानी में कहानीकार ने लहनासिंह के आदर्श चरित्र को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

लहनासिंह के चरित्र की प्रमुख विशेषता यह है कि अपने वादे को निभाने में अपने प्राणों तक बलिदान देना । बचपन की एक साधारण घटना की याद दिलाकर सूबदारनी लहनासिंह से प्रार्थना करती है कि तुमने बचपन में अमृतसर की गलियों में गाडी के घोडे से मेरे प्राण बचाये । अब मेरे पति और बेटे बोधासिंह को यह तुमसे मेरी विनती है । लहनासिंह सूबेदारनी से विदा लेकर चला जाता है । सूबेदारनी से लहनासिंह का परिचय पच्चीस वर्ष पहले का है । वह केवल एक महीनें भर का है । वास्तव में वह भूल भी गया है । परन्तु उसने निश्चय कर लिया है कि सूबेदारनी ने जो कहा था। उसे निभाना मेरा कर्तव्य है । भयानक सर्दी में बीमार बोधासिंह को सर्दी से बचाने केलिए वह अपना कंबल और कोट भी देता है और कांपते हुए पहरा करता है । जर्मन के जाल में जब सूबेदार फँस जाता है तब वह सावधानी तथा साहस दिखाते हुए बोधासिंह और हजारासिंह दोनों को बचाता है । कई सिक्रव सैनिक भी इसमें बच गये । इस कर्तव्य परायण में लहना सिंह स्वयं घायल होता है और उसके प्राण भी त्याग करते हैं । वाद को पूरा करने केलिए लहनासिंह ने अपने प्राणों का बलिदान दिया । कर्तव्य पालन का महत्व और जरुरत तथा नैतिक कामों के निभाने की वैशिष्ट य को बताना ही कहानीकार का उद्धेश्य है । इस उद्धेश्य कथन में 'गुलेरी'जी को वही सफलता मिली है ।

3.8 शीर्षक की उपयुक्तताः

श्रई चन्द्र शर्मा गुलेरी' ीहन्दी ते सुप्रसिद्ध कहानीकार है । उन्होंने सिर्फ तीन ही कहानियाँ लिखीं किन्तु हिन्दी कहानी क्षेत्र में उनका नाम अमर हो गया है । शीर्षक कहानी के प्रमुख तत्वों में एक होता है । शीर्षक ही दरअसल में कहानी का आशय अपने आप स्पष्ट हो जाता है । उसने कहा था कहानी बहुत् सार्थक प्रतीत होती है । सूबेदारनी ने लहनासिंह से कहा - मेरे पति और पुत्र की रक्षा करना तुमने मुझे बचपन में बचाया । अब इन दोनों को भी बचाओ । उसने जो कहा था, उसके निभाने में लहनासिंह ने बडी सजगता दियी । उन दोनों को सदा वितितियों से बचाने में तत्पर रहा किसी से इसके बारे में उसने कुछ भी नहीं बताया पर मृत्यु के पहले ये बातें उसने बतायी और सूबेदार से कहाकि सूबदारनी को पत्र लिखकर बताइए कि उसने जो कहाथा मैं ने पूरा किया । इसका आशय सूबेदार जी भी पूरी तरह समझ नहीं सके परन्तु कहानी के सीर्षक से पाठक बहुत ही प्रभावित होते हैं । उन पर शीर्षक स्यायी प्रभाव दिखाता है । कहानीकार गुलेरी जी को शीर्षक को चुनने में बहुत सफलता मिली है ।

कथोपकयन / संवादयोजनाः

''उसने कहाथा'' नामक कहानी के कथोपकथन बिल्कुल नाटकीय ढंग से चलते हैं ।

जैसेः

'तेरा घर कहाँ है ?'

'मगरे में और तेरा ?'

'माँझे में यहाँ कहाँ रहती है ?'

'तेरी कुडमाई हो गयी ?'

'हाँ हो गयी ।'

'कब ?'

'कल, देखते नहीं यही रेशम से कढा हुआ सालू?'

संवाद जिस प्रकार पात्रोचित होकर पात्रों के चरित्र - चित्रण में मदद देते हैं और कहानी को आगे बढाने में सहायक सिद्ध होते हैं । सैनिकों के वार्तालाप से देश की रक्षा तथा देश भक्ति का विषय की पता चलता है ।

लहनासिंह स्वयं कहता है - ''हाँ देश क्या है, स्वर्ग है'' । इस वार्तालाप के द्वारा ही जर्मनी जासूस को लहनासिंह पहचानता है । कहानी ज्यादा संवादों से चलता है । फिरंगी मेम की क्या सैनिकों के वार्तालाप से पता चलता है । लहनासिंह और सूबेदारनी के बीच और लहनासिंह तथा वजीरासिंह के वीच कथोपकयन कहानी को अग्रसर करने में ले जाते हैं । कहानी के वातावरण का वर्णन संवादों के द्वारा होते हैं ।

3.9 देशकाल और वातावरण:

'उसने कहा था कहानी' में वातावरण का चित्रण सफलता के किया गया है । आरम्भ में अमृतसर की गलियों का चित्रण हुआ है । दूसरा स्थान है युद्ध - क्षेत्र । युद्ध में मोर्चों को बनाना, खाई में सैनिकों के जीवन, युद्ध की डोलियों के वर्णन आदि में वातावरण का चित्रण सफलता पूर्वक से मिलता है । कहनी में वर्णित युद्ध का वातावरण यथार्थ - सा लगता है ।

3.10 भाषा - शैली:

उसने कहा था कहानी ऐतिहासिक था । यह कहानी वर्णनात्मक सैली में लिखी गयी है । पात्रानुकूल भाषा का प्रयुक्कत हुआ है । कहानी के सारे पात्र पंजाबी है । अतः यत्रतत्र पंजाबी भाषा, मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग मिलता है । संवाद की भाषा पात्रों की मानसिक स्थिति को उजागर करती है । कहानीकार 'गुलरी' जी की शैली में पात्र जीते हैं । भाषा - शेली में गुलेरी जी स्वुयं आकर पात्रों के द्वारा कहलाते हैं - ''हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है ।'' चुपरहयहाँ वालों को लज्ञा नहीं । एक एक अकालियासिख सवालाख के बराबर होता है । तुम्हारे आगे में आँचल पसारती हूँ ।

उद्धेश्य:

'उसने कहा था' में एक भारतीय सैनिक के प्रेम के नाम पर किये गये बलिदान की कहानी है । अपनी बचपन की प्रेमिका को दिये हुए वचन के पालन में लहनासिंह आत्म - समर्पण करता है । कामना रहित और त्यागमय निस्वार्थ प्रेम का चित्रण करना कहानी का मुख्य उद्धेश्य है । सैनिक हमेशा कर्मरत होता है । यह बलिदान का प्रतीक है । बाल्य प्रेमिका को दिये हुए वचन के पालन में वह प्राणों का बलिदान भी देता है । यही कहानीकार का प्रमुख उद्धेश्य है ।

शीर्षक:

''उसने कहा था शीर्षक अत्यन्त सफल और सार्थक भी है । सिख बालिका आगे चलकर सूबेदारनी बनती है । जो उसने कहा था लहनासिंह निभाता है । सूबेदार हजारासिंह को बताता है, घर जाओ तो कह देना कि मुझ से जो उसने कहा था वह मैं ने कर दिया । इसी तरह वजीरासिंह को पूरी कहानी बताकर वह कहता है - उसने कहा था ।''

उपसंहार:

'उसने कहा था' एक उच्च कोटि की कहानी है । इस कहानी की गणना विश्व की श्रेष्ठतम कहानियों में की जास कती हैं ।

3.11 कुछ याद रखनेवाले बातेः

1) श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार है ।

2) केवल तीन कहानियाँ लिखकर भी वे उत्तम कहानीकार के रुप में मशहूर बन गये ।

3) उसने कहा था में युद्ध का यथार्थ वर्णन किया गया है ।

4) एक प्रेमी के निस्वार्थ प्रेम, आत्मत्याग, साहस तथा बलिदान का चित्रण सुन्दर ढंग से किया गया है ।

5) यह कहानी प्लैश - बैक शैली में आगे बढती है ।

6) यह एक घटना प्रधान कहानी है ।

7) उसने कहा था में पर्थाप्त कलात्मक सौष्टव दिखाई पडता है ।

8) लहनासिंह इस कहानी के मुख्य पात्र है ।

9) कर्तव्य को निभाने में लहनासिंह अपने प्राणों का बलिदान किया है ।

10) कर्तव्य - परायणता में उसके बचपन के प्रेम से प्रेरणा मिलती है ।

3.10 बोध प्रश्नः

1) 'उसने कहा था' कहानीकार का परिचय दीजिए ।

2) 'उसने कहा था' कहानी की कथावस्तु को संक्षेप में लिखिए ।

3) कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए ।

4) 'उसने कहा था' कहानी काउद्धेश्य क्या है ?

5) 'उसने कहा था' कहानी की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए ।

6) 'लहनासिंह' का चरित्र - चित्रण कीजिए ।

7) 'उसने कहा था' में चर्चित देश काल और वातावरण को समझाइए ।

8) 'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए ।

3.12 कुछ उपयोगी पुस्तकेंः

1) चर्चित कहानियाँ : संपादकः गुलाम मुहम्मद्ध खान - शवनम पुस्तक महल - कटक ।

2) हिन्दी कहानी और कहीकार - प्रे. वासुदेव

3) बहुत निबन्धकार - वचन देव कुमार

काल (TENSE)

परिभाषाः

''क्रिया के जिस रुपसे उसके होने या करने का समय पाया जाता है उसे काल कहते हैं !'' अर्थात् क्रिया के जिस रुप से वह प्रकट हो कि क्रिया का व्यापार क्ब हुआ, उसे 'काल' कहते हैं !

काल के तीन भेद हैं

1. भूत काल (Past Tense)
2. वर्तमान काल (Present Tense) और
3. भविष्यत् काल (Future Tense)

1. भूत कालः (Past Tense)

परिभाषाः

''क्रिया के जिस रुपसे बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते है।''

जैसेः

राम ने आम खाया ।

राम ने आम खाया है ।

राम ने आम खाया था ।

राम ने आम खाया होगा ।

राम आम खाता होगा ।

आम मिलता तो राम खाता ।

भूतकाल के भेदः

भूतकाल के सात भेद हैं

1. **साम्यान्य भूतकालः (Past Indefinite)**

परिभाषाः

यह बीते हुए समय का बोध कराता है । लेकिन यह पता नहीं चलता कि क्रिया कब समाप्त हुई ।

जैसेः

राम ने पत्र लिका ।

2. **आसन्न भूतकालः (Present Perfect)**

परिभाषाः

क्रिया का वह रुप, जिससे ज्ञात होता है कि क्रिया का व्यापार (काम) भूतकाल में प्रारंभ होकर कृछ समय पूर्व समाप्त हुआ है ।

जैसेः

गोपाल आया है ।

3. **पूर्ण भूतकालः (Fast Perfect)**

परिभाषाः

जिस क्रिया से बीते हुए समय में काम पूरा होना प्रकट होता है ।

जैसेः

मोहन भाषण दे चुका है ।

4. **अपूर्ण भूतकालः (Fast Imperfect):**

परिभाषाः

जिससे यह पता चलता है कि क्रिया का व्यापार भूतकाल में हुआ था । लेकिन उसका समाप्त होने का ज्ञान नहीं होता है ।

जैसेः

राजीव जा रहा था ।

सीता लिख रही थी ।

माधुरी गा रही थी ।

5. **संदिग्ध भूतकालः (Doubtful Past)**

परिभाषाः

''क्रिया के जिस रुप से भूतकाल का बोध हो, फिर कार्य के होने में सन्देह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं ।''

जैसेः

किरण आया होगा ।

गोपी सिनेमा देखा होगा ।

6. **हेतु हेतुमद भूतकालः (Conditional Past):**

परिभाषाः

जिस क्रिया से यह पता चले कि भूतकालीन क्रिया के हेतु (कारण) से दूसरी क्रिया पूरी होती है ।

जैसेः

वह पढ़ता तो परीक्षा में उर्तर्ण होता ।

1. **संभाव्य भूतकालः (Possible Past)**

परिभाषाः

क्रिया का वह रुप, जिससे भूतकाल में क्रिया के होने की संभावना समझी जाये ।

जैसेः

संभवतः राम पहुँच गया हो ।

शायद लक्ष्मन गया हो ।।

2. **वर्तमान कालः (Present Tense)**

परिभाषाः

क्रिया के जिस रुप से वर्तमान समय का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं ।

जैसेः

मोहन मैदान में खेलता है ।

वर्तमान काल के भेदः

वर्तमान काल के तीन मुख्य भेद हैं । वे हैं -

1. सामान्य वर्तमान काल (Present Indefinate Tense)
2. तात्कालिक / अपूर्ण वर्तमान काल (Present Continuous Tense)
3. संदिग्ध वर्तमान काल (Present Doubteful Tense)

1. **सामान्य वर्तमान कालः (Present Indefinite Tense):**

परिभाषाः

''क्रिया का वह रुप, जिससे सामान्य रुप से क्रिया का वर्तमान काल में होना पाया जाए, उसे सामान्य वर्तमान काल कहा जाता है ।''

जैसेः

वह घर आता है ।

मैं स्कूल जाता हूँ ।

2. **तत्कालिक / अपूर्ण वर्तमान कालः (Present Contionuous)**

परिभाषाः

''जो क्रिया अभी हो रही हो, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। इस काल में क्रिया के साथ रहा, रहे, रही वर्तमान कालिक सहायक क्रियाएँ जोड़ी जाती है ।

जैसेः

राहुल जा रहा है ।

वे खा रहे हैं ।

सीता पढ़ रही है ।

3. **संदिग्ध वर्तमान कालः (Present Doubteful Present Tense):**

परिभाषाः

''संदिग्ध वर्तमान काल में क्रिया के होने में संदेह प्रकट होता है, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं ।''

जैसेः

राधा रोटी पका रही होगी ।

आनन्द खेल रहा होगा ।

भविष्यत कालः (Future Tense):

परिभाषाः

''किया के जिस रुप से आनेवाले काल का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं'' ।

भविष्यत्काल के भेद

भविष्यत्काल के भेद

भविष्यत्काल के तीन भेद होते हैं । वे हैं -

1. **सामान्य भविष्यत् कालः (Indefinite Future Tense):**

परिभाषाः

''क्रिया का वह रुप जिससे सामान्य रीति से क्रिया के आगे होने की सूचना मिले, उसे सामान्य भविष्यत्काल कहते हैं''।

जैसेः

वह पाठ पढेगा ।

वे गेंद खेलेंगे ।

रवि कल मुंबर्ड जायेगा ।

2. **संभाव्य भविष्यत् कालः (Doubleful Future Tense):**

परिभाषाः

''भविष्यतकाल की जिस क्रिया में संभावना् या सन्देह पाया जाय, उसे संभाव्य भविष्यत्काल कहते है ।''

जैसेः

संभव है कल वर्षा हो जाए ।

शायद सैना नेहवाल आए ।

3. **हेतु हेतु मद् भविष्यत् कालः (Conditional Future Tense)**

परिभाषाः

''यह क्रिया का वह रुप है जिससे भविष्यत्काल में एक क्रिया दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर रहना पाया जाय, उसे हेतु हेतु मद भविष्यत्काल कहते हैं ।''

जैसेः

सिंधु अच्छी तरह खेली तो स्वर्ण पदक मिले ।

''ने'' प्रत्यय का प्रयोग एवं नियमः

1. भूतकालिक सकर्मक क्रियाओं में 'ने' प्रत्यय का प्रयोग होता है । भूतकालिक कृदन्त से बनै हुए कालों सामान्य, आसन्न,पूर्ण और संदिग्ध भूतकालों में 'ने' प्रत्यय का प्रयोग होता है ।

   जैसेः

   राम ने आम खाया । (सामान्य भूतकाल)

   राम ने आम खाया है । (आसन्न भूतकाल)

   राम ने आम खाया था । (पूर्ण भूतकाल)

   राम ने आम खाया होगा । (संदिग्ध भूतकाल)

2. कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय का प्रयोग होता है तो कर्म के अनुसार क्रिया के लिंग और वचन होते हैं ।

   जैसेः

   रमेश ने रस पिया ।

   लक्ष्मी ने दो साड़ियाँ खरीदी ।

3. कर्ता के साय 'ने' प्रत्यय कर्म के साथ 'को' प्रत्यय आये तो क्रिया हमेशा पुल्लिंग एक वचन में होती है ।

   जैसेः

   कृष्ण ने चार गायों को देखा ।

4. वाक्य में कर्म विभक्ति सहित हो तो क्रिया सदा पुल्लिंग एक वचन में रहती है ।

   जैसेः

   राम ने रावण को मारा ।

   लक्ष्मण ने राक्षसों को मारा ।

5. बोलना, भूलना, लाना आदि सकर्मक क्रियाओं के कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता है ।

जैसेः

राम गाड़ी लाया ।

मैं यह काम भूला ।

तुम उससे बोलो ।

6. लग, सक, चुक-इन सहायक क्रियाओं के प्रयोग में चाहे मूल क्रिया सकर्मक भी हो, कर्ता के साय 'ने' प्रत्यय का प्रयोग नहीं होता ।

जैसेः

1. राम खाने लगा ।
2. मैं गाने लगा ।
3. तुम उतीर्ण हो सका ।
4. कृष्ण पढ़ चुका ।
5. सीता लिख चुकी ।

वचन (NUMBER)

परिभाषाः

संज्ञा या अन्य विकारी शब्दों के जिस रुप से व्यक्ति था वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे 'वचन' कहते हैं ।'' संस्कृत, अरबी, यूनानी, लैटिन आदि भाषाओं में तीन वचन हैं ।

वचन के प्रकारः

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं ।

1. एक वचन, 2. बहु वचन

1 **एक वचनः**

परिभाषाः

''शब्द के जिस रुप से वस्तु या व्यक्ति के सख्या में एक होने का बोध हो, उसे 'एकवचन' कहते है''।

जैसेः

रवि, राधा, बच्चा, नदी आदि .....

2. **बहु वचनः**

परिभाषाः

''शब्द के जिस रुप से वस्तु या व्यक्ति के संख्या में एक से अधिक होने का बोध हो उसे बहु वचन कहते हैं ।''

जैसेः

बच्चे, नदियाँ, पुस्तके, आदि

बहु वचन बनाने के नियमः

1. 'आ' को 'एँ' बनान से - अकारान्त स्त्री लिंग संज्ञाओं के अन्त में आने वाले 'अ' को 'एँ' कर देते हैं ।

जैसेः

एक वचन	**बहु वचन**
आँख	आँखें
सड़क	सडकें
बहन	बहनें
पुस्तक	पुस्तकें
रात	रातें
किताब	किताबें

2. 'ई' को 'इयाँ' करने सेः ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं की अंतिम् 'ई' को 'इयाँ' कर दिया जाता है ।

जैसेः

एक वचन	**बहु वचन**
टोपी	टोपियाँ
लड़की	लड़कियाँ
मछली	मछलियाँ
रोटी	रोटियाँ
नदी	नदियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ

3. 'या' से अन्त होने वाली संज्ञाओं को बहु वचन बनाने के लिए अन्त में अनुनासिक (ँ) जोड़ दिया जाता है।

जैसेः

एक वचन	**बहु वचन**
गुड़िया	गुड़ियाँ
चुहिंया	चुहियाँ

चिड़िया	चिड़ियाँ
बुढ़िया	बुढ़िया

4. ऊकारान्त, आकारान्त, औकारान्त आदि शेष स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'एँ' जोडकर बहु वचन बन जाते हैं । अतिम् 'ऊ' को ह्रस्व कर दिया जाता है ।

जैसेः

एक वचन	**बहु वचन**
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
वस्तु	वस्तुएँ
कविता	कविताएँ
बहु	बहुएँ
गौ	गौएँ
धातु	धातुएँ

5. इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में 'याँ' जोड़कर एक वचन को बहु वचन बनाया जाता है ।

जैसेः

एक वचन	**बहु वचन**
जाति	जातियाँ
समिति	समितियाँ
पंक्ति	पक्तियाँ
तिथि	तिथियाँ
प्रति	प्रतियाँ
लिपि	लिपियाँ

6. पुल्लिंग संज्ञाओं में वचन परिवर्तन के नियमः

अकारान्त संज्ञाओं के अंतिम 'आ' के स्थान पर 'ए' कर दिया जाता है ।

जैसेः

एक वचन	**बहु वचन**
कपड़ा	कपड़े
बेटा	बेटे
पंखा	पंखे
घड़ा	घडे

रुपया	रुपये
बच्चा	बच्चे

अपवादः

कुछ शब्दों में यह नियम लागू नहीं होता ।

जैसेः

संबंध सूचक शब्दों मेंः

मामा, पापा, चाचा, काका आदि ।

पद सूचक शब्दों

दरोगा, कमिश्नर आदि ।

कुछ अन्य आकारान्त पुल्लिंग शब्दों मेंः

राजा, योद्धा, कतो, पिता, युवा, चन्द्रमा आदि ।

7. कुछ अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त पुल्लिंग शब्दों के दोनों वचनों के रुप में समान होते हैं ।

जैसेः

एक वचन	**बहु वचन**
घर	घर
डाकू	डाकू
भाई	भाई
योगी	योगी
मुनि	मुनि
कवि	कवि

वाच्य (VOICE)

परिभाषाः

''क्रिया का वह रुप है जिससे यह ज्ञात हो कि क्रिया द्वारा संपन्न कार्य का प्रधान विषय - कर्ता हो, या कर्म हो या भाव हो, उसे 'वाच्य' कहते हैं ।''

वाच्य के भेदः

वाच्य के तीन भेद होते हैं । वे हैं -

1. कर्तृ वाच्य (Active Voice)

2. कर्म वाच्य (Possive Voice)

3. भाव वाच्य (Impersonal Voice)

1. **कर्तृ वाच्यः (Active Voice)**

परिभाषाः

''जिसमें क्रिया का लिंग वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार हो उसे 'कर्तृवाच्य' कहते हैं। कर्ता की पृधानता के कारण कर्तृ प्रधान क्रिया'' भी कहते हैं ।

जैसेः

रमण गाना सुनता है ।

2. **कर्मवाच्यः (Passive Voice):**

परिभाषाः

''जिसमें किया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होता है उसे 'कर्मवाच्य' कहते हैं । कर्म की प्रधानता के कारण कर्म प्रधान क्रिया'' भीकहा जाता है ।

जैसेः

कृष्ण से कंस मारा गया ।

रुकमिणी से मिठाई खायी गायी ।

3. **भाववाच्यः (Impersonal Voice):**

परिभाषाः

जिसमें किया के भाव की प्रधानता हो, उसी 'भाववाच्य' कहते हैं ।

जैसेः

धूपमें चला नहीं जाता ।

मुझसे जाया नहीं जाता ।

भाववाच्य का प्रयोग प्रायः निषेधात्मक (Negative) वाक्य में अशक्ता - सूचक होता है ।

क्रियाओं को कर्तृ वाच्य से कर्म वाच्य तथा भाववाच्य में बदलने केलिए नियम होते हैं ।

1. कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल के रुप में लाकर उसके आगे 'जाना' क्रिया का लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार रुप लगाया जाता है ।

2. कर्ता के आगे 'से' लगाया जाता है ।

विलोम शब्द (Opposite Words)

परिभाषाः

''जोशब्द एक दूसरे से उल्टा या विपरीत अर्थ देते हैं उन्हें व्यतिरेक या विपरीतार्थक या विलोम शब्द कहते हैं ।'' अभिव्यक्ति को पूर्ण से पूणेतर बनाने में इन शब्दों का बड़ा योगदान है ।

विपरीतार्थक शब्दों का प्रयोग प्रायः साथ - साथ भी होता है ।

जैसेः

सुख -दुःख दिन - रात आदि ।

कुछ विलोम शब्द उपसर्गों के योग से एवं कुछ उपसर्गों के परिवर्तन से बनते हैं ।

विलोम शब्द बनावट की दृष्टि से निम्न लिखित वर्गों में होते हैं ।

(क) **मूलतः विलोम शब्द**

शब्द		विलोम	शब्द		विलोम
अधिक	x	कम	जवानी	x	बुढ़ापा
अन्धकार	x	प्रकाश	हार	x	जीत
अल्प	x	अधिक	जीवन	x	मरण
अपना	x	पराया	जन्म	x	मृत्यु
अस्त	x	उदय	दिन	x	रात
अपव्ययी	x	मितव्ययी	दुर्जन/दुष्ट	x	सज्जन
आकाश	x	पाताल	निद्रा	x	जागरण
आदान	x	प्रदान	प्राचीन	x	नवीन
आय	x	व्यय	निन्दा	x	स्तुति
आदि	x	अन्त	पुरातन	x	नूतन
उतार	x	चढ़ाव	नया	x	पुराना
उत्तम	x	अधम	निर्बल	x	सबल
उदार	x	कृपाण	ध्वंस	x	निर्माण
उत्थान	x	पतन	पंड़ित	x	मूर्ख
ऊँच	x	नीच	पाप	x	पुण्य
कठिन	x	सरल	प्राकृतिक	x	कृत्रिम
कनिष्ठ	x	ज्येष्ठ	स्वकीया	x	परकीया
कोमल	x	कठोर	प्रत्यक्ष	x	परोक्ष

कृतज्ञ	x	कृतध्न	मूर्ख	x	ज्ञानी
कुटिल	x	सरल	मीठा	x	कडुवा
क्रय	x	विक्रय	योगी	x	भोगी
कमजोर	x	doubt	लंबा	x	नाटा
खंडन	x	मंडन	विष	x	अमृत
खरा	x	खोटा	विशेष	x	सामान्य
खेद	x	प्रसन्नता, मोद	शाश्वत	x	नश्वर
गर्मी	x	सर्दी	स्यूल	x	स्यूल
गरीब	x	अमीर	स्वर्ग	x	नरक
गुरु	x	शिष्य, लघु	सजीव	x	निर्जीव
गुण	x	दोष	सफल	x	विफल
गुप्त	x	प्रकट	संयोग	x	वियोग
ग्राहय	x	त्याज्य	हर्ष	x	विषाद
गौण	x	मुख्य	हानि	x	लाभ
घृणा	x	प्रेम	सच	x	झूठ
जड़	x	चेतन			

(ख) उपसर्ग के योग से बनाने वाले विलोम शब्दः

शब्द		**विलोम**	**शब्द**		**विलोम**
अर्थ	x	अनर्थ	जय	x	पराजय
अपराध	x	निरपराध	धनी	x	निर्धन
आचार	x	अनाचार	नाम	x	बदनाम
आशा	x	निराशा	न्याय	x	अन्याय
आदि	x	अनादि	भय	x	निर्भय
आदर	x	अनादर	भाव	x	अभाव
आर्य	x	अनार्य	मंगल	x	अमंगल
आग्रह	x	दुराग्रह	मान	x	अपमान
आमिष	x	निरामिष	मुनासिब	x	गैर मुनासिब
इच्छा	x	अनिच्छा	राग	x	विराग
इज्जत	x	बेइज्जत	लायक	x	नालायक

इष्ठ	x	अनिष्ठ	लोक	x	परलोक
उचित	x	अनुचित	लौकिक	x	अलौकिक
उत्तीर्ण	x	अनुत्तीर्ण	वाद	x	प्रतिवाद
उपयोग	x	दुरुपयोग	शांति	x	अशांति
एक	x	अनेक	शुभ	x	अशुभ
कानूनी	x	गैर कानूनी	शकुन	x	अपशकुन
किर्ति	x	अपकीर्ति	सत्य	x	असत्य
कसूर	x	वेकसूर	सहारा	x	वेसहारा
गुण	x	अवगुण	साकार	x	निराकार
घात	x	प्रतिघात	स्वस्थ	x	अस्वस्थ
चर	x	अचर	स्वीकार	x	अस्वीकार
			हिंसा	x	अहिंसा

(ग) उपसर्ग के परिवर्तन से बनने वाले विलोम शब्दः

शब्द		**विलोम**	**शब्द**		**विलोम**
अनुकूल	x	प्रतिकूल	उत्कर्ष	x	अपकर्ष
अनुरक्त	x	विरक्त	उपचार	x	अपचार
अनुराग	x	विराग	संयोग	x	वियोग
असीम	x	सीमित	संश्लेषण	x	विश्लेषण
आकर्षण	x	विकर्षण	सगुण	x	निर्गण
आदान	x	प्रदान	सचेत	x	अचेत
असेष	x	ससेष	सज्जन	x	दुर्जन
इहलोक	x	परलोक	सम्मान	x	अपमान
उपकार	x	अपकार	सरस	x	नीरस
उन्नति	x	अवननि	संपदा	x	विपदा
साक्षर	x	निरक्षर	सुमति	x	कुमति
सुगन्ध	x	दुर्गन्ध	स्वतंत्रता	x	परतंत्रता
सुपथ	x	कुपथ	स्वदेश	x	विदेश, परदेश
सुपुत्र	x	कुपुत्र	स्वार्थ	x	निस्वार्थ
सुबुद्धि	x	कुबुद्धि	स्वाधीन	x	पराधीन

कार्यालयीन हिन्दी शब्दावली (Official Terminology)

Absence	-	अनुपस्थिति / गैर हाजिरी
Acceptance	-	स्वीकृत
Accommodation	-	आवास
Acknowledgement	-	पावती
Ad-hoc	-	तदर्थ
Administration	-	प्रशासन
Affidavit	-	शपय पत्र
Agreement	-	करार
Allotment	-	आबंटन
Allowance	-	भता
Annexure	-	परिशिष्ट
Authorised	-	प्राधिकृत
Bilateral	-	दिूपक्षीय
Bipertite	-	उभयलक्षी
Bonafide	-	वास्तविक / यथार्थ
Casual Leave	-	आकस्मिक छुट्टी
Charge Sheet	-	ओरोप पत्र
Circular	-	परिपत्र
Clarification	-	स्पष्टीकरण
Confidential	-	गोपनीय
Consolidated	-	समेकित
Counter Signature	-	प्रति हस्ताक्षर
Dearness Allowance	-	महंगाई भता
Declaration Form	-	घोषणा पत्र
Deduction	-	कटौती
Demi Official	-	अर्ध सरकारी
Deputation	-	प्रति नियुक्ति

Documentary Proof	-	लिखित प्रमाण
Due Date	-	नियत तिथि / दिनांक
Duly	-	विधिवत्
Earned Leave	-	अर्जित छुट्टी
Earnest Money	-	बयाना
Eligibility	-	पात्रता
Enclosure	-	अनुलग्नक
Establishment	-	स्थापना
Execution Committee	-	कार्यकारिणी समिति
Ex-Officio	-	पदेन

इकाई: 1. **गद्य - संदेश (Prose) Text Book:**

1. साहित्य की महता - महावीर प्रसाद द्विवेदी
2. सच्ची वीरता - सरदार पूर्णसिंह
3. मित्रता - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

इकाई: 2. **कथा - लोक: (Short Stories) Non-Detail:**

1. मुक्तिधन - मुंशी प्रेमचन्द
2. उसनेकहाथा - चन्द्रधर शार्मा 'गुलेरी'
3. पुरस्कार - जयशंकर, प्रसाद

इकाई: 3. **अनुवाद Translation:**

1. कार्यालयीन शब्दावली : (Official Terminology)
2. प्रशासनिक शब्दावली : (Administrative Terminology)

इकाई: 4. **व्याकरण**

1. लिंग 2. वचन 3. काल 4. वाच्य 5. कारक
6. विलोमशब्द 7. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग

इकाई: 5. **पत्र - लेखन (Letter Writing) वैयक्तिक पत्र (Personal Letters):**

1. हिन्दी सीख ने की आवश्यकता बताते हुए छोटी बहन के नाम पर पत्र
2. विहार यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र के नाम पत्र ।
3. शुल्क भरने केलिए पैसे भेजने अपने पिता के नाम पत्र ।

3. **शुल्क भरने केलिए पेसे भेजने अपने पिता के नामः**

गुंटूर

दिनांकः 09-08-2021

पूज्य पिताजी

मैं यहाँ कुशल हूँ। आप लोगों का कुशल समाचार सुनना चाहता हूँ। मैं खूब पढ़ता हूँ। परीक्षओं में मुझे साठ प्रतिशत सेभी अधिक अंक मिले। मैंने सब पुस्तकें और कापियाँ खरीदी। कलम और आवश्यक चीजें भी खरीदी। कालेजमें सूचना दीगयी की 15 - 09 - 2021 तक परीक्ष शुल्क अदा करना होगा। मुझे 1,000/- शुल्क के रुप में अदा करना चारिए अब मेरे पास पैसा नहीं हैं। इसलिए आप परीक्ष शुल्क केलिए 1,000/- और जब खर्च केलिए 500 /- कुल मिलाकर 1500/- भेजने का कष्ट करे। आप समय पर पैसा नहीं भेजते तो 500/- का विलम्ब शुल्क भीचुकाना पड़ेगा। अतः पैसा जल्दी भेजिए। माताजी को मेरे प्रणाम कहिएगां।

आपका प्रियपुत्र

के. श्रीकृष्ण

पताः

के. सुधाकर

9 - 1 - 27, काकानिपालेम,

अद्दंकि - 523201

Fair Copy	-	स्वच्छ प्रति
Fake Document	-	जाली दस्तावेज
Financial Concurrence	-	वितीय सहम ति
Fitness Certificate	-	स्वस्थता प्रमाण पत्र
Forward	-	अग्रेषण
Further Action	-	आगे की कार्यवायी
Grant	-	अनुदान
Grievance Committee	-	परिवाद समिति
Head Quarters	-	मुख्यालय
Here With	-	एतदसह
Honorary	-	अवैतनिक
Honorarium	-	मानदेय
Indentification Card	-	पहचान पत्र
Implementation	-	कार्यान्वयन
Joining Report	-	कार्थ भार ग्रहण प्रतिवेदन
Jurisdiction	-	अधिकार क्षेत्र
Liaison	-	संपर्क
Livelihood	-	आवास जीविका
Lumpsum	-	आवास एकमुश्त
Manhour	-	श्रम घंटा
Memorundum	-	ज्ञापन
Minutes	-	कार्यवृत
Mortagage	-	बंधक
Negotiation	-	बातचीत / सौदा
Office Order	-	कार्यालय आदेश
Order	-	आदेश
Outstanding	-	बाकी
Overtime	-	समयोपरी
Particulars	-	ब्यैरा / विवरण

Part Time	-	अंश कालिक
Passport	-	पारपत्र
Pending	-	लंबित
Parusal	-	अवलोकन

पदनाम - Designations

Accountant	-	लेखाकार
Account General	-	माहालेखाकार
Additional Secretary	-	अपर सचिव
Adhoc Judge	-	तदर्थ न्यायाधीश
Administative Officer	-	प्रशासमिक अधिकारी
Adviser	-	सलाहकार
Agent	-	अवलोकन अभिकर्ता / एजेंट
Ambassador	-	शजदूत
Audit Officer	-	लेखापरीक्षाधिकारी
Auditor	-	लेखा परीक्षक
Auditor General	-	महालेखा परीक्षक
Ballott Officer	-	मतपत्र अधिकारी
Board of Arbitration	-	मध्यस्क्षबोर्ड
Cabinet Secretary	-	लेखा परीक्षक
Camp Officer	-	शिविर अधिकारी
Cashier	-	रोकडिया
Chairmen	-	अध्यक्ष
Chancellor	-	कुलपति
Charted Accountant	-	सनदी लेखापाल
Chief Justice	-	मुख्य न्यायमूर्ति
Commissioner	-	आयुक्त
Convener	-	संयोजक

Customs Officer	-	सीमाशुल्क अधिकारी
Deputy Director	-	उपनिदेशक
Director	-	निदेशक
District Manager	-	जिला प्रबंधक
Drawing Officer	-	आहरण अधिकारी
Education Officer	-	शिक्षा अधिकारी
Election Commissioner	-	निर्वाचन आयुक्त
Engineer - in - Chief	-	प्रमुख अभियंता / इंजीनियर
Enquiry Officer	-	जांच अधिकारी
Executive Officer	-	जांच अधिकारी
Financial Adviser	-	वित सलाहकार
Forest Officer	-	वन अधिकारी
Gazetted Officer	-	राजपत्रित अधिकारी
General Manager	-	महा प्रबंधक
General Secretary	-	महा सचिव
Governor	-	राज्यपाल
Health Officer	-	स्वास्थ्य अधिकारी
High Commissioner	-	उच्यायुक्त
Home Secretary	-	गृह सचिव
Incharge	-	प्रभारी
Income - Tax Officer	-	आयकर अधिकारी
Joint Secretary	-	संयुक्त सचिव
Junior Accounts Officer	-	कनिष्ठ लेखा अधिकारी
Labour Welfare Officer	-	श्रमकल्याण अधिकारी
Marine Engineer	-	नौ - इंजीनियर
Marketing Officer	-	पणन अधिकारी
Office Supervisor	-	कार्यालय पर्थवेक्षक

Social Welfare Officer	-	समाज कल्याण अधिकारी
Translator	-	अनुवादक
Treasurer	-	कोषाध्यक्ष
Vigilance Officer	-	सर्तकता अधिकारी

लिंग - Gender

परिभाषाः

शब्द के जिस रुप से व्यक्ति या वस्तु की जाति का बोध हो, उसे 'लिंग' कहते हैं ।

जैसेः लड़का लड़की

घोड़ा, घोड़ी, शेर, शेरनी.

लिंग के प्रकार

हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं -

1) पुल्लिंग
2) स्त्रीलिंग

1. **पुल्लिगः**

परिभाषाः

जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो, उसे 'पुल्लिंग' कहलाते हैं ।

जैसेः बैल, कुत्ता, घर, पति, युवक, भाई आदि ।

2. **स्त्रीलिंगः**

परिभाषाः

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो, उसे 'स्त्री लिंग' कहलाते हैं ।

जैसेः

गाय कुतिया, कुटिया, पत्नी, युवती, बहन आदि ।

लिंग पहचान के नियम :

अ) जीव अथवा प्राणि का बोध कराने वाले शब्द अर्थात प्राणी वाचक संज्ञा शब्दों का लिंग निर्घारण करना कठिन कार्य नहीं है । क्योंकि प्रकृति ने ही इनका लिंग निर्धारण निश्चित रुपसे कर दिया है । इनका लिंग निर्धारण स्पष्ट रुप से समझ में आ जाता है । अतः इनका लिंग निर्धारण इनके अर्थ के आधार पर हो जाता है ।

पहला नियमः

वे प्राणिवाचक संज्ञा शब्द जो पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे सदा पुल्लिंग होते हैं ।

जैसेः दादा, पिता, पुत्र, पौत्र, चाचा, भाई, ताऊ, नाना, मामा, मौसा, साला, देवर, जेठ, संसुर, नर, लडका, बालक, पुरुष, ऊँट, बेटा, माली, सिह, हंस, राजा, बकरा, हाथी, बन्दर, बूढा, मोर, सेठ, नौकर, सेंवक, नायक, गायक, वर आदि ।

दूसरा नियमः

वे प्राणिवाचक संज्ञा शब्द जो स्त्री जाति का बोध कराते हैं, सदा स्त्री लिंग होते हैं ।

जैसेः दादी, माता, पुत्री, पौत्री, चाची, बहन, ताई, नानी, मामी, मौसी, साली, देवरानी, जेठानी सास, नारी, लड़की, बालिका, स्त्री, ऊटनी बेटी, मालिन, सिंहनी, रानी, बकरी, हथिनी, बन्दरी, बूढी, मोरनी, सेठानी, नौकरानी, हंसिनी, सेविका, नायिका, गायिका, वधू आदि ।

तीसरा नियमः

द्वन्द्व समास वाले प्राणि वाचक शब्द सदा पुल्लिंग होते हैं यदि द्वन्द्व समास में दोनों शब्द पुरुष जाति बोधक हो अथवा एक शब्द पुरुष जाति बोधक और एक शब्द स्त्री जाति बोधक हो ।

जैसेः दादा-दादी, नाना - नानी, मामा - मामी, राजा - रानी, मौसा - मौसी, बाप - बैटा, माँ - बाप, भाई - बहन, माँ - बेटा, दुल्हा - दुल्हन, स्त्री - पुरुष आदि ।

चौथा नियमः

द्वन्द्व समासवाले प्राणिवाचक शब्द सदा स्त्री लिंग होते हैं । यदि द्वन्द्व समास के दोनों शब्द स्त्री जाति बोधक हो ।

जैसेः

बहन - बहन, मा - बेटी, चाची - मामी, सीता - गीता, बुआ - भतीजी आदि ।

पाँचवा नियमः

हम कुछ जीवों या प्राणियों का लिंग निर्धारण दूर से देखकर नहीं कर सकते, ऐसे प्राणिवाचक संज्ञा शब्दो को या तो सदा ही पुल्लिंग माना लिया गया है या सदा ही स्त्री लिंगो इन्हें नित्य पुल्लिंग या नित्य स्त्री लिंग शब्द कहते हैं ।

जैसेः

1) **नित्य पुल्लिंग**

तोता, कौआ, उल्लू, मच्छर, चीता, भेड़िया, खटमल, बाज आदि ।

2) **नित्य स्त्री लिंग**

चील, मक्खी, मछली, मकड़ी, कोयल, गिलहरी, तितली आदि ।

आ) निर्जीव वस्तुओं अथवा अप्राणि का बोध कराने वाले शब्द अर्थात् अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों का लिंग निर्धारण करना बहूत कठिन होता है । अप्राणिवाचक संज्ञा शब्दों में भौतिक वस्तुओं, भावों, विचारों आदि का बोध कराने वाले शब्द आते हैं ।

इन शब्दों का लिंग निर्धारण हिन्दी भाषा के बोलनेवाले लोगों ने परंपरा के आधार पर स्त्री लिंग या पुल्लिंग मान लिया है । केवल प्रयोग से ही इसका लिंग जाना जाता है ।

जैसेः

पुल्लिंग शब्दः

पर्वत, मास, हिमालय, सूर्य, चन्द्र, मंगल, पीपल, नीम, चावल, मकान, घर, खिलौना, पानी सोना, कपड़ा आदि।

स्त्री लिंग शब्दः

सडक, घड़ी छड़ी, कुर्सी, तस्वीर, बात, कहानी, कविता, हिन्दी, रोटी, टोपी, नदी, रात, छत, चिट्ठी आदि ।

1) **पुल्लिंग शब्दों के पहचानने के नियमः**

1. समय के भागों, महिनों ओर दिनों के नाम पुल्लिंग होते हैं ।

जैसेः

1. वर्ष, मास, चैत्र, वैशाख, जनवरी, फरवरी, सोमवार, बुधवार, दिन, घण्टा, मिनिट आदि ।
2. पृथ्वी को छोड़कर सभी तारों और ग्रहों के नाम पुल्लिंग है ।

   जैसेः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति आदि ।
3. पेड़ों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसे - पीपल, नीम, आम, शीशम आदि ।

   अपवादः तुलसी, इमली आदि स्त्रीलिंग शब्द है ।
4. अनाजों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसेः चावल, बाजरा, गेहूँ, चना, मक्का आदि ।
5. शरीर के भोगों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसेः सिर, नाक, कान, हाय, धड़, पैर, नख, दाँत, मुख, गला आदि ।

   अपवादः आँख, जीभ, पीठ, ऊँगली, हड्डी, मुँह, कोहनी आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं ।
6. द्रव्य पदार्थों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसेः घी, दूध, पानी, तेल, सोना, ताँवा, लोहा, शर्बत आदि ।

   अपवादः चाँदी, छाछ, मिट्टी, मणि आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं ।
7. रत्नों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसेः हीरा, पन्ना, मूँगा, मोती, माणिक, नीलम आदि ।
8. पर्वत, जल, स्थल, भूमण्डल के भागों के नाम पुल्लिंग होते हैं । जैसेः देश, नगर, शहर, दीप, आकाश, घर, सरोवर, भारत, हैदराबाद, अरब सागार, हिन्द महासागर, हिमालय, विन्ध्याचल आदि ।
9. हिन्दी के शब्द जिनके अन्त में अ, आ, आव, पा, पन, प्रत्यय आते हैं, वे पुल्लिंग होते हैं ।

   जैसेः धन, बल, लोटा, मोटा, काला, बचाव, चढ़ाव, बुढ़ापा, मोटापा, बचपन, लड़कपन आदि ।
10. अकारान्त तत्सम शब्द पुल्लिंग होते हैं । जैसे - कमल, सुख, प्रचार, लेख आदि ।
11. संस्कृत शब्द जिनके अन्त में 'त', 'ईत', 'आर', 'आप', 'तथा', 'न' आते हैं. वै पुल्लिंग होते हैं । जैसेः गीत, गणित, विकार, आकार, परिताप नयन आदि ।

2. **स्त्रीईलिंग शब्दों को पहचानने के नियमः**

1. भाषा, बोली ऐर लिपियों के नाम स्त्री लिंग होते हैं ।

   जैसेः हिन्दी, तेलुगु, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, मारवाड़ी, हरियाणवी, देवनागरी, गुरुमुखी आदि ।

2. नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसेः गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, गोमती आदि ।

3. निथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

   ऐसेः पहली, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, एकदशी आदि ।

4. नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं । जैसेः अश्विनी, भरणी, रोहिणी आदि ।

5. भोजन पदार्थों और मसालों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

   जैसेः रोटी, खीर, पूरी, इलायची, लौंग, सौंठ, अदरक आदि ।

   अपवादः भात, लड्डु, हलवा आदि शब्द पुल्लिंग हैं ।

6. हिन्दी के 'ईकारान्त' और 'आई' अन्तवाले श्बद स्त्रीलिंग होते हैं ।

   जैसेः मिट्टी, टोपी, नदी, पढ़ाई, भलाई ।

   अपवादः पानी, दही, मोती, ईसाई आदि शब्द पुल्लिंग होते है ।

7. आकारन्त संस्कृत शब्द स्त्रीलिंग होते है ।

   जैसेः दया, ममता, करुणा, दशा आदि ।

8. उर्दू की आकारान्त संज्ञाएं स्त्रीलिंग होती हैं ।

   जैसेः हवा, दवा, सज़ा, फिजा आदि ।

9. भाववाचक शब्द जिनके अन्त में 'आई', 'ता', 'श', 'न्त', 'वट', 'हट' आते हैं, वे स्त्री लिंग होते हैं ।

   जैसेः बुराई मित्रता, मालिश, गढन्त, सजावट, घबराहट, झंझट आहट आदि ।

10. 'त' कारान्त संज्ञाए स्त्रीलिंग होती हैं ।

    जैसेः रात, बात, छत, लात, ताकत आदि ।

    अपवादः भात, खेत, सूत आदि शब्द पुल्लिंग हैं ।

11. जिन संज्ञा शब्दों के अन्त में 'ख' होता है, वे स्त्रीलिंग होते हैं ।

    जैसेः ईख, भूख, कोख, लाख, चोख, देख, रोख आदि ।

लिंग परिवर्तन के नियमः

हिन्दी में अधिकतर शब्द पुल्लिंग माने जाते हैं । कुछ परिवर्तन करके इन्हें स्त्री लिंग बना दिया जाता है।

1. संबंधवाचक और प्राणिवाचक 'अ' कारान्त या 'आ' कारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के अंतिम 'अ' या 'आ' के स्थान पर 'ई' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं ।

   जैसेः

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
हिरण	-	हिरणी
कबूतर	-	कबूतरी
दास	-	दासी
पुत्र	-	पुत्री
लड़का	-	लड़की
नाना	-	नानी
दादा	-	दादी
बेटा	-	बेटी
मामा	-	मामी
मौसा	-	मौसी
चाचा	-	चाची
बकरा	-	बकरी
चोर	-	चोरनी

2. व्यवसाय वाचक पुल्लिंग संज्ञाओं से 'इन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं ।

   जैसेः

पुंल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
कुम्हार	-	कुम्हारिन
सुनार	-	सुनारिन
घोबी	-	घोबिन
माली	-	मालिन
तेली	-	तेलिन
जोगी	-	जोगिन

3. कुछ प्राणि वाचक पुल्लिंग शब्दों के अन्त में 'नी' लगाने से स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं ।

   जैसे

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
शेर	-	शेरनी
ऊँट	-	ऊँटनी
मोर	-	मोरनी
रीछ	-	रीछनी

4. कुछ आदर सूचक पुल्लिंग शब्दों के साथ 'आइन' लगाने से स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं ।

जैसे

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
ठाकुर	-	ठकुराइन
चौधरी	-	चौधराइन

5. कुछ संबंध सूचक पुल्लिंग शब्दों के साथ 'आनी' प्रत्यय लगाने से स्त्रीलिंग । शब्द बन जाते हैं ।

जैसेः

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
देवर	-	देवरानी
जेठ	-	जेठानी
सेठ	-	सेठानी
नौकर	-	नौकरानी

6. कुछ संस्कृत पुल्लिंग शब्दों के साथ 'आ' जोड़ने से स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं ।

जैसेः

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
प्रिय	-	प्रिया
प्रियतम	-	प्रियतमा
सुत	-	सुता

7. 'अक' अन्तवाले पुल्लिंग शब्दों के स्थान पर 'इका' लगाने से स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं ।

जैसेः

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
सेवक	-	सेविका
अध्यापक	-	अध्यापिका
लेखक	-	लेखिका

8. जिन पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के अन्त में 'आन' के स्थान' पर 'अती' लगाने से स्त्रीलिंग शब्द बन जाते हैं ।

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
भगवान	-	भगवती
गुणवान	-	गुणवती
श्रीमान	-	श्रीमती
बलवन्त	-	बलवन्ती

अपवादः 'विद्वान' शब्द का स्त्रीलिंग 'विदुषी' होता है ।

9. कुछ शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बनाने का कोई विशेष नियम नहीं होता । इनके स्त्रीलिंग रुप बिलकुल भिन्न होते हैं ।

जैसेः

पुल्लिंग	-	**स्त्रीलिंग**
पिता	-	माता
बैल	-	गाय
पुरुष	-	स्त्री
भाई	-	बहन
राजा	-	रानी

10. जो प्राणिवाचक शब्द सदा ही स्त्रीलिंग हैं अथवा सदा ही पुल्लिंग हैं, उनके पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग शब्द बनाने के लिए उनके साथ 'नर' था 'मादा' 'शब्द लगा देथा' हैं ।

जैसेः

नित्य पुल्लिंग शब्द	-	**स्त्रीलिंग**
तोता	-	मादा तोता
चीता	-	मादा चीता
कौआ	-	मादा कौआ
उल्लू	-	मादा उल्लू
मच्छर	-	मादा मच्छर
बाज	-	मादा बाज
खटमल	-	मादा खटमल
कछुआ	-	मादा कछुआ

खरगोश	-	मादा खरगोश
भेड़िया	-	मादा भेड़िया
नित्य स्त्रीलिंग शब्द	-	**पुल्लिंग**
मक्खी	-	नर मक्खी
कोयल	-	नर कोयल
चीता	-	नर चीता
मछली	-	नर मछली
मकड़ी	-	नर मकड़ी
तितली	-	नर तितली
गिलहरी	-	नर गिलहरी

पत्र लेखन - LETTER WRITTING

पत्र - लेखन एक महत्वपूर्ण कला है । मनुष्य के जीवन में पत्र - लेखन की बड़ी उपयोगिता है । मनुष्य अपने मनोभावों एवं विचारों को अन्य लोगों को लिखित रुप में भेजते हैं । उसे पत्र कहते हैं। आजकल पत्र ई - मेल, वाट्साप आदि के माध्यम से भेजे जा रहै हैं । इस कप्यूटर युग में भी कुछ गोपनीय संदेश पत्र Sealed Cover (तार) के माध्यम से ही भे जा जारहा है । इसतरह पत्रों (तार) के महत्व को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता ।

पत्र - लेखन एक कला होने के नाते उसमें सरलता, स्पष्टता, यथार्थता और प्रभावशीलता के गुण होने चाहिए ।

व्यावहारिक दृष्टि से पत्रों के दो भागों में बाँटा जा सकता है -

1. औपचारिक पत्र
2. अनौपचारिक पत्र

1. औपचारिक पत्रः

इन पत्रों को व्यावहारिक एवं कामकाजी पत्र भी कहते हैं । कार्यालयीन क्रियाकलापों केलिए लिखे जाने वाले विभिन्न प्रकार के सरकारी, अर्धसरकारी, सस्थागत, व्यापारिक, व्यवसायिक तथा आवेदन पत्र इसके अन्तर्गत आते हैं । इनमें तथ्यो एवं सूचनाओं की प्रधानता होती है ।

औपचारिक पत्र के मुख्य अंग :

1. स्थान - बह पत्र के ऊपरी भाग दायी ओर लिखा जाता है ।
2. दिनांक - यह स्थान के नीचे लिखा जाता है ।

3. प्रेषक (पत्र लिखने वाले का पता) - यह स्थान तथा दिनांक लिखने के बाद पत्र के बायी ओर लिखा जाता है ।

4. शीर्षक (पत्र पाने वाले का पता) - यह प्रेषक के पते के नीचे से वामें शीर्षक के अन्तर्गत लिखा जाता है ।

5. संबोधन - शिष्टता की दृष्टि से प्रप्त कर्ता के साथ जो संबंध है, उसके अनुसार संबोधन होना चाहिए ।

जैसेः

महाशय, प्रियमहोदय - महोदया, आदरणीय, मान्यवर, श्रीमान, श्रीमती, माननीय आदि ।

6. विषय संकेत - संबोधन के पश्चात् विषय को संक्षिप्त रुप में लिखकर, संदर्भ भी देना चाहिए विषय तथा संदर्भ को पढ़ते ही पत्र का पूरा विषय ज्ञात हो जाएगा ।

7. कलेवर (पत्र का मुख्य भाग) - यही पत्र का मुख्य अंग है । पत्र में संबोधित (पूरा विषय) मुख्य बातें इसमें लिखी जाती है । प्रस्तुतीकरण में सरलता, संक्षिप्तता होनी चाहिए ।

8. समाप्ति (स्व निर्देश) - शिष्ट व्यवहार केलिए भवदीय, भवदीथा, आपका, आपका आज्ञाकारी आदि का प्रयोग करना अनिवार्य है। ये शब्द पत्र के अन्त में दायीं ओर लिखे जाते हैं ।

9. हस्ताक्षर - समाप्ति था शिष्टाचार शब्द के नीचे हस्ताक्षर करना अत्यन्त आवश्यक है ।

10. संलग्न - मूल पत्र के साथ कुछ प्रमाण - पत्र बिल, चेक आदि भेजे जाये तो उनका विवरण तथा पत्र की संख्या पत्र के नीचे बायीं ओर संलग्न शीर्षक के नीचे लिखा जाता है।

2. **अनौपचारिक पत्रः**

इन पत्रों को व्यक्तिगत पत्र या सामाजिक पत्र कहते हैं । इस श्रेणी के पत्र मित्रों, रिश्तेदारों तथा परिचितों को लिखे जाते हैं । शोक पत्र भी इन पत्रों की श्रेणी में ही आते हैं । इन पत्रों में आत्मीयता का भाव रहता है ।

पत्र के मुख्य अंगः

1. स्थान - यह पत्र के ऊपरी भाग पर दायी ओर लिखा जाता है ।
2. दिनांक - स्थान के नीचे दिनांक लिखा जाता है ।
3. संबोधन - बडों के प्रति पूजनीय, परमपूज्य, आंदरणीय, मान्यवर आदि ।
4. अभिवादन - इसके अन्तर्गत बड़ों के प्रति प्रणाम, सादर, प्रणाम, बराबर वालों केलिए नमस्कार, नमस्ते, छोटों के प्रति शुभाशीश आदि ।
5. कलेवर - इसके अन्तर्गत पत्र का मूल विषय प्रस्तुत किया जाता है । मूल विषय संक्षिप्त होना चाहिए ।
6. समाप्ति (स्वनिर्देश) - कलेवर के बाद आपका, आपका प्रिय, विनीत, तुम्हारा आदि लिखकर हस्ताक्षर किया जाता है ।
7. पता - पत्र के अन्त में बोथीं ओर प्रेषक का पता लिखा जाता है ।

पत्र - लेखन - LETTER WRITTING

1. **हिन्दी सीखने की आवश्यकता को बताते हुए छोटी बहन के नाम पर पत्र ।**

गुंटूरु

दिनांक - 13/08/2021

प्रिया रोहिणी,

तुम्हारा पत्र मिला । बड़ी खुशी हुई है कि घर पर सब लोग कुशल है और तुमकों परीक्षा में अच्छे अंक मिले । मैं यहाँ कुशल हूँ । मैं तुमको एक उपयोगी सलाह देना चाहता हूँ । तुम हिन्दी सीखा । हिन्दी परीक्षाएँ लिखो । तब तुमको हिन्दीका अच्छा ज्ञान मिलेगी । हिन्दी हमारी राजभाषा है । यह हमारी राष्ट्रभाषा भी है । उत्तर भारत में हिन्दी का ही बोलबाला है . हिन्दी भारत की अनुसंधान भाषा है । यह एक सरल एवं आसान भाषा है । इसलिए तुम हिन्दी सीखो । भविष्य में वह तुम्हारेलिए बहुत उपयोगी सिद्द होगी। आशा है कि तुम मेरी सलाह का पालन करोगे । जल्दी जवाब लिखो ।

पताः

के. रोहिणी,

10 वी कक्षा

सरकारी हाईस्कूल,

अद्दंकि ।

तुम्हारा भाई

के. राजीव साई

जूनियह एम पीसी

सरकारी जूनियर कालेज

गुंण्टूर ।

2. **विहार यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र के नाम पत्रः**

गुंण्टूर

दिनांकः 14-08-2021

प्रिय मित्र,

सादर प्रणाम । तुम्हारा पत्र मिला । मैं यहाँ पर कुशाल हूँ । तुम लोगों का कुशल समाचार सुनना चाहता हूँ । मैं पिछले हफते में अपने वर्ग के छात्रों से मिलकर नागार्जुन सागर देखने गया था . हम कुल 50 छात्र बस में गये । हमारे साथ दो अध्यापक भी आथे । हम सबेरे 5 बजे सागर पहुँचे । खा पीकर बाँध देखने गये हैं । उस ''मानव निर्मित महा सागर' को देखकर हम बहुत चकित रह गये । एक और विशाल सागर दूसरी ओर पानी की बूँदे देखने वालों को मुग्ध करते थे । वह सुन्दर दृश्य कोई नहीं भूल सकता । हमने बाँध के पास सुन्दर उद्यान, बिजली घर और अन्य रमणीय स्यान देखे । बाँध से निकलनेवाले दो नाले भी देखे । वे जवाहर नाला और लाल बहदूर नाल नामों से प्रसिद्द हैं । हम नाव पर 'नागार्जुन पहाड़' भी गये। वहँ पहाड पर अजायबघर बना है । उसमें पहली और दूसरी सदियों के भव्य खंडहर रखे हुए हैं । बौद्द धर्म के प्रसिद्ध आचार्य नागार्जुन के समय के अनेक उत्तम कला खण्ड वहा मौजूद है । सबको देखकर हम बहुत खुश हुए । इस यात्र से हमें मनोरंजन के साथ ज्ञान प्राप्ति भी हुई । जल्दी पत्र लिखो ।

पताः

के. रामकृष्ण

123-121, 3A

एस. वी. यन. कालनी

गुण्टूर

तुम्हारे प्रियमित्र

सुमन्त

कारक - CASE

परिभाषाः

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रुप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है , उसे 'कारक' कहते हैं ।

जैसेः

कृष्ण ने बैल को डंडे से मारा ।

इस वाक्य में प्रयुक्त 'ने', 'को', 'से' कारक चिन्ह या 'विभक्ति' (Case Endings) कहलाते हैं ।

अग्रेजी में कारकों को 'Pre Positions' कहते हैं ।

कारक के प्रकारः

हिन्दी में प्रयुक्त कारक आठ प्रकार के होते हैं । वे हैं -

1. कर्ता कारक (Nominative)
2. कर्म कारक (Objective)
3. करण कारक (Instrumental)
4. सम्प्रदान कारक (Pative)
5. अपादान कारक (Ablative)
6. संबंध कारक (Genetive)
7. अधिकरण कारक (Locative)
8. संबोधन कारक (Vocative)

वे वाक्य में कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, संबंध, अधिकारण या संबोधन से संबंधित किसी शब्द के आरंभ में प्रयुक्त होते हैं । किन्तु हिन्दी में उनका प्रयोग शब्द के बाद होता है । अतः उनको परसर्ग (Post Position) कहते हैं ।

किसी भी भाषा के अध्यथान तथा अध्यापन में कारकों के प्रयोग का सही एवं सटीक ज्ञान प्राप्त होता है । हिन्दी में प्रयुक्त आठ कारकों एवं विभक्तियों को निम्नलिखित उदाहरणा के द्वारा प्रकट कर सकताहै ।

	कारक	विभक्ति	उदाहरण
1.	कर्ता (Nominative)	ने	राजेश ने फल खाया ।
2.	कर्म (Objective)	को	राम ने लक्ष्मण को फल खिलाया ।
3.	करण (Instrumental)	से (By)	राम ने कलम से लिखता है ।
4.	सम्प्रदान (Pative)	के लिए / के वास्ते (For)	कृष्ण ने राजीव केलिए पाठ लिखकर दिया ।
5.	अपादान (Ablative)	से (From Since Than)	पेड से फल गिरा । सुमन्त, गोपाल से छोटा है।
6.	संबंध (Genetive)	का, की, के	राम का बेटी, राम की बेटे, राम के बेटे
		रा, री, रे	तुम्हारा बेटा, तुम्हारी बेटी, तुम्हारे बेटे
7.	अधिकरण (Locative)	में, पर	पेड़ पर बन्दर है ।
			कक्षा में मेज हैं ।
8.	संबोधन (Vocative)	हे, अरे, ओ, ओह	हे भगवान
			अरे आप कहाँ हैं ।
			ओह क्या दृश्य है ।

1. **कर्ता कारक (Nominative):**

परिभाषाः

''संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त 'ने' विभक्ति से क्रिया के कर्ता (करनेवाले) का पता चलता है । अतः इसे 'कर्ता कारक' कहते हैं ।'' हिन्दी में 'ने' प्रत्यय का प्रयोग सामान्य, आसन्न, पूर्ण भूतकालों में सकर्मक क्रियाओं के साथ ही होता है ।

इसका कारक चिन्ह 'ने' है । इसे प्रथमा विभक्ति भी कहते हैं ।

जैसेः

कृष्ण ने आम खाया ।

सीता ने पुस्तक पढ़ी ।

2. **कर्म कारकः (Accusalive or Objective Case):**

परिभाषाः

वाक्य के जिस शब्द पर क्रिया का फल पड़ता है । उसे कर्म कहते है । उसके साथ प्रयुक्त होनेवाले कारक को कर्म कारक कहते है । एंक प्रकार से कारक किसी संज्ञा को कर्म बना डालता है । इस का चिन्ह 'को' है ।

जैसे:

दुर्गा ने महिषासुर को मारा ।

राम ने पत्र लिखा ।

इसे द्वितीया विभक्ति भी कहते हैं ।

3. **करण कारक: (Instrumental Case):**

परिभाषा:

''कर्ता जिस साधन की सहायता से काम करता है । उसे करण कारक कहते हैं । इसका चिन्ह 'से' है। इसे तृतीया विभक्ति भी कहते हैं ।''

जैसे:

राम ने कलम से लिखा ।

मेरा मित्र रोजना कार से कालेज जाता है ।

यह अंग्रेजी में By, With, Through आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है । कभीं - कभी के द्वारा के मारे के जरिए आदि 'से' के स्थानपर प्रयुक्त होता है ।

जैसे:

मोहन ने अपने बेटे के द्वारा यह काम करवाया ।

4. **संप्रदान कारक: (Dative Carse):**

परिभाषा:

''जिसके लिए कार्य किया जाय उसका बोध करानेवाले शब्द को संप्रदान कारक कहते हैं । इसके विभक्ति न्हिको , के लिए है । इसे चतुर्थी विभक्ति भी कहते हैं ।''

जैसे:

कृष्ण को मैने घर बुलाया ।

देश केलिए बलिदान दो ।

अग्रेजी में 'को' के स्थान पर 'To' और 'केलिए' के जगह पर 'For' का प्रयोग होता है ।

नोट:

कई बार 'को' के जगह पर । के हेतु', 'के निमित', 'के अर्थ', 'के वास्ते' का प्रयोग भी वाक्यों में किया जाता हैं ।

5. **अपादान कारक: (Ablative Case):**

परिभाषा:

''संज्ञा या सर्व नाम के जिस रुप से अलग होने का बोध कराता है, उसे अपादान कारक कहते हैं ।'' इसका चिन्ह 'से' है । जबकि अलग होने को या पृथकता को अपदान कारक कहते हैं । इसे पंचमी विभक्ति भी कहते हैं ।

जैसेः

रमण कलम से लिखता है ।

आकाश से पानी बरसता है ।

6. **संबंध कारकः (Genetive Case):**

परिभाषाः

''संज्ञा के जिस रुप से एक वस्तु या व्यक्ति का दूसरी वस्तु या व्यक्ति से संबंध प्रकट होता है, उसे संबंध कारक कहतै हैं ।'' इसके चिन्ह का, के, की । इसे षष्ठी विभक्ति भी कहते हैं ।

जैसेः

वह राम का लड़का है ।

यह राम की लड़की है ।

ये राम के लड़के हैं ।

संज्ञा के लिंग, वचन के अनुसार इसके रुप यथा का, के, की, का, प्योग होता है ।

7. **अधिकरण कारकः**

परिभाषाः

''जिससे संज्ञा के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं'' । इसके चिन्ह 'में', 'पर' । इसे सप्तमी विभक्ति भी कहते हैं ।

जैसेः

जंगल में जानवर रहते हैं ।

मेज पर पुस्तक है ।

कभी - कभी 'में', 'से' एक साथ प्रयुक्त होते हैं । जब उनका अर्थ from, among होता है ।

जैसेः

सब फलों में से आम उत्तम हैं ।

8. **संबोधन कारकः (Vocative Case):**

परिभाषाः

–''जिस संज्ञा के द्वारा किसी को पुकारा जाय, उसे संबोधन कारक कहते हैं''। इसके चिन्ह हैं अरे, अजी, हो आदि । उसे अष्टमी विभक्ति भी कहते हैं ।

जैसेः

हे । लड़के इधर आओ ।

हे । लड़के पाठ पढो ।

संबोधन कारक चिन्ह (विभक्ति) शब्द संज्ञा के आरंभ में प्रयुक्त होता है । जबकि अन्य विभक्ति याँ शब्द (संज्ञा था सर्व नाम) के बाद प्रयुक्त होती है ।

कारकों का स्वंवत्र प्रयोग नहीं होता ।

क्रिया (Verb)

परिभाषाः

''जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाता है, उसे क्रिया कहते हैं''।

जैसेः

खाना, पीना, रहना, सहना, जाना, उठना, बैठना आदि ।

क्रिया के भेदः

कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं ।

1. सकर्मक क्रिया (Transitive Root)
2. अकर्मक क्रिया (Intransitive Root)

1. सकर्मक क्रियाः (Transitive Root):

परिभाषाः

''जिन क्रियाओं के व्यापार या कार्थ का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं ।''

जैसेः

पढना, लिखना, खेलना, करना, मारना, चलना, हंसाना, कहना, लेना आदि ।

2. अकर्मक क्रियाः (Intransitive Root):

परिभाषाः

''जिन क्रियाओं के व्यापार या कार्य का फल कर्ता में ही रहते हैं तो वे अकर्मक क्रियाएँ कहते हैं ।''

जैसेः

होना, सोना, ठहरना, जागना, पड़ना, डरना, जीना, मरना, चूमकना, रोना, हंसना आदि ।

कुछ क्रियाएँ प्रयोग के अनुसार सकर्मक भी हो ते हैं और अकर्मक भी होते हैं ।

जैसेः

बदलना, भरना, ललचाना, खुलजाना, आदि ।

****